Downloaded from https:// www.studiestoday.com

ಕರ್ನಾಟಕ ಸರಕಾರ

ಸಮಾಜ ವಿಜ್ಞಾನ

ಹಿಂದಿ ಮಾಧ್ಯಮ

SOCIAL SCIENCE

Hindi Medium

(परिष्कृत)

सातवी कक्षा

भाग - II

कर्नाटक पाठ्यपुस्तक संघ (रजि.)
100 फूट रिंग रोड, बनशंकरी 3 रा टप्पा
बेंगलूरु - 560 085.

©KTBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अनुक्रमणिका

पाठ क्रमांक	इतिहास	पृष्ठ संख्या
1	भारत को युरोपियनों का आगमन	1
2	भारत में अंग्रेज	7
3	अंग्रेज शासन का परिणाम	14
4	सामाजिक और धार्मिक सुधार	23
5	स्वातंत्र्य संग्राम (1857)	35
6	कर्नाटक - समाजमुखी आंदोलन	68
7	कर्नाटक - आर्थिक और सामाजिक परिवर्तन	79
8	स्वातंत्र्य के संघर्ष में कर्नाटक की महिलाएँ	84
9	कर्नाटक एकीकरण और सीमा विवाद	92
	नागरिकशास्त्र	
10	हमारी सुरक्षा सेना	99
11	संविधान परिष्करण	107
	भूगोल विज्ञान	
12	आस्ट्रेलिया - अत्यंत समतल भू-भाग	110
13	अंटार्कटिक - श्वेत भू-भाग	127

©KTBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पाठ 1 भारत को युरोपियनों का आगमन

पाठ परिचय

सा.श. 1498 मई 17 को वास्कोडगामा ने केरल का कल्लीकोटे पहुँचकर, भारत को नया जलमार्ग ढूँढ लिया । यह युरोपियनों को भारत आने का कारण बना । इस समुद्रयान का खोज के कारण पुर्तगाली, डच्च, अंग्रेज तथा फ्रान्सीसी व्यापार करने यहाँ आए ।

सामर्थ्य

1. भारत में युरोपियनों का प्रारंभिक कार्य-कलापों के बारे में जानेंगे ।
2. भारत में युरोपियनों के बीच का संघर्ष को समझेंगे ।
3. भारत में आए युरोप के व्यापारी कंपनियों के बारे में जानेंगे ।
4. अंत में अंग्रेज यहाँ स्थायी होने का कारण जान लेंगे ।
5. भारत के मानचित्र में युरोपियन व्यापारियों के ठिकाने पहचानेंगे ।

पुर्तगाली (सा.श. 1498-1961)

सा.श. 1498 मई 17 को वास्कोडगामा ने केरल का कल्लीकोटे पहुँचकर, भारत के लिए नया जलमार्ग ढूँढा । इस जलमार्ग से भारत आए युरोपियनों में पुर्तगाली पहले हैं । पूर्व देशों के साथ व्यापार का एकाधिपत्य कायम किया । उपनिवेशों का साम्राज्य बनाना, ईसाई धर्म का प्रचार करना इनके मूल उद्देश थे ।

पुर्तगालियों का अभिवृद्धि के कारण

- कल्लीकोटे का राजा जामोरिन् ने पुर्तगाली नाविक वास्कोडगामा को व्यापार करने का अनुमति दिया ।

©KTBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

- सा.श. 1509 में आल्बुकर्क भारत का गवर्नर (वैसराय) नियुक्त हुआ । सा.श. 1510 में विजयपुर सुल्तान से गोवा को अपने वश में ले लिया । पुर्तगाली भारत छोडकर जाने तक गोवा ही पुर्तगालियों की राजधानी थी ।
- अल्बुकर्क के बाद आए गवर्नर दियु, दमन्, साल्सेट्, सानथोम् तथा बंगाल का हूग्ली आदी में अपना उपनिवेशों की स्थापना की ।

पुर्तगालियों के अवनति के कारण

- बलिष्ठ नौकाबल के साथ डच्च तथा अंग्रेज पुर्तगालियों के प्रबल प्रतिस्पर्धी थे ।
- पुर्तगाली सरकारी नौकर भ्रष्ट होकर, स्वामिनिष्ठा खो दिए ।
- इस तरह धीरे-धीरे सरकार को हीनस्थिति प्राप्त हुई ।
- मतांधता पुर्तगालियों के पतन का मुख्य कारण था । वे यहाँ के विविध धर्मीयों को जबर्दस्ती से मतांतर करवाया ।
- विजयनगर साम्राज्य की अवनति से उनका व्यापार कुंठित हो गया ।

पुर्तगाली प्रान्सिस्को-डी-अल्मेडा भारत का प्रथम गवर्नर (वैसराय) था । भारत में सबसे पहले आनेवाले तथा भारत से सबसे अंत में जानेवाले युरोपियन पुर्तगाली ही हैं । अंत तक सिर्फ गोवा, दियु और दमन पुर्तगालियों के वश में रहे । अंग्रेजों का राज 1947 में अंत होने पर भी पुर्तगाली हमारी जमीन से नहीं हटे । गोवा विमोचन के लिए वहाँ के भारतीय अहिंसात्मक आंदोलन प्रारंभ किया । लेकिन पुर्तगाली आंदोलनकारों को अमानवीय रीती से तंग किया । आखिर सा.श. 1961 में भारतीय सेना कुछ ही दिनों में पुर्तगालियों को खदेडने के बाद गोवा का विमोचन हुआ ।

डच्च (सा.श. 1596-1792)

पुर्तगालियों के बाद भारत आए युरोपियनों में नेदरल्यांड देश के डच्च प्रमुख हैं । सा.श. 1602 में 'डच्च ईस्ट इंडिया कंपनी' की स्थापना हुई । यह कंपनी पूर्व देशों से व्यापार करने का एकाधिपत्य प्राप्त किया । इन प्रदेशों में युद्ध करने का, शांति संधान करने का अधिकार पा लिया। 'पुलिकाट्' डच्चों की राजधानी थी ।

©KTBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

डच्चों का व्यापारी केन्द्र : भारत के आग्रा, मचलीपट्टण, सूरत, कारैकल्, नागपट्टणम्, कोच्चि आदी डच्चों के व्यापारी केन्द्र थे ।

डच्चों की अवनति : डच्चों ने अंग्रेजों के साथ संघर्ष करने लगे । लेकिन अंग्रेज उन्हें हरा दिया । भारत में अंग्रेजों के साथ प्रतिस्पर्धा नहीं कर सके । तब डच्चों ने आग्नेय एशिया द्वीप राष्ट्रों को जाने का सोचा ।

आग्नेय एशिया के द्वीप : इंडोनेशिया, मलय, थायल्यांड, फिलिफैन्स कांबोडिया ।

अंग्रेज (सा.श. 1600-1947)

शांतिपूर्ण व्यापार ही अपनी नीति बताकर अंग्रेज उसी का अनुसरण करते आए । लेकिन भारत की बिगडी राजकीय परिस्थिति का लाभ उठाकर, राजकीय सार्वभौमत्व की स्थापना की।

इंग्लेंड के व्यापारी पूर्व देशों के साथ व्यापार संपर्क करने हेतु सा.श. 1600 में 'ईष्ट इंडिया कंपनी' की स्थापना की । एलिजबेत् रानी की अनुमति से भारत के साथ व्यापारी संपर्क बढाया । प्रारंभ में ईस्ट इंडिया कंपनी के जहाज सूरत बंदरगाह में ठहरते थे ।

सर् थामस् रो ने सा. श. 1615 में मोगल साम्राट जहांगीर से अनुमति पाकर अहम दाबाद तथा ब्रोच में व्यापारी केन्द्र स्थापित किया । बाद में मद्रास, कलकत्ता तथा मुंबई में भी अपने व्यापारी केन्द्र खोले । कलकत्ता अंग्रेजों की पहली राजधानी थी ।

कुछ ही समय में कंपनी का लाभ भी गणनीय प्रमाण से बढता गया । मोगल साम्राट फरुक् सियार से बंगाल प्रांत (आज का बंगाल, बिहार तथा ओरिस्सा) और सूरत में शुल्क रहित व्यापार करने का 'दस्तक' पाकर, इनकी सहायता से अंग्रेज देशीय व्यापारियों से प्रबल हो गए।

शुल्क रहित मुक्त व्यापार करने के लिए व्यापारियों को दिया विशेष अनुमति पत्र को 'दस्तक' कहते थे ।

©KTBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अंग्रेज अपना अधिपत्य बढाने के लिए अपने वसती प्रदेशों के चारों ओर किला बनवाए। किले की रक्षा के लिए सैनिक अपने पास बारुद रखने लगे । बहुत जल्द अंग्रेजों का सेनाबल प्रबल हो गया ।

फ्रान्सिसी (सा.श. 1664-1954)

व्यापार करने भारत आए युरोपियनों में फ्रांसिसी ही अंतिम हैं । वे सा.श. 1664 में 'फ्रेन्च ईस्ट इंडिया कंपनी' की स्थापना की । फ्रांसिसी भारत में अपना प्रथम व्यापार कोठी सा.श. 1668 में सूरत में खोला । कुछ ही दिनों में भारत के विविध भागों में अपने व्यापारी केन्द्रों की स्थापना की ।

फ्रांसिसी व्यापारी केन्द्र : फ्रांसिसी अपने व्यापारी केन्द्र पांडिचेरी, मचलीपट्टण, कल्लीकोटे, माहे, कारैकल् और चंद्रनगर में खोले । पांडिचेरी फ्रांसिसियों की राजधानी थी ।

फ्रांसिसी गवर्नर डूप्ले ने चतुरता से हैदराबाद तथा कर्नाटिक् (तमिलनाडु का पूर्वभाग) राज्यों में फ्रांसिसियों का प्रभाव बढाया । व्यापार करने भारत आए अंग्रेज तथा फ्रांसिसी के बीच राजकीय और वाणिज्य अभिवृद्धि के लिए कई युद्ध हुए । उन्हें कर्नाटिक् युद्ध कहा जाता है ।

फ्रांसिसी पतन के कारण :

- भारत में रहे फ्रांसिसी सेना नायकों को फ्रान्स सरकार संपूर्ण समर्थन नहीं दिया ।
- फ्रान्स में राजकीय संघर्ष तथा क्रांती हो रहे थे । यह भारत में उनकी अवनती का कारण बना ।
- अंग्रेजों का नौकाबल फ्रांसिसी नौकाबल से प्रबल था ।

काल गणना (सा.श.)

- अंग्रेज ईस्ट इंडिया कंपनी : 1600
- डच्च ईस्ट इंडिया कंपनी : 1602
- फ्रेन्च ईस्ट इंडिया कंपनी : 1664

©KTBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

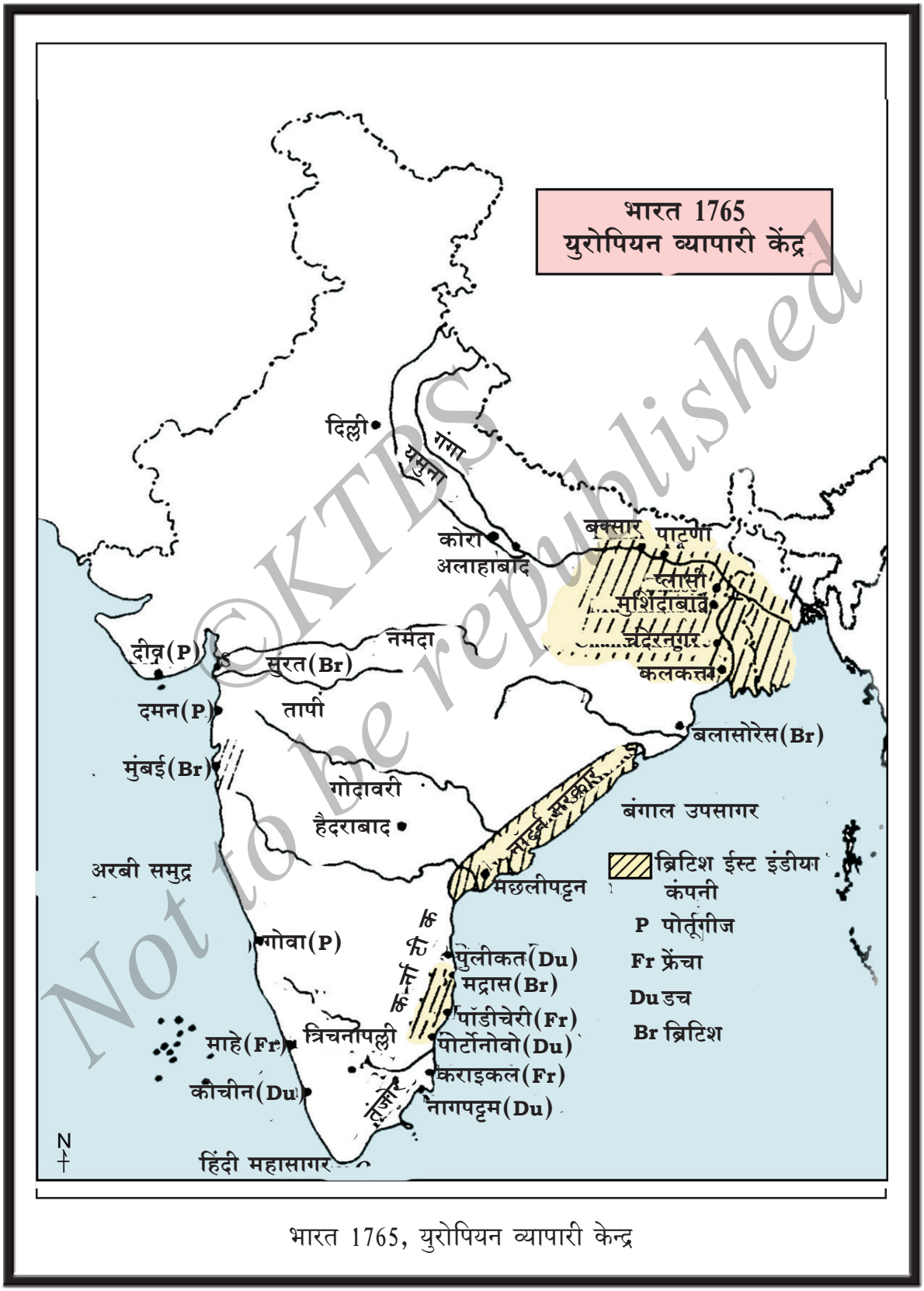

भारत 1765, युरोपियन व्यापारी केन्द्र

©KTDS
Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

I **नीचे के प्रश्नों का उत्तर एक वाक्य में लिखिए ।**

1) व्यापार करने समुद्र मार्ग से आये पहला युरोपियन कौन थे?
2) भारत आने के लिए जलमार्ग का खोज किसने किया ?
3) डच्चों की राजधानी का नाम बताइए ।
4) अंग्रेज ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना कब हुई ?
5) फ्रांसिसी व्यापारी केंद्रों का नाम बताइए ।
6) अंग्रेजों को कौन-सा मोगल राजा ने 'दस्तक' दिया ?

II **समूह में चर्चा करके उत्तर दीजिए ।**

1. भारत में फ्रांसिसी अवनति के कारण बताइए ।
2. भारत में पुर्तगालियों की अवनति के कारण क्या थे ?

III **नीचे के 'ए' और 'बी' सूची के विषयों को जोडकर लिखिए ।**

ए	बी
पुर्तगाली	पांडिचेरी
डच्च	कलकत्ता
फ्रांसिसी	पुलिकाट्
अंग्रेज	गोवा

कार्यकलाप :

भारत का मानचित्र में युरोपियनों के प्रारंभिक व्यापारी केन्द्र पहचानिए ।

☆ ☆ ☆

©KTBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पाठ 2 भारत में अंग्रेज

पाठ परिचय

अंग्रेजों का और फ्रांसिसी सैनिक सामर्थ्य, राजकीय महत्वाकांक्षा तथा स्थानीय राजाओं के अंत:कलह युद्धों के कारण बने । इसलिए अंग्रेज भारत में अनेक युद्ध किए। चतुरता तथा कुटिल नीति से कर्नाटिक और बंगाल में सा.श. 1857 तक अपना अधिपत्य स्थापित किया ।

सामर्थ्य

1. भारत में अंग्रेजों की राजकीय सफलता के सहायक अंशों को समझना ।
2. प्लासी और बक्सार युद्धों के कारण तथा परिणाम के बारे में जानेंगे ।
3. कर्नाटिक युद्धों के कारण तथा परिणामों को जानना ।
4. 'दत्तक-पुत्रों को हक नहीं' इस नीति से परिचय कराना ।

©KTBS Not to be republished

प्लासी युद्ध (सा.श. 1751)

बंगाल मोगल साम्राज्य का एक समृद्ध प्रांत था । वहाँ का प्रांताधिकारी अलीवर्धीखान तब स्वतंत्र हुआ, जब मोगल साम्राज्य अवनती की राह पर था उसके बाद सिराज-उद्-दौल बंगाल का नवाब बना ।

नवाब सिराजुद्दौल युवा होने के कारण अंग्रेज उसकी उपेक्षा करके, उसके अनुमति के बिना कलकत्ता में पोर्टविलियम्' किला को मजबूत किया । इसके अलावा व्यापार के छूट का भी दुरुपयोग करते थे ।

प्लासी युद्ध के कारण :

नवाब ने समझा कि अंग्रेज उसके आदेश का पालन किए बिना दुश्मनों के साथ मिलकर कुतंत्र कर रहे हैं । इसलिए क्रोधित होकर अंग्रेजों के कोठियों पर कब्जा कर लिया। यही आगे चलकर प्लासी युद्ध का कारण बना ।

सिराजुद्दौल

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

नवाब सिराजुद्दौल का हमले की बात सुनते ही मद्रास कंपनी के अधिकारी राबर्ट क्लाइव के नायकत्व में सेना को कलकत्ता भेज दिया । बंगाल की परिस्थिति जानकर क्लाइव ने नवाज के विरुद्ध कुतंत्र किया । सिराज का सेनानी मीर जाफर को नवाबगिरी का लालच दिखाकर रहस्य में समझौता कर लिया ।

नवाब का सेनानी मीर जाफर नवाब होने की आशा से अंग्रेजों के साथ समझौता कर लिया। इसलिए नवाब बनते ही अंग्रेजों को 175 लाख रुपए देना था । इस काला व्यवहार में अमीनचंद नामक व्यापारी दोनों के बीच का कडी बना ।

राबर्ट क्लाइव

मीर जाफर

सिराजुद्दौल और अंग्रेजों की सेना के बीच प्लासी में (1757) जून 23 को युद्ध हुआ । युद्ध में मीर जाफर ने अंग्रेजों की सहायता की । अंत में सिराजुद्दौल मारा गया । मीर जाफर के द्रोह के कारण अंग्रेज जीत गए । अंग्रेज उपनिवेश की स्थापना हुई ।

परिणाम

आधुनिक इतिहास में प्लासी युद्ध एक निर्णायक युद्ध है । इस युद्ध में सिराजुद्दौल की हार से अंग्रेज बंगाल के राजकीय में महत्व का स्थान पाए ।

- अंग्रेजों को मदद करने की वजह से मीर जाफर बंगाल का नवाब बना । लेकिन वह अंग्रेजों की कठपुतली बना ।
- अंग्रेज ईस्ट इंडिया कंपनी को अपार धन तथा '24 परगना' नामक जिले की जमींदारी हक मिला ।
- प्लासी युद्ध आगे का बक्सार युद्ध का कारण बना ।
- प्लासी का विजय भारत में अंग्रेज साम्राज्य स्थापना का पहला कदम था ।

©KTES Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

बक्सार युद्ध (सा.श. 1764)

मीरजाफर अंग्रेजों के अनंत माँगों को पूरा करने में विफल हो गया । इसलिए अंग्रेज मीरजाफर को गद्दी से उतारकर उसका दामाद मीर कासीम को बंगाल का नवाब बना दिया ।

कारण : मीरकासीम स्वतंत्र मनोभाव का था । अंग्रेजों से दस्तकों का दुरुपयोग होते देखकर, वह बंगाल के सभी व्यापार को कर मुक्त कर लिया । इससे अंग्रेजों को भारतीय व्यापारियों से प्रतिस्पर्धा करना पडा । इसलिए मीरकासीम को नवाब स्थान से पदच्युत करके फिर से मीरजाफर को नवाब बना दिया ।

इससे नाराज होकर मीर कासिम ने बदला लेने के लिए अवध संस्थान का नवाब षूजा - उद्दौल और मोगल राजाओं से मिलकर एक मैत्रिकूट बना लिया । बाद में उनकी सहायता से बंगाल को फिर से पाने के लिए अंग्रेजों पर सा.श. 1764 में युद्ध की घोषणा की । यही प्रसिद्ध बक्सार युद्ध था । इस युद्ध में हेक्टर मन्रो नायकत्व में अंग्रेज सेना मीर कासीम का संयुक्त सेना को हरा दिया । षूजाउद्दौल रोहिलखंड में आश्रय लिया । दूसरा षाआलम् अंग्रेजों से मिला । मीर कासीम युद्ध भूमी से भाग गया ।

परिणाम

- मीरजाफर फिर से बंगाल का नवाब बना ।
- बक्सार युद्ध से बंगाल में अंग्रेजों का अधिकार स्थिर हो गया ।
- इस युद्ध के कारण अंग्रेजों का प्रभाव बंगाल से अलहाबाद तक विस्तार हुआ ।
- मोगल राजा दूसरा षा आलम् से बंगाल प्रांत का दिवानीहक (गान संग्रह करना) पाने का अवकाश अंग्रेजों को मिला ।
- सा.श. 1765 में मीरजाफर की मृत्यु के बाद निजामउद्दौल बंगाल का नवाब बना ।

कर्नाटिक युद्ध (सा.श. 1746-1763)

मोगल साम्राज्य का एक प्रांत ही कर्नाटक था । कोरमंडल तट (आज का तमिलनाडु तथा आंध्रप्रदेश का तटीय प्रदेश) और उसके पीछे के प्रदेश को युरोपियन 'कर्नाटिक' (Carnatic) कहते थे ।

अंग्रेज तथा फ्रांसिसी के बीच दक्षिण भारत के व्यापार पर नियंत्रण करने के लिए स्पर्धा होने लगा । कुछ ही दिनों में यह स्पर्धा युद्ध का कारण बन गया । इन दोनों के बीच हुए तीन युद्धों को कर्नाटिक प्रदेश मुख्य भूमिका बनी । इसलिए इन युद्धों को 'कर्नाटिक युद्ध' नाम से इतिहास में पहचाना जाता है ।

©KTBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

प्रथम कर्नाटिक युद्ध (सा.श. 1746-1748)

कारण

- भारत में अंग्रेज तथा फ्रांसिसी के बीच का व्यावहारिक मत्सर, स्पर्धा, राजकीय महत्वाकांक्षा आदी युद्ध के कारण बने ।
- युरोप खंड में प्रारंभ हुआ आस्ट्रिया का उत्तराधिकारत्व के कारण से अंग्रेज और फ्रांसिसीयों के बीच युद्ध आरंभ हुआ । यह भारत में स्थित इन दोनों के बीच युद्ध आरंभ हुआ । यह भारत में स्थित इन दोनों के बीच का युद्ध का कारण बना ।

आर्काट् कर्नाटिक संस्थान की राजधानी थी । अंग्रेज आग्नेय समुद्र किनारे प्रदेश जीतकर फ्रांसिसीयों का पांडिचेरी जीतना चाहते थे । इसका बदला लेने के लिए फ्रांसिसी गवर्नर डूप्ले मद्रास को जीत लिया ।

अंग्रेज अर्काट का नवाब अन्वरुद्दीन से सहायता माँगी । नवाब ने मद्रास पर कब्जा करने के लिए सेना भेजा । लेकिन नवाब की सेना हार गई । इतने में युरोप का अंग्रेज तथा फ्रांसिसी के बीच का युद्ध समाप्त होकर, समझौता हो गया । यह समझौता भारत में स्थित अंग्रेज तथा फ्रांसिसियों पर भी लागू हुआ ।

पहला कर्नाटिक युद्ध में फ्रांसिसी जीत गए । 'एक्स-ला-चापेल्' समझौते के साथ इसका अंत हुआ ।

परिणाम

- मद्रास अंग्रेजों के वश में आया ।
- फ्रांसिसी अर्काट में अपना स्थान मजबूत कर लिया । इससे डुप्ले की प्रतिष्ठा बढ गई ।
- आपसी युद्ध-कैदियों का विमोचन किया गया ।

दूसरा कर्नाटिक युद्ध (सा.श. 1749-1754)

कारण

अर्काट तथा हैदराबाद में राज्याधिकार (उत्तराधिकार) की समस्या होने लगे यह युद्ध का प्रमुख कारण बना ।

अर्काटक में चंदासाहेब तथा अन्वरुद्दीन के बीच और हैदराबाद में नासिरजंग तथा मुजाफरजंग के बीच सिंहासन के लिए स्पर्धा प्रारंभ हुआ ।

गुप्त संधान द्वारा डुप्ले ने चंदासाहेब तथा मुजाफरजंग के बीच एक मैत्रिकूट बना लिया । अन्वरुद्दीन को हराके मार दिया । उसका बेटा महम्मद अली तिरुचिनापल्ली भाग गया ।

©KTBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

चंदासाहेब को अर्काट में और मुजाफरजंग को हैदराबाद में नवाब बनने के लिए फ्रांसिसियों ने सहायता की । कुछ दिनों के बाद मुजफरजंग की हत्या हुई । उसके स्थान पर फ्रांसिसी सलाबतजंग को लाए । इससे नाराज होकर अंग्रेज राबर्ट क्लाइव के नायकत्व में अर्काट नगर पर कब्जा करके, चंदासाहेब को मार डाला । महम्मदअली को अर्काट का नवाब बना दिया । इस युद्ध के बाद फ्रांसिसी सरकार डुप्ले को वापस बुला लिया । 1754 का 'पांडिचेरी समझौते' से युद्ध समाप्त हुआ ।

परिणाम

- अर्काटक में फ्रांसिसी शक्ती क्षीण हो गई ।
- अंग्रेज लगान वसूल करने का तथा सेना की तुकडी रखने का हक (अधिकार) पा लिया ।

दूसरा कर्नाटिक युद्ध के अंत में अंग्रेज अर्काट में और फ्रांसिसी हैदराबाद में अपना अधिपत्य कायम किया ।

तीसरा कर्नाटिक युद्ध (सा.श. 1758-1763)

कारण

युरोप में सप्तवार्षिक युद्ध सा.श. 1756 में प्रारंभ हुआ । इसके परिणाम स्वरूप भारत में भी फ्रांसिसी तथा अंग्रेजों के बीच युद्ध आरंभ हुआ ।

सा.श. 1760 में अंग्रेज सेनानी सर् ऐरकोट तथा फ्रांसिसी गवर्नर कौंट डी ल्याली के बीच पांडिचेरी के पास वांडिपाष में युद्ध हुआ । इस युद्ध में फ्रांसिसी हार गए । फ्रांसिसी अंग्रेजों के शरण में आए । युरोप में इस समय सप्तवार्षिक युद्ध समाप्त होकर, प्यारिस संधी हुई । परिणाम स्वरूप कर्नाटिक में भी युद्ध समाप्त हो गया ।

परिणाम

- भारत में फ्रांसिसी राजकीय तथा सैनिक प्रभाव कम हो गया ।
- भारत में अंग्रेज युरोप की प्रबल शक्ती बनकर उभरे ।

लार्ड वेल्लेस्ली

सहायक सेना पद्धती (1798)

अंग्रेज गवर्नर जनरल लार्ड वेल्लेस्ली ने सहायक सेना पद्धति को सा.श. 1798 में जारी किया । यह अंग्रेज राज्य विस्तार तथा भारत पर अंग्रेजों का राजकीय नियंत्रण को सहायता करने का एक महत्व शासन बना ।

अपने पडोसी राज्यों के आतंक से बचने के लिए अंग्रेज सेना की सहायता लेने के लिए

©KTBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

भारतीय राजाओं को प्रेरित किया । इस दिशा में कभी-कभी दबाव भी डाला ।

शर्तें :

- इस पद्धति माननेवाले राजाओं को अंग्रेज सेना अपने पास रखना था ।
- सेना का पूरा खर्च नकद रूप में देना था ।
- दरबार में अंग्रेज रेसिडेंट को रखकर, उसका खर्च भी उन्हें ही देखना पडता था ।

सहायक सेना पद्धति के परिणाम :

- सेना का अधिक खर्च के भार से भारतीय राज्य आर्थिक रूप से दुर्बल हो गए ।
- अंग्रेज बहुत भू-प्रदेशों को अपने वश में ले लिया ।
- इस नीति के अंतर्गत आनेवाले राज्य अपना परमाधिकार खो दिए ।

सहायक सेना पद्धति के अंतर्गत आए राज्य :

हैदराबाद, मैसूरु, तिरुवांकूरु, बरोडा, जयपुर, जोधपुर, भरतपुर, नागपुर, ग्वालियर, औद, तंजावूर, सूरत आदी ।

'दत्तक पुत्रों को हक नहीं' नीति (1848)

अंग्रेज गवर्नर जनरल लार्ड डालहौसी से 'दत्तक पुत्रों को हक नहीं' नीति को जारी किया । उसने घोषणा किया कि - 'भारत का किसी भी राजा को पुत्र संतान नहीं तो उसका दत्तक पुत्र को राजा बनने का हक नहीं ।'

इस नीति के अनुसार पुत्र संतानहीन राजाओं के मरने के बाद उनके राज्य अंग्रेजों के अधीन आ गए । यह क्रम पहले से भारत में जो आचरण रूढी में था, उसका विरुद्ध था ।

लार्ड डालहौसी

परिणाम :

- इस कुटिल नीति से औध, सतारा, नागपुर और झान्सी आदी राज्य अंग्रेजों के वश में आ गए।
- सा.श. 1856 में डालहौसी अपने देश लौटते समय भारत का 2/3 भू-प्रदेश अंग्रेजों के पक्ष में आ गए थे ।

©KTBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

कालगणन (सा.श.)

- प्लासी युद्ध : 1757
- बक्सार युद्ध : 1764
- कर्नाटिक युद्ध : 1746 - 1763
- सहायक सेना पद्धति : 1798
- दत्तक पुत्रों को हक नहीं नीति : 1848

I रिक्त स्थानों को सूक्त शब्द से भरिए ।

1. प्लासी युद्ध के बाद बंगाल का नवाब ..... बना ।
2. बक्सार युद्ध में मोगल राजा ..... ने भाग लिया ।
3. दूसरा कर्नाटिक युद्ध ..... समझौता के साथ समाप्त हुआ ।
4. वांडिवाष युद्ध ..... में हुआ ।

II नीचे के प्रश्नों का एक वाक्य में उत्तर लिखिए ।

1. बक्सार युद्ध किसके बीच हुआ ?
2. कर्नाटिक युद्ध के अंत में किसकी जीत हुई ?
3. सहायक सेना पद्धति को किसने जारी किया ?
4. दत्तक पुत्रों को हक नहीं नीति को किसने जारी किया ?

III समूह में चर्चा करके उत्तर दीजिए ।

1. बक्सार युद्ध के क्या परिणाम हुए ?
2. प्लासी युद्ध के कारण बताइए ।
3. सहायक सेना पद्धति के परिणाम बताइए ।
4. दत्तक पुत्रों को हक नहीं नीति के अंतर्गत आए राज्यों के नाम बताइए ।

☆ ☆ ☆

©KTBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पाठ 3 अंग्रेज शासन का परिणाम

पाठ परिचय

अंग्रेज ईस्ट इंडिया कंपनी 1600 से 1757 तक सिर्फ एक व्यापारी कंपनी था । व्यापारी उद्देश से आए अंग्रेज धीरे-धीरे भारत के राजकीय में भी भाग लेने लगे । प्रारंभ में भारत के विविध राजकीय शक्तियों को अपनी आकांक्षाओं को प्रकट करते हुए अंग्रेज अपनी व्यापारी शक्ति बढाई । बाद में वे अपने इच्छा सूत्र के बदले युद्ध सूत्र को अपना लिया । इससे वे राजकीय में भी बलशाली हुए । युद्धों से जीता भारत को बौद्धिक रूप से भी अपना अधीन लेने का उपाय करने लगे । इस दूरगामी सपने को सच बनाने के लिए राजकीय सुधार को अपना साधना का मार्ग बना लिया । राजकीय, अर्थव्यवस्था, सामाजिक क्षेत्र में विविध कानून जारी किया । अपना बहुमुखी हितासक्ति ही इसमें ज्यादा था । जारी किए गए कानूनों को 'सुधार' नाम दिया । प्रारंभ में भारतीय भी वैसे ही समझने लगे । उनसे जारी किए गए कानूनों से अगर भारतीय समाज में सुधार हुआ है तो वह आकस्मिक कह सकते हैं । इस पाठ में 'सुधार' से संबंधित चार क्षेत्रों का विवेचना की गई है । कर विभाग, अंग्रेजी शिक्षा, आर्थिक प्रभाव, शासनात्मक अभिवृद्धि ये ही चार क्षेत्र हैं ।

सामर्थ्य

1. कर विभाग में जारी किए गए कायम् (शाश्वत) जमीनदारी पद्धती, महलवारी पद्धती, किसानवारी पद्धति के गुणावगुण पहचानेंगे ।
2. भारत में प्रवेश किया अंग्रेज शिक्षा पद्धती के बारे में जानना ।
3. आर्थिक प्रभावों की सूची बनाना ।
4. शासनात्मक सफलता के बारे में समझना ।

भू-कर नीति

एक निर्दिष्ट प्रमाण का आय सरकारी खजाने में आने के लिए अंग्रेज भू-लगान नीति जारी किया। इसके अलावा भारत में होनेवाले युद्धों का खर्च भरने के लिए, अंग्रेज अधिकारियों के

©KTBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

हजारों रुपये वेतन देने के लिए और कई उद्देशों के लिए कंपनी को अपार धन की आवश्यकता थी । इसके लिए कंपनी ने भारतीय किसानों से भारी भू-लगान वसूल करने लगा ।

गवर्नर जनरल वारन् हेस्टिंग्स ने अपना अधिकार के समय में लगान वसूल करने के लिए नीलाम करने की व्यवस्था भी जारी किया । नीलामी के वक्त जमीनदार परस्पर स्पर्धा से लगान देने तैयार हुए तो भी बाद में वसूली में विफल हो जाते थे । इस तरह लगान के प्रमाण में हेर-फेर होता था । इस समस्या के परिहार रूप में अंग्रेज अलग तीन प्रकार के लगान पद्धतियों को जारी किया ।

1. कायम् जमींदारी पद्धती (सा.श. 1793)

कार्नवालीस

गवर्नर जनरल कार्नवालीस ने बंगाल, बिहार, ओरिस्सा में भू-कर को निर्दिष्ट रूप में कायम करना चाहा। लगान संग्रह के लिए जमींदारों से किया गया समझौते को कायम जमींदारी पद्धती कहते हैं । इस पद्धति के अनुसार जमींदार अंग्रेजों के एजेंट की तरह काम किए । कंपनी को मिलनेवाला लगान कायम रूप में निश्चित हो गया था। इस तरह अंग्रेज सरकार को निर्दिष्ट प्रमाण का आय मिलता था। लगान वसूली के लिए सरकार का खर्च कम हो गया । भू-मालीक प्रबल जमींदार कई कठिन संदर्भों में सरकार की सहायता की । अपना समर्थन करने के लिए, सहायता करने के लिए अंग्रेज ऐसे नए वर्गों की सृष्टि की ।

किसानों पर परिणाम : भारी लगान वसूल करने के लिए जमींदार किसानों पर जोर-जबर्दस्ती की। भू-मालीक कृषि उत्पादन बढाने में कोई रुचि नहीं दिखाई । फसल का नुकसान हुआ तो भी किसानों को लगान देना पडता था । कायम जमींदारी पद्धति से कृषिरंग गिर गया । अपने घरेलू उद्योगों के लिए जो वाणिज्य फसल चाहिए वही फसल उगाने के लिए किसानों पर जबर्दस्ती करके, किसानों को और गरीब बना दिया । इस कारण से बंधुआ मजदूरी तीव्र गती से बढ गया ।

2. किसानवारी पद्धती (सा.श. 1820)

मध्यवर्ती के बिना सीधा सरकार लगान देने की पद्धती को ही किसानवारी पद्धति कहते

©KTBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

थे । सरकार तथा किसान का सीधा संबंध ही किसान पद्धति का लक्षण है । इस पद्धति को दक्षिण तथा पश्चिम भारत में जारी किया गया । परिणाम में यह कायम जमींदारी पद्धति से अलग नहीं था ।

बाद में किसानवारी पद्धती में जमीन को मापकर, जमीन के उपजाऊपन, सिंचाई आदी देखकर लगान निर्धारित किया गया । उत्पादन का आधा हिस्सा लगान के रूप में देना था । समय - समय पर लगान पर निर्णय लेते थे । निर्धारित लगान बहुत ही ज्यादा रहता था । अकाल या बाढ से फसल का नुकसान होने पर भी किसान को लगान देना पडता था । इस पद्धति को मद्रास प्रांत में सर् थामस् मन्रो ने 1820 में जारी की ।

3. महल्वारी पद्धती (सा.श. 1833)

महल का अर्थ है गाँव या एस्टेट (भू - संपत्ती) महल को लगान निर्धारित किया जाता था । स्थानीय जमींदार सभी किसानों के लगान का मिम्मेदारी लेता था । 19वी शताब्दी में जारी किया इस पद्धती को उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश के कुछ भागों में तथा पंजाब में जारी किया गया।

भू-लगान पद्धति के कुल परिणाम :

- अंग्रेजों ने जमीन को बेचने का वस्तु बना दिया ।
- जमीन को बेचने का तथा नीलामी करने का प्रकरण ज्यादा हो गए ।
- भू-लगान को नकद रूप में देने के कारण पैसे का महत्व ज्यादा हो गया ।
- आय को बढाने के लिए जमींदार खाद्य पदार्थों के बदले में कपास, जूट, मूँगफली, तंबाकू, गन्ने जैसे वाणिज्य फसल उगाने के लिए किसानों से जबर्दस्ती किया गया । वाणिज्य फसल निर्यात करने के लिए योग्य होने के कारण अंग्रेजों को इससे लाभ हुआ । इसके फल स्वरूप खाद्य पदार्थों की कमी हो गई ।
- जमींदारी पद्धति में ही अनेक नए किसान वर्गों का जन्म हुआ ।

©KTBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अंग्रेजी शिक्षा

शिक्षा हर एक व्यक्ति को स्वतंत्र बनाने का साधन है । शिक्षा द्वारा मिलनेवाला ज्ञान से जीवन को सुंदर बनाने के लिए साध्य होता है । अंग्रेज अंग्रेजी - शिक्षा सार्वत्रीकरण करने से भारतीयों को उसका लाभ मिला । सभी वर्गों को शिक्षा मिली ।

1813 के जार्टर कानून में भारतीयों की शिक्षा के लिए एक लाख रुपए अलग रखा गया। लेकिन 1823 तक सरकार इन रुपयों में एक पैसा भी खर्च नहीं किया था । भारतीय चिंतक तथा विदेशी मत प्रचारक आधुनिक शिक्षा देने के पक्ष में आंदोलन किया । इस दिशा में कंपनी की धारणा अलग थी । अपने शासन में निचले वर्ग के सरकारी नौकर बनकर, कम वेतन में काम करनेवाले, अंग्रेजी बोलनेवाले भारतीय चाहिए थे । अंग्रेजों पर निष्ठा रखनेवाले शिक्षित वर्ग का सृष्टि करना, उनका उद्देश था । नई शिक्षा नीती जारी करने का श्रेय लार्ड मेकाले तथा चार्ल्स उड् को मिलता है ।

लार्ड मेकाले

चार्ल्स उड्

शिक्षा माध्यम पर विवाद

शिक्षा माध्यम से जुडे कुछ अंग्रेज विद्वानों ने भारतीय भाषाओं द्वारा भारतीय विषयों को सिखाने पर जोर दिया । और कई लोग पाश्चात्य विज्ञान तथा साहित्य को अंग्रेजी में देने पर जोर दिया । यह विवाद खत्म होकर परिहार रूप में (1835) गवर्नर जनरल विलियम् बेंटिंक ने पाश्चात्य विज्ञान तथा अंग्रेजी माध्यम के पक्ष में शिक्षा नीति का घोषणा किया ।

©KTBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

कुछ युरोपीय विद्वान् प्राचीन भारत का सांस्कृतिक विरोषताओं को पश्चिमी दुनिया को परिचय करवाए । 1734 में सुप्रीम कोर्ट का न्यायाधीश बनकर आए सर विलियम् जोन्स ने कलकत्ता में 'एशियाटिक् सोसैटी ऑफ बेंगाल्' की स्थापना की । संस्कृत भाषा का महत्व बताया । सर् चार्ल्स विल्किन्स ने 1785 में भगवद्गीता का अंग्रेजी भाषांतर किया । म्याक्समुल्लर ने ऋग्वेद और कई कृतियों का भाषांतर किया ।

बेंटिंक के घोषणा को उसका कार्यकारी समिति का सदस्य मेकाले का टिप्पणी ही आधार था । मेकाले एक पक्का आंग्लवादी था । उसके विचार में पौरात्य ज्ञान बहुत तुच्छ था। संस्कृत व्याकरण का अपहास्य किया । भारतीयों को उनके सांस्कृतिक जडों से दूर करना ही उसका लक्ष्य था । 'एक ऐरोप्य ग्रंथालय का एक अलमारी में रखे एक पंक्ति के किताबों से मिलनेवाला ज्ञान, पूरे पूर्व देशों के ज्ञान का बराबरी नहीं कर सकता' ये बातें उसकी गिरी हुई मन की साक्षी है ।

1854 में अंग्रेज भारत के लिए एक नई शिक्षा नीति रूपित किया । यह चार्ल्स उड् के टिप्पणी पर आधारित था । कुछ ही समय में कलकत्ता, मुंबई, मद्रास में विश्वविद्यालय का स्थापना (1857) किया गया । प्राथमिक शाला, प्रौढ शाला, कालेज - विश्वविद्यालय इस प्रकार धीरे-धीरे शिक्षा स्तर जारी किया गया । 1844 में अंग्रेजी भाषा शासन का अधिकृत भाषा बन गई ।

मुंबई (बाँबे) विश्वविद्यालय

©KTBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

मद्रास विश्वविद्यालय

पाश्चात्य शिक्षा का परिणाम

परंपरानुसार शिक्षा पद्धती की अवनति हो गई । नई शिक्षा पद्धति से विविध भाषा बोलनेवाले भारतीयों को अंग्रेजी में परस्पर बात करना आसान हो गया । यह लोगों में राष्ट्रीय भावना को बढावा देने में सहायक हुई । युरोप का बौद्धिक चिंतन भारतीय समाज में प्रवेश करके दूरगामी परिणाम किया । भारतीय साहित्य पर भी गंभीर परिणाम होने के कारण नया साहित्यांदोलन का कारण भी बना । इससे अनेक वर्गों को नयी सामाजिक चेतना मिली ।

आर्थिक प्रभाव

18 तथा 19 वी शतमान में हुआ इंग्लैंड का औद्योगिक (दस्तकारी) क्रांति भारत के व्यापार तथा वाणिज्य पर गंभीर परिणाम किया । 1600 से 1757 तक कंपनी केवल व्यापारी कंपनी था । प्लासी युद्ध के बाद वह भारत का व्यापार तथा उत्पादन पर अपना एक स्वामित्व पाने के लिए बंगाल के राजकीय अधिकार का अच्छी तरह उपयोग किया । उसी समय कच्चा कपास पर भी वह अपना एकाधिपत्य स्थापित किया । परिणामस्वरूप बुनकरों को कच्चावस्तु

©KTBS not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

ज्यादा पैसे देकर खरीदना पडा । अंग्रेज वाणिज्य नीति का लक्ष्य सिर्फ अंग्रेज दस्तकारी के आवश्यकताओं की पूरी करने के अलावा कुछ नहीं था । कंपनी का मुख्य लक्ष्य यह था कि भारत को ब्रिटेन के यंत्र निर्मित वस्तुओं का आयात करना और ब्रिटेन को यहाँ से कच्चा वस्तुओं का निर्यात करना था । मुक्त व्यापार नीति जारी करने के कारण भारत के गृहोद्योग (घरेलू उद्योग) की अवनति हो गई ।

दादाभाई नवरोजी

अंग्रेज शासन के समय भारत की संपत्ती इंग्लैंड जाने के कारण देश गरीब बन गया । इससे यहाँ पूँजी का अभाव हुआ । यहाँ का दस्तकारी अभिवृद्धि बन्द हो गयी। अर्थशास्त्र के पितामह आडम् स्मिथ ने भारत में शासन करनेवाले अंग्रेजों को 'लूट-मार' कहा है । दादाभाई नवरोजी ने कहा कि - 'संपत्ती का रिसाव ही भारतीय गरीब होने का कारण है ।'

शासनात्मक सफलता

रेग्युलेटिंग कानून (सा.श. 1773)

भारत के संविधान में सुधार अंग्रेज शासन काल से ही प्रारंभ हो गए । इस देश का संविधान के इतिहास में रेग्युलेटिंग कानून एक प्रमुख अवस्था था । भारत में गवर्नर जनरल वारन् हेस्टिंग्स ने यह शासन 1773 में जारी किया । भारत में अंग्रेज शासन को यही नींव बना । वह ईस्ट इंडिया कंपनी को संविधान दिया ।

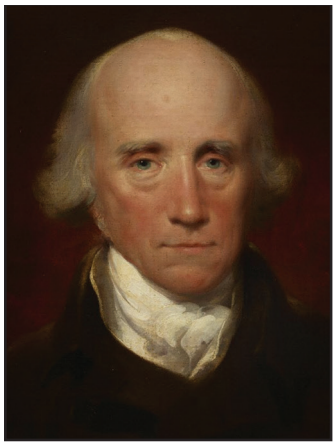

वारन् हेस्टिंग्स

पिट् इंडिया कानून (सा.श. 1784)

भारत का शासन क्रम पर इंग्लैंड सरकार संतुष्ट नहीं था। उसकी ओर और भी ज्यादा ध्यान केंद्रित करने का निर्धार किया। इसलिए प्रधानमंत्री पिट् ने एक कानून जारी किया । इस कानून द्वारा ईस्ट इंडिया कंपनी अंग्रेज शासन का अधीन होकर, उसका एक विभाग बन गया । बाद में अंग्रेज अनेक कानून जारी किए।

©KTBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

मार्ले - मिंटो सुधार (सा.श. 1909)

लार्ड मिंटो भारत में वाइसराय था । उसी समय में लार्ड मार्ले सेक्रेटरी ऑफ स्टेट था । लार्ड कर्जन का जबर्दस्ती शासन, भारतीय क्रांतिकारियों का आंदोलन आदी कारणों से मार्ले-मिंटो सुधार जारी किए गए । इस कानून के प्रकार सरकार के कार्यक्रमों में योग्य भारतीयों की संख्या बढाने का निर्णय लिया गया । प्रांतीय शासन सभा का विस्तार किया गया ।

मार्ले - मिंटो सुधार से भारत का राज्यांग घटना में कोई क्रांतिकारक बदलाव नहीं हुआ। प्रजाप्रतिनिधियों को कोई भी जवाब्दारी नहीं दिया ।

मांटेग्यु - चल्म्स फर्ड सुधार (सा.श. 1919)

मार्ले-मिंटो सुधार से भारतीयों को समाधान नहीं हुआ । 1917 में सेक्रेटरी ऑफ स्टेट मांटेग्यु ने एक घोषणा किया । इस घोषणा में उसने स्पष्ट किया कि - भारतीयों को शासनांग में महत्व देकर स्वयं अधिकार संस्थाओं की अभिवृद्धि करना ही अंग्रेज सरकार की नीति है । भारत का वैसराय लार्ड मिंटो ने ये कानूनों को जारी किया । सेक्रेटरी ऑफ स्टेट का इंडिया कौन्सिल में सदस्यों की संख्या बढाई गई । इनका अधिकारावधी 5 साल निर्धारित किया गया । भारत का एक हाय कमीशनर को लंडन में नियुक्त किया गया ।

1935 का शासन

मार्ले - मिंटो सुधार से भारतीय संतुष्ट नहीं हुए । लोगों को संतुष्ट करने के लिए 1935 में भारत सरकार का कानून महत्व का बदलाव किया । प्रांत तथा राज्यों की एकता से भारतीय एकता की रचना हुई । केंद्र सरकार में द्विमुख शासन पद्धती रूढी में आया । प्रांतीय सरकार में जवाब्दारी सरकार अस्तित्व में आए । यह शासन भारत का घटनात्मक इतिहास में एक मील का पत्थर है ।

©KTBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अभ्यास

I. **नीचे के प्रश्नों का एक वाक्य में उत्तर दीजिए ।**

1. कायम जमींदारी पद्धती को किसने जारी किया ?
2. किसानवारी पद्धती क्या है ?
3. 1813 का चार्टर कानून में भारतीय शिक्षा के लिए कितने पैसे अलग से रखे थे ?
4. भारत में रेग्यूलेटिंग कानून को कौन, कब जारी किया ?
5. 1857 में स्थापित भारतीय विश्वविद्यालयों का नाम बताइए ।

II. **समूह में चर्चा करके उत्तर दीजिए ।**

1. कायम जमींदारी पद्धती से किसान पर क्या परिणाम हुआ ?
2. पाश्चात्य शिक्षा के परिणाम के बारे में बताइए ।
3. भारत के प्रमुख शासनात्मक सुधार के नाम बताइए ।

III **नीचे के 'ए' और 'बी' सूची के विषयों को जोडकर लिखिए ।**

ए	बी
वारन् हेस्टिंग	कायम् जमींदारी पद्धती
कार्नवालीस	अंग्रेजी शिक्षा नीति
थामस् मन्रो	लगान वसूली का नीलामी व्यवस्था
विलियम् बेंटिंक	संपत्ती का रिसाव सिद्धांत
दादाभाई नवरोजी	किसानवारी पद्धती

IV **चर्चा कीजिए ।**

अंग्रेज काल का लगान पद्धती तथा प्रचलित कर पद्धती ।

☆ ☆ ☆

©KTBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पाठ 4 सामाजिक और धार्मिक सुधार

पाठ परिचय

पाश्चिमात्य शिक्षा का अनुष्ठान भारतीयों में नई जागृति पैदा की । इससे भारतीय समाज के दुर्बलताएँ और अवनति के कारण मालूम हो गए । भारतीय अपने समाज के न्यूनताओं को जानकर उन्हें सुधारने का मार्ग ढूँढने लगे । इस दिशा में संघ-संस्थाओं की स्थापना करके, समाज सुधारने में जो योगदान दिए उन 19वी शताब्दी के धार्मिक नायकों के बारे में पढेंगे ।

सामर्थ्य

1. 19 वी शताब्दी के भारतीय समाज सुधार के कारण तथा चिंतनशील व्यक्तियों के प्रयत्नों को जानेंगे ।
2. समाज में जागृति पैदा करने में संघ-संस्थाएँ तथा सुधारकों की क्या देन है ? समझेंगे ।
3. सामाजिक सुधार आंदोलन के परिणामों को जानेंगे ।

आधुनिक पाश्चिमात्य विचारधारा के परिणामस्वरूप भारत में नई जागृति हुई । पाश्चिमात्य संस्कृति, वेष-भूषा, चाल-चलन, समाज, धार्मिक विचार, विश्वास और अंग्रेजों के सामाजिक आदर्शों का प्रभाव भारतीयों पर पडा । भारतीय विशेष रूप से पाश्चिमात्यों का वैज्ञानिक विचार, मानवतावाद, कार्य सिद्धांतों से प्रभावित हुए । इससे उपनिवेश भारत में नवोदय का जन्म हुआ। समानता का नया ज्ञान ही नवोदय आंदोलन का मूल कारण बना । इसे सामाजिक और धार्मिक आंदोलन भी कहते हैं । ये आंदोलन दलित तथा स्त्रीयों का सामाजिक समानता के लिए जोर दिया । अंग्रेजी शिक्षा पाने से भारतीयों का विमोचन होगा । ऐसे बताते हुए अंग्रेज भारतीयों पर उपनिवेश सिद्धांत का बोझ डालते ही गए । हमारी देश की बडी परंपरा है । लेकिन परंपरा के सभी विषय अनुकरणीय नहीं है । इसलिए अंधविश्वास की मूढता को दूर करने की आवश्यकता है ।

©KTBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

राजा राम मोहनराय (ब्रह्म समाज - सा.श. 1828)

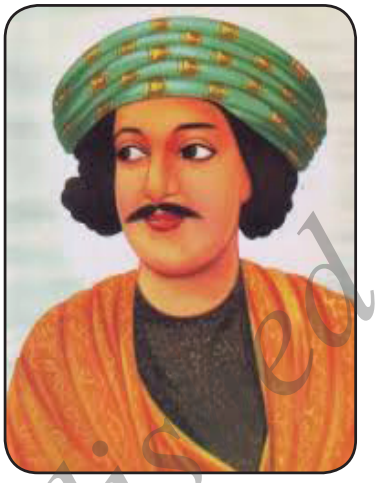
राजाराम मोहनराय

भारतीय समाज में जागृति पैदा करनेवालों में राजाराम मोहनराय प्रमुख हैं । रवीन्द्रनाथ टागोर ने इसे 'भारत के नवोदय का पितामह' कहा । जड भारतीय समाज में नई चेतना भरने के उद्देश से राजाराम मोहनराय ने 1814 में 'आत्मीय सभा' नामक संस्था की स्थापना की । बाद में 1828 में 'ब्रह्म सभा' की स्थापना किया । अगले साल उसे 'ब्रह्मसमाज' नाम दिया। राजाराम मोहनराय पूर्व तथा पश्चिम विचारों का मिश्रण थे । सति पद्धति, जाति पद्धति, मूर्तिपूजा, बहुपत्नित्व, बाल्य विवाह आदी सभी तरह के अंध विश्वासों का ब्रह्मसमाज खूब विरोध किया । राजाराम मोहनराय और उनके साथी अर्थहीन सतिपद्धति का निर्मूल करने के लिए अंग्रेज सरकार को निवेदन किया।

विधवाओं की शोचनीय स्थिति

इसलिए उस समय के गवर्नर जनरल विलियम् बेंटिंक ने सतिपद्धति को कानून बाहिर घोषित कर दिया। (सा.श. 1829) । पाश्चिमात्य शिक्षा का प्रतिपादन करके, उसके द्वारा अमानवीय पद्धतियों का निर्मूल करना चाहते थे। विधवा विवाह, एक देवताराधना के पक्ष लेनेवाले राममोहनराय ने 'संवाद कौमुदी' पत्रिका द्वारा सामाजिक सुधार आंदोलन प्रारंभ किया ।

वैचारिकता के द्वारा हिन्दू धर्म को परिशुद्ध करने का प्रयत्न राजाराम मोहनराय ने किया ।

एम.जी. रानडे

राममोहनराय अंग्रेजी शिक्षा का प्रतिपादन करनेवालों में प्रथम हैं । अपने खर्च से अंग्रेजी स्कूल चलाते थे । उन्होंने वेदांत कालेज का भी स्थापना की । राममोहनराय भारतीय पत्रिकोद्यम के आद्य प्रवर्तकों में एक हैं । उन्होंने कई नियतकालिकाओं को

©KTBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

प्रकट किया। जीवनभर सामाजिक अन्याय के विरुद्ध संघर्ष किया । उनके समाजमुखी कामों को देवेन्द्रनाथ टागोर और केशवचंद्र सेन आगे बढाए ।

जान लीजिए : 1829 में मोगल बादशाह ने राममोहनराय को 'राजा' नामक उपाधि दिया था।

आत्माराम पांडुरंग (प्रार्थना समाज - सा.श. 1867)

प्रार्थना समाज को आत्माराम पांडुरंग ने प्रारंभ किया । यह ब्रह्मसमाज के बाद मुंबई प्रदेश में प्रारंभ हुआ प्रमुख संस्था था । बाल वागले, एन.जी. चंदावर्कर, एम.जी. रानडे आदी इसके प्रमुख नायक थे । विधवा विवाह, अंतर्जाति विवाह, स्त्रीयों का स्थान -मान का उन्नतीकरण तथा शोषित वर्गों की अभिवृद्धि की तरफ उन्होंने ज्यादा जोर दिया । इसके अलावा निर्गतिक और अनाथों के लिए आश्रम स्थापित किया । विधवाओं के उद्धार के लिए शिक्षा-संस्थाओं की स्थापना किया।

महात्म ज्योतिबा फुले (सत्य शोधक समाज - सा.श. 1867)

ज्योतिबा फुले से महाराष्ट्र में ब्रह्मणेतर आंदोलन प्रारंभ हुआ ।

महाराष्ट्र के निम्न वर्गों में जागृति पैदा करने के लिए उन्होंने 'सत्यशोधक समाज' की स्थापना की । अछूत, अनाथ, विधवाओं के लिए स्कूल खोला । ब्राह्मण पुरोहितशाही का खंडन किया । उन्होंने 'गुलामगिरी' कृति की रचना करके, उसमें अपने विचारों को संवाद के रूप में व्यक्त किया । पत्नी सावित्रीबाई के साथ मिलकर पूना में लडकियों का स्कूल खोला । बाल विधवाओं के लिए 1863 में पुनर्वसती केंद्र खोलकर, शिशुहत्या रोकने का भी काम किया । विधवा विवाह को प्रोत्साहन दिया । बि.आर. अंबेडकर ने फुले को अपना तात्विक मार्गदर्शक के रूप में स्वीकार किया था ।

©KTBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

युवा बंगाली आंदोलन

राजाराम मोहनराय के सुधार का धडकन कई युवा चिंतनशीलों को प्रेरित किया था । यह 'युवा बंगाली आंदोलन' का प्रेरक बना । आंग्लो-इंडियन युवक हेन्री विवियन् डिरोजी इस आंदोलन के नेता थे । अपनापन और विवेचना से आलोचना करने के लिए उन्होंने युवाओं से कहा । लेकिन उस समय भारतीयों ने इसे गंभीर रूप से नहीं लिया ।

स्वामी दयानंद सरस्वती (आर्य समाज - सा.श. 1875)

स्वामी दयानंद सरस्वती ने आर्यसमाज का स्थापना किया। उनका पहला नाम मूलशंकर था । उनकी यह इच्छा थी कि जिस तरह का आदर्श समाज भारत के वेदकाल में था वैसा ही समाज की स्थापना आज होना चाहिए । इसलिए दयानंद सरस्वती ने ''लौटिए वेदों को'' कहा । उन्होंने मूर्तिपूजा, अछूत, बालविवाह और जातिपद्धति का खंडन किया और अंतर्जातीय तथा विधवा विवाह को प्रोत्साहित किया । इसके अलावा एक देवताराधना का प्रतिपादन किया ।

स्वामी दयानंद सरस्वती

दयानंद सरस्वती ने अपने विचारों को प्रसिद्ध कृति 'सत्यार्थ प्रकाश' में व्यक्त किया है । आर्यसमाज भारतीय शिक्षाभिवृद्धि के लिए प्रयत्न किया और इससे राष्ट्रीय आंदोलन को स्फूर्ति मिली । आर्य समाज के नायक लाला हंसराज ने लाहोर में 'दयानंद आंग्लो वेदिक् स्कूल' की स्थापना की । तिलक, लाला लजपतराय जैसे राष्ट्रीय नायक आर्यसमाज के तत्व और चिंतन से प्रभावित हुए थे । दयानंद के शिष्य श्रद्धानंद ने मतांतर हुए लोगों को वापस हिन्दू धर्म में लाने के लिए 'शुद्धि आंदोलन' प्रारंभ किया ।

जन्म के आधार पर ब्राह्मण अधिकार पाते थे । इसे दयानंद घृणा करते थे । उन्होंने गो-पूजा का प्रतिपादन किया और बताया कि स्त्रीयों को भी वेदों को सीखने का अधिकार है। संक्षेप में बताना है तो आर्यसमाज स्वराज्य और स्वदेश भावना को प्रचोदित करने का एक आंदोलन था।

©KTBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

©KTBS Not to be republished

स्वामी विवेकानंद (रामकृष्ण मिशन - सा.श. 1897)

स्वामी विवेकानंद ने युवाओं से बताया कि - ''उठो! जागो! लक्ष्य साधने तक मत रुकों''। इनका पहला नाम नरेंद्रनाथ दत्त था । इनका जन्म कलकत्ता में 1863 जनवरी 12 को

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

हुआ था । रामकृष्ण परमहंस के शिष्य बनकर बाद में सन्यास स्वीकार किया । रामकृष्ण की मृत्यु के बाद उनके शिष्यों से मिलाकर मार्गदर्शन करने की जिम्मेदारी इन पर आया । अमेरिका का चिकागो नगर में हुआ प्रथम विश्वधर्म सम्मेलन में (1893) उनका वेदांत पर किया गया भाषण उन्हें विश्वविख्यात बना दिया । पश्चिमी संस्कृति के कई साधना, महिला समानता के विचार उन्हें अच्छे लगे ।

भारत में पैदल यात्रा करके विवेकानंद ने भारत का उस समय की स्थिति देखकर चिंतित हुए । वे कहते थे 'जहाँ तक लोग भूख, गरीबी, अज्ञान में रहेंगे वहाँ तक मैं बार-बार जन्म लेकर उसे दूर करूँगा ।'

रामकृष्ण परमहंस

स्वामी विवेकानंद

पंडित ईश्वरचंद्र विद्यासागर ने ब्राह्मणेतर विद्यार्थियों के लिए संस्कृत कालेज खोला। 1856 में पहली बार उच्च कुल में कानून द्वारा विधना विवाह कलकत्ता में विद्यासागर के नेतृत्व में हुआ ।

मानव हित तथा समाज सेवा निरंतर करने के लिए उन्होंने रामकृष्ण मिशन की स्थापना की । स्त्रीयों के बारे में अपार गौरव रखनेवाले स्वामीजी ने कहा - 'स्त्रीयों का उद्धार हमारे राष्ट्र का उद्धार''। ''दरिद्र नारायण (गरीब) की सेवा'' करने को जोर दिया । उन्होंने भारत की प्रगती का सपना देखा ।

स्वामी विवेकानंद को बाल गंगाधर तिलक ने 'भारतीय राष्ट्रीयता का सच्चा पितामह'' कहा । सुभाषचंद्र बोस ही नहीं बल्की कई राष्ट्रीय आंदोलनकारों को इनके लेखन से प्रेरणा मिली।

©KTBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

स्वामी विवेकानंद विश्वधर्म सम्मेलन जाने से पहले मैसूरु आए थे । उस समय का राजा दसवा चामराज ओडेयर सम्मेलन जाने के लिए उन्हें धन की सहायता किया था । विवेकानंद की सलाह पर मैसूरु ओडेयर ने दलितों के लिए तीन प्रत्येक स्कूल खोले ।

कार्यकलाप : विवेकानंद से शिकागो धर्म सम्मेलन में किया गया भाषण के बारे में ज्यादा जानकारी लीजिए ।

मेडम् एच.पी. ब्लावटस्की और कर्नल् एच.एस. अल्काट्

(थियासाफिकल् सोसैटी - सा.श. 1875)

थियासाफिकल् सोसाइटी (ब्रह्मविद्या समाज) की स्थापना रुस की महिला मेडम् एच.पी. ब्लावटस्की और अमेरिका का कर्नल् एच.एस. अल्काट मिलकर किया । भारत आकर चेनै के पास का अड्यार में सोसाइटी का केंद्र कार्यालय प्रारंभ किया । बाद में डा. एनिबेसेंट इस सोसाइटी की अध्यक्ष बनी थी ।

मेडम् एच.पी. ब्लावटस्की

आनिबेसेंट

एच.पी. ब्लावटस्की लेखिका थी । उन्होंने कई प्रमुख कृतियों की रचना की थी । इन कृतियों में मानवता का विश्व भ्रात्रत्व (भाईचारा) तत्वशास्त्र, तुलनात्मक धर्म तथा पृकृति का सत्य जानने को मिलता है ।

©KTBS not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

डॉ. एनिबेसेंट भारतीय संस्कृति से प्रभावित होकर भगवद्गीता का अंग्रेजी में अनुवाद किया । 'न्यू इंडिया' तथा 'कामनवील' नाम के पत्रिकाएँ चालू किए । भारत में थियसाफिकल आंदोलन का केंद्र शक्ति बनकर, आंदोलन को आगे बढाया ।

थियसाफिकल सोसाइटी के उद्देश :

1. भेद-भाव छोडकर विश्वबंधुत्व कायम करना ।
2. धर्म, तत्वशास्त्र, विज्ञान आदी का तुलनात्मक अध्ययन करना ।
3. प्रकृति के निगूढ रहस्य और मानव में छुपे सुप्तशक्तियों के बारे में शोध करना ।

एनिबेसेंट ने बनारस में हिन्दू कालेज की स्थापना की । बाद में इसका नाम बनारस हिन्दू युनिवर्सिटी हुआ । बाल्यविवाह को रोकने के लिए तथा अंधविश्वासों के विरुद्ध प्रचार करने के लिए 'नायक' नाम का संस्था की स्थापना की । बाद में उन्होंने होमरुल आंदोलन शुरु किया । वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की अध्यक्ष बनी थी ।

सर् सैयद अहमदखान (अलिघर आंदोलन)

ज्यादातर मुस्लिम लोग पाश्चात्य शिक्षा को शंका की दृष्टि से देखते थे । वह शिक्षा अपने धर्म के हितासक्ति के लिए मारक मानते थे । प्रारंभ में नवाब अब्दुल लतीफ ने 1963 में 'महमदन् लिटररी सोसाइटी' की स्थापना की। इस संस्था द्वारा मुस्लिमों में अंग्रेजी शिक्षा प्रसार करने का प्रयत्न किया । साथ में हिन्दू मुस्लिमों के बीच साम रस्य लाने का भी प्रयत्न किया । इस कोशिश को सर् सैयद अहमदखान ने आंदोलन का स्वरूप दिया । 1817 दिल्ली में जन्में अहमदखान ब्रिटिश इंडिया कंपनी में न्यायांग अधिकारी के रूप में नियुक्त हुए । वे समझते थे कि - मुस्लिम लोग अंग्रेजी शिक्षा से वंचित होकर अपने आर्थिक, सामाजिक अवकाश खो चुके हैं । इसलिए इनकी आशा थी कि अंग्रेजी शिक्षा पाकर मुस्लिमों को सरकार में योग्य प्रातिनिध्य मिले।

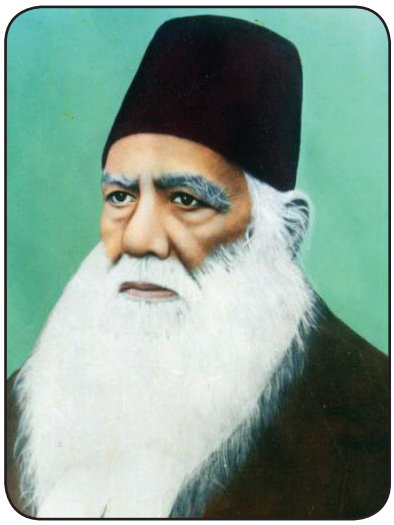

सर् सैयद् अहमद्खान

©KTBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

इस तरह वे एक समाज सुधारक बनके, पर्दा पद्धती, बहु पत्नित्व और विवाह विच्छेदन पद्धती का विरोध किया । अंग्रेजी के वैज्ञानिक, साहित्यिक कृतियों का उर्दू में भाषांतर करने के लिए 'ट्रान्स्लेशन सोसाइटी' प्रारंभ किया । बाद में इसका नाम 'सैंटिफिक सोसाइटी' हुआ। मुस्लिमों में वैज्ञानिक आलोचनाओं का प्रचार करने के लिए 'अलिघर इन्स्टीट्यूट गेजेट' नाम का पत्रिका आरंभ किया । यह पत्रिका अंग्रेजी तथा उर्दू दोनों भाषाओं में प्रकट होती थी। सर्. सैयद अहमदखान ने 1875 में 'महमदन् आंग्लो ओरिएंटल् कालेज' प्रारंभ किया। यही संस्था 1920 में 'अलिघर मुस्लिम विद्यालय' हुआ ।

श्री नारायणगुरु :

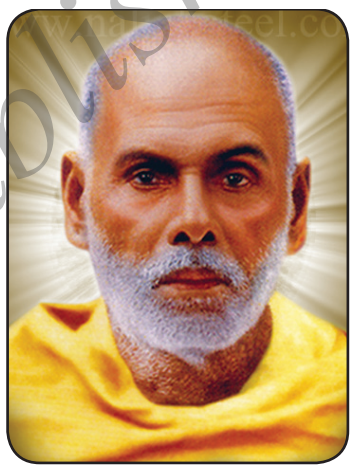

श्री नारायणगुरु

श्री नारायणगुरु एक प्रसिद्ध संत तथा समाज सुधारक थे। इनका जन्म 1854 में तिरुवांकूर के एलव समुदाय के परिवार में हुआ । 'श्री नारायण धर्म परिप्रालना योगम्' नाम का संस्था की स्थापना 1903 में करके, उसके द्वारा केरल का एलव जनांग के सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक अभिवृद्धि के लिए प्रयत्न किया । जाति पद्धति, प्राणि-बली का विरोध किया । संस्कृत स्कूल आरंभ करके उसमें सभी लोगों को प्रवेश दिया। उन्होंने लगभग तीस देवालयों का निर्माण करके, केरल के अछूतों सहित सभी लोगों को प्रवेश करने दिया । उनकी आशा थी कि - देवालयों में सभी मत धर्मों के ग्रंथों का ग्रंथालय हो। उन्होंने कहा कि - ''भगवान एक है, धर्म एक है और जाती एक है।'' इसमें उनकी चाहत व्यक्त होता है । हम देख सकते हैं कि इनका प्रभाव कर्नाटक पर भी हुआ है । श्री नारायणगुरु की मृत्यु 1928 में हुआ ।

कार्य कलाप :

श्री नारायण गुरु और तमिलनाडु में 1920 वी शताब्दी में आत्मगौरव आंदोलन आरंभ किए पेरियार के बारे में ज्यादा जानकारी लीजिए ।

©KTBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

महिला समाज सुधारक

मेडम् एच.पी.ब्लावटस्की, एनिबेसेंट, सावित्रीबाई फुले, ताराबाई शिंधे, पंडित रमाबाई आदी भारत के प्रमुख महिला समाज सुधारक थीं ।

सावित्रीबाई फुले

सावित्रिबाई फुले

सावित्रीबाई फुले भारत का प्रसिद्ध समाज सुधारक, शैक्षणिक सुधारक तथा कवयित्री थी । अपने पति ज्योतिबा फुले के साथ मिलकर पूना में लडकियों के लिए स्कूल खोलकर, खुद शिक्षिका बनके काम किया । बाल विधवाओं के लिए पुनर्वसती केंद्र खोलकर, शिशुहत्या प्रकरणों का अंत करने के लिए प्रयत्न किया । जाति पद्धती तथा लिंग - भेद के विरुद्ध भी संघर्ष किया। इसके लिए उन्हें समाज का विरोध झेलना पडा ।

पति ज्योतिबा फुले सामाजिक आंदोलनों में कंधे से कंधा मिलाकर काम किया । ज्योतिबा की मृत्यु के बाद 'सत्य शोधक समाज' को आगे बढाया। प्लेग महामारी रोग के शिकार हुए लोगों की सेवा अपने पुत्र के साथ करते समय वे उसी रोग के शिकार हुई ।

ताराबाई शिंधे

ताराबाई शिंधे

ताराबाई शिंधे महाराष्ट्र की समाज के विरुद्ध संघर्ष करनेवाली ज्योतिबा फुले से स्थापित 'सत्यशोधक समाज' का सक्रिय सदस्य बनकर सामाजिक संघर्ष का काम करने लगी। बाल विधवाओं की रक्षा, उनका पुनर्विवाह को प्रोत्साहन दिया। अपनी कृति 'स्त्री पुरुष तुलना' में महिला शोषण के बारे में उग्र प्रतिभटन व्यक्त किया है ।

©KTBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पंडित रमाबाई

पंडित रमाबाई

पंडित रमाबाई भारत की प्रसिद्ध ईसाई समाज सुधारक थी । इनका जन्म पश्चिमघाट का गंगामूल में हुआ था । माता लक्ष्मीबाई, पिता अनंतशास्त्री डोग्री थे । उस काल का सामाजिक परिस्थिति के विरुद्ध शिक्षा पाई । इंग्लेंड में पढते वक्त ईसाई धर्म स्वीकार किया । भारतीय महिला उद्धार के लिए 1889 में 'मुक्ति मिशन' संस्था स्थापित किया । यह संस्था विधवा, अनाथ तथा पियक्कडों को जीवनोपाय का काम देते हुए, आज भी कार्यशील है ।

I खाली स्थानों को सूक्त शब्द से भरिए ।

1. संवाद कौमुदी पत्रिका का आरंभ ..... ने किया ।
2. गुलामगिरी कृति की रचयिता ..... ।
3. लाहोर में दयानंद आंग्लों वेदिक स्कूल प्रारंभ करनेवाले ..... ।
4. महिलाओं की उद्धार के लिए मुक्तिमिशन संस्था की स्थापना ..... ने की।

II. नीचे प्रश्नों का उत्तर एक वाक्य में लिखिए ।

1 'भारत का नवोदय पितामह' किसे कहते हैं ।
2 महादेव गोविंद रानडे कौन है ?
3 सत्यशोधक समाज का स्थापक कौन है?
4 'उठो! जागो! लक्ष्य तक रुको मत' यह किसकी पुकार थी ?
5 डॉ. एनिबेसेंट कौन है ?
6 अलिघर आंदोलन के नेता कौन थे?
7 श्री नारायण गुरु ने किस संस्था की स्थापना की?
8 'स्त्री -पुरुष तुलना' कृति की लेखिका कौन है?
9 भारत का प्रसिद्ध ईसाई समाज सुधारक कौन है?

©KTBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

III. **समूह में चर्चा करके उत्तर दीजिए ।**

1 राममोहन राय के सामाजिक और धार्मिक सुधार के क्रमों को बताइए ।

2. समाज सुधार में ज्योतिबा फुले का क्या पात्र था?

3. थियासफिकल सोसाइटी के उद्देश क्या थे?

4. मुस्लिम समुदाय सुधारने में सैयद् अहमदखान का क्या पात्र था?

5. पिछले समुदायों को सुधार करने में नारायण गुरु ने कौन-सा क्रम किया?

6. महिला सुधार करने के लिए रमाबाई ने क्या किया ?

IV **नीचे के 'ए' और 'बी' सूची के विषयों को जोडकर लिखिए ।**

ए	बी
स्वामी विवाकेनंद	अलिघर आंदोलन
स्वामी दयानंद सरस्वती	सत्यशोधक समाज
सैयद् अहमदखान	थियसाफिकल सोसाइटी
ज्योतिबा फुले	रामकृष्ण मिशन
एनिबेसेंट	आर्यसमाज

V **चर्चा कीजिए ।**

''स्त्रीयों का उद्धार हमारा राष्ट्र का उद्धार'' स्वामी विवेकानंद की यह बात क्या आज भी प्रस्तुत है ? समूह में चर्चा कीजिए ।

कार्यकलाप :

एम. जी. रानडे, ज्योतिबा फुले, राजाराम मोहनराय, स्वामी विवेकानंद, स्वामी दयानंद सरस्वती, सर्. सैयद अहमदखान और श्री नारायण गुरु इनकी जीवनी पढिए ।

☆ ☆ ☆

©KTBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पाठ 5 स्वातंत्र्य संग्राम (1857)

पाठ परिचय

भारतीय अपने स्वातंत्र्य के लिए कई संघर्ष किए । यह भारतीय इतिहास में एक मील का पत्थर है । भारत में पुर्तगाली, डच्च, फ्रांसिसी तथा अंग्रेज अपने व्यापारी केंद्र स्थापित किए । भारतीयों का निरंतर शोषण किया । उनके आक्रमणकारी नीति, अन्याय, आर्थिक शोषण के विरुद्ध संग्राम करने सिद्ध हो गए । अंग्रेजों को भारत से बाहर निकालने का संकल्प किया । स्वातंत्र्य संग्राम के लिए सिद्ध हो गए । इस संग्राम के विविध स्तरों का यहाँ विवरण दिया है।

सामर्थ्य

1. अंग्रेजों के विरुद्ध हुए प्रारंभिक संग्राम के बारे में जानना ।
2. 1857 भारत का प्रथम स्वातंत्र्य संग्राम के कारणीभूत अंशों को समझना ।
3. प्रथम स्वातंत्र्य संग्राम में भाग लिए प्रमुख नायकों का संघर्ष को स्मरण करना ।
4. 19 वी शताब्दी में राष्ट्रीयता विकास के मुख्य कारण जानना ।
5. मंदगामी, तीव्रगामी तथा क्रांतिकारियों का तात्विक योचना, नीति आदी को समझना ।
6. अंग्रेजों के विरुद्ध गांधीजी के अहिंसा तथा सत्याग्रह नीति की प्रशंसा करते हुए, उस पर गर्व करना ।
7. गांधीजी के नायकत्व, धैर्य, सत्य, सरलता, मानवीयता तथा विनय आदी गुणों का प्रशंसा करना ।

©KTBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अंग्रेजों के विरुद्ध हुए आरंभिक विरोध

अंग्रेजों का प्राबल्य के विरुद्ध भारतीय विरोध करने लगे । बंगाल का नवाब मीरजाफर अंग्रेजों की माँग पूरा करने में असफल हुआ तो उसे गद्दी से बाहर कर दिया । उसका दामाद मीरकासिम को लालच दिखाकर, अधिकार देकर द्रोह किया । इसके अलावा सा.श. 1767 से 1799 तक आंग्लो मैसूर युद्ध, सा.श. 1775 से 11818 तक आंग्लों - मराठा युद्ध हुए ।

अंग्रेज सिक्ख, अफगानी, नेपाली, बर्मीयों के साथ युद्ध करके भारतीय उपखंड पर अपना राजकीय प्रभुत्व स्थापित किया । कर्नाटक में भी ऐसे कई संघर्ष हुए ।

सा.श. 1800 में दोंडिय वाघ ने अंग्रेजों का विरोध में दंगा किया । लेकिन अंग्रेज मराठा और निजाम की सहायता से वाघ को बंदी बना दिया । बाद में अर्थर् वेल्लेस्ली ने उसे कोनगन् में मार डाला । सा.श. 1819 में कोप्पल का जमींदार वीरप्पा ने निजाम के विरोध में विद्रोह किया । लेकिन अंग्रेज इसका भी अंत किया ।

सा.श. 1824 में विजयपुर जिला का सिंदगी में दिवाकर दीक्षित और बालाजी दोनों अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह करके, खुद कर संग्रह किया । लेकिन अंग्रेज इन्हें जेल भेज दिया । सा.श. 1824-1830 में बेलगावी जिला कित्तूर में अंग्रेजों के विरुद्ध रानी चेन्नम्मा तथा उसका निष्ठावान सेवक संगोल्ली रायण्ण वीरता से युद्ध करके वीर-स्वर्ग सिधारे ।

इसके साथ बादामी, बिदनूर का दंगा और कोडगु संघर्ष मुख्य रूप से हुए । लेकिन अंग्रेज आसानी से भारतीयों का विद्रोह दमन करके, अपना स्थान स्थिर कर लिया ।

वहाँ हुए विद्रोह की घटनाएँ भारत स्वातंत्र्य के सशस्त्र विद्रोह माने जाते हैं । ऐसे अनेक घटनाएँ भारत का प्रथम स्वातंत्र्य संग्राम का शुभारंभ किए ।

भारत का प्रथम स्वातंत्र्य संग्राम (सा.श. 1857-58)

आधुनिक भारत के इतिहास में 1857 एक प्रमुख ऐतिहासिक साल है । अंग्रेज सा.श. 1857 ऐतिहासिक घटना को सिर्फ 'सिपाहियों का दंगा' समझा तो भारतीय देशभक्तो ने इसे भारत का 'प्रथम स्वातंत्र्य संग्राम' कहा । मूल रूप में यह अंग्रेज साम्राज्यशाही के विरुद्ध का महा संघर्ष था । सिपाही और नागरिक दोनों मिलके साम्राज्यशाही अंदाज को उखाडकर फेंकना चाहते थे ।

©KTBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

कारण

अंग्रेजों के दीर्घ काल शासन से भारत की अर्थव्यवस्था कमजोर हो गई थी । जनता तीव्र संकष्ट में थे । किसान भारी लगान के कारण निर्बल हो गए थे । हस्तकारी कला नाश होने लगा था । पारंपरिक उद्योग अपना अस्तित्व खोकर, लोग कंगाल हो गए थे । इसलिए अंग्रेजों के विरुद्ध संग्राम के लिए तैयार हो गए । इस संग्राम के प्रेरक अंशों को राजकीय, धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक, शासनात्मक तथा सैनिकात्मक कारण के रूप में विभाजित कर सकते हैं ।

1. राजकीय कारण

लार्ड वेल्लेस्ली का सहायक सेना पद्धती, डालहौसी के 'दत्तक पुत्र को हक नहीं' आदी नीतियों से कई राजा तथा नवाब पदच्युत हो गए थे । सातारा, जयपुर, संबलपुर, उदयपुर, झांसी अवध आदी प्रदेश डालहौसी के नीति के अंदर अंग्रेजों के वश में आ गए । इसके अलावा कई राजाओं के विश्रांति वेतन रुकवा गया । राजाओं के खिताब रद्द किए गए ।

2. शासनात्मक कारण

अंग्रेज अपना प्रशासन व्यवस्था इस तरह रूपित किया था कि सभी नागरिक और सेना के उच्च पद युरोपियनों को ही मिले । शासन में मध्यवर्तियों का पात्र प्रमुख था । कानून के शासन से सामाजिक स्तर नीचे गिरता गया । पर्शियन भाषा के बदले में अंग्रेजी न्यायालय की भाषा होने के कारण सभी लोगों को यह अच्छा नहीं लगा ।

बहदुर षा

3. आर्थिक कारण

अंग्रेज अपने फायदे के लिए भारत के आर्थिक संपन्मूल और संपत्ती लूटने के लिए अपना राजकीय अधिकार इस्तेमाल किया । अंग्रेज व्यापारियों के हितासक्ति से गृहोद्योग तथा स्थानीय उद्योग बंद हो गए । भू-लगान नीति अत्यंत शोषणात्मक था । ताल्लूकदार तथा जमींदारों का स्थान-मान और संपत्ती का मूल सब छीन लिया । बहुत बडे पैमाने पर संपत्ती का बहाव उनकी तरफ हो

©KTBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

गया । व्यवस्था वाणिज्यीकरण से किसानों की आर्थिक शक्ति क्षीण हो गई । भयंकर सूखा पडने से लाखों लोग मर गए । इन सब कारणों से भारत गरीब हो गया ।

सांप्रदायिक बुनाई

4 सामाजिक और धार्मिक कारण

कई सामाजिक तथा धार्मिक अंश भी दंगे के कारण बने । अंग्रेज भारतीयों को 'असंस्कृत, अनागरीक' कहा । भारतीयों को 'सुअर' 'काला आदमी' आदी शब्दों से संबोधन करते थे । युरोपियनों के होटल तथा क्लबों में भारतीयों को प्रवेश नहीं था । वहाँ 'कुत्तों का और भारतीयों का प्रवेश मना है' फलक लगाया रहता था । हिन्दुओं ने सोचा कि सति पद्धति, बालविवाह निषेध, विधवा विवाह आदी को प्रोत्साहन देकर अंग्रेज अपने सामाजिक व्यवस्था में हस्तक्षेप कर रहे हैं । इसके अलावा रेल का आगमन कुछ वर्ग के भारतीयों को अच्छा नहीं लगा । सभी वर्गों के लोगों का एक ही बोगी में प्रवास करना उच्च वर्ग के भारतीयों का कारण बना ।

5. सेनिक कारण

भारतीय सैनिकों में असंतोष था । सैनिकों को पारंपरिक धार्मिक चिन्ह तथा पेटा धारणा करना मना किया गया था । - भारतीय सैनिकों को कम वेतन मिलता था । उन्हें पदोन्नती का मौका नहीं था । अंग्रेज सैनिकों को उत्तम वेतन तथा कई सहूलियत थे । भारतीय सैनिकों को कार्यनिमित्त अतिरिक्त वेतन के बिना अत्यंत दूर प्रदेश भेजते थे । लार्ड क्यानिंग का 'सामान्य सेना सेवा कानून' के प्रकार सभी सैनिक अंग्रेजों के आदेशानुसार जहाँ कहीं भी जाना था । ये सब भारतीय सैनिकों को असहनीय हो गया ।

©KTBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

6. तत्काल कारण

मंगलपांडे

जनसमूह के क्लेश को समय परिपक्व था । उनके अंदर के अंगार को बाहर निकालने के लिए एक चिंगारी की जरूरत थी । 1857 में एक नया नमूने का बंदूक (एन्फील्ड रैफल) सैनिकों को देना 'सिपाही दंगा' का कारण बना । इन बंदूकों को तोटा (कार्टरिड्ज) भरने से पहले उस पर ढका कागज को मुँह से निकालना था । 'इस समाचार लोगों में जंगल की आग की तरह फैल गई । यह हिन्दू तथा मुस्लिम सिपाहियों के धार्मिक भावना को धक्का दिया। जो सैनिक इस बंदूक के आयोग का इनकार किया उसे अंग्रेजों की कठिन शिक्षा मिली ।

दंगे की गति

मीरत में दंगा 1857 मई 10 को प्रारंभ हुआ। बाद में उत्तर भारत के सभी प्रदेशों में फैल गया । मीरत में दंगा फैलने से पहले ही ब्यारकपुर (बंगाल) का भारतीय सिपाही मंगल पांडे ने चर्बी लगाया हुआ बंदूक उपयोग करने के लिए मना करके, अंग्रेज अधिकारी को गोली मारकर हत्या किया था । इसलिए वह भी मारा गया । तब मीरत में जो अधिकारी सामने आया उसे मार दिया गया । 'मारो, फिरंगी को' (युरोपियनों को मारो) नारे लगाते हुए, लोग दिल्ली की ओर चल पडे । दिल्ली में सिपाहियों ने बूढा, निर्बल मुगल 'राजा दूसरा बहादुर षा को भारत का चक्रवर्ती घोषित किया ।

फिरंगी : फिरंगी पद पर्शियन मूल का है । इसे उर्दू और हिन्दी में विदेशियों को घृणा के रूप में सूचित करने के लिए उपयोग किया जाता है ।

©KTBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

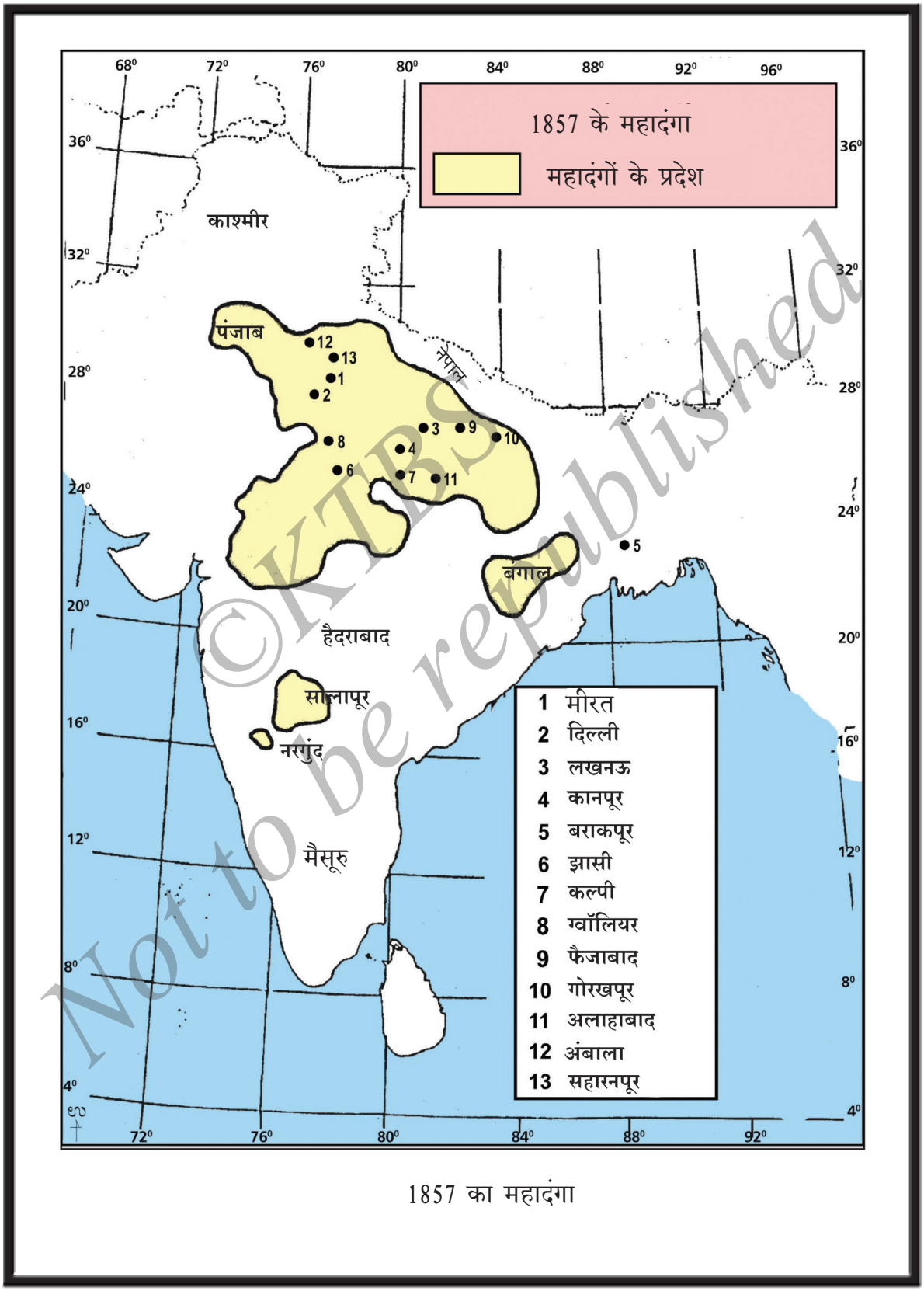

1857 का महादंगा

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

कुछ ही समय में दंगा व्यापक रूप से फैल गया । दिल्ली, कानपुर, लखनौ, बरेली, झांसी तथा बिहार का आरा आदी प्रमुख क्रांतिकारी केंद्र थे ।

दिल्ली में सेनापती बख्ताखान, कानपुर में नानासाहेब और तात्या टोपी, लखनौ में बेगम् हज्रत महल, झांसी में लक्ष्मीबाई तथा बिहार में कुंवर सिंग के नेतृत्व में दंगे हुए । अंग्रेज दंगाओं को एक-एक करके दमन कर दिया । दंगा सिर्फ उत्तर भारत में ही नहीं महाराष्ट्र, कर्नाटक, आंध्रप्रदेश, केरल, तमिलनाडु, गोवा और पांडिचेरी में भी हुआ । कर्नाटक में मुंडरगी भीमराव, सुरपुर के वेंकटप्प नायक, नरगुंद के बाबासाहेब प्रमुख नायक थे । भारत के उत्तर, दक्षिण सभी जगह दंगे होने पर भी अंग्रेज अल्प समय में उनका दमन किया ।

झांसी रानी लक्ष्मीबाई

कार्य कलाप : झांसी रानी लक्ष्मीबाई अंग्रेजों का सामना किस तरह किया । जानकारी लीजए ।

कुंवर सिंग

नानासाहेब

©KTBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

परिणाम

यह संग्राम विफल हुआ फिर भी इसका दीर्घकालीन परिणाम हुआ । इस संग्राम से ईस्ट इंडिया कंपनी का शासन खत्म हो गया । भारत का प्रशासन ब्रिटिश रानी के हाथ में आया । सा.श. 1858 में ब्रिटन की रानी विक्टोरिया ने एक 'घोषणा' जारी किया । इसमें भारतीयों के धार्मिक आजादी के बीच नहीं आने का दावा किया था ।

सा.श. 1857-58 का संग्राम आगे चलकर आधुनिक राष्ट्रीय आंदोलन का उदय के लिए मार्ग प्रशस्त किया । यह आगे का स्वातंत्रांदोलन के लिए निरंतर स्फूर्ति का मूल बन गया ।

1857 का महादंगा का स्वरूप

अंग्रेज इतिहासकारों ने 1857 का भारतीय संघर्ष को सिर्फ सिपाहियों का दंगा कहा । लेकिन भारत का राष्ट्रीय इतिहासकार इसे जनता का महादंगा तथा 'भारत का प्रथम स्वातंत्र संग्राम' बताया ।

इस संग्राम को 'देश की आजादी के लिए किया प्रथम युद्ध बतानेवालों में विनायक दामोदर सावर्कर प्रथम है । पट्टाभि सीतारामय्य ने भी इसे भारत का प्रथम आजादी का संग्राम बताया। वह देश के ज्यादा तर समुदाय मिलके किया गया संग्राम था ।

सा.श. 1857 का संग्राम भारत के इतिहास में राजकीय प्रज्ञा जागृत किया । इसके फलस्वरूप साम्राज्यशाही विरोधी संघर्ष विविध रूपों में पैदा हो गए । इस संग्राम में हुतात्म लोग जल्द ही देश में प्रसिद्ध हो गए । उनके त्याग, बलिदानों को हमें निरंतर याद करना है ।

I नीचे के प्रश्नों का एक वाक्य में उत्तर दीजिए ।

1 प्रथम स्वातंत्र संग्राम का तत्काल कारण क्या था ?

2 मंगल पांडे कौन था?

3 प्रथम स्वातंत्र संग्राम का कोई एक परिणाम बताइए ।

4 '1857 का संघर्ष को भारत का प्रथम स्वातंत्र संग्राम' ऐसे पहले किसने कहा?

5 प्रथम स्वातंत्र संग्राम में कौन मोगल राजा ने भाग लिया?

6 प्रथम स्वांत्र संग्राम में संघर्ष किए महिलाओं के नाम बताईए ।

II समूह में चर्चा करके उत्तर दीजिए ।

1 भारत का प्रथम स्वातंत्र संग्राम के कारणों की सूची बनाइए ।

2 भारत का प्रथम स्वातंत्र संग्राम में भाग लिए कर्नाटक के नायकों का नाम बताइए।

©KTBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

कार्य कलाप

मंगल पांडे, झांसी लक्ष्मीबाई, तात्या टोपे, नानासाहेब, बेगम हजरत महल, कुंवरसिंग, मुंडरगी भीमराव आदी क्रांतिकारियों का जीवन कथन पढिए ।

स्वातंत्र आंदोलन (1885-1919)

अंग्रेजों के शोषणात्मक नीतियों में से 19वी शताब्दी के उत्तरार्ध में राष्ट्रीयता का अंकुर हुआ। अंग्रेजी शिक्षा पाए हुए शिक्षित लोगों को अंग्रेजी शासन का सही उद्देश मालूम हो गया। किसान, आदिवासी और कई वर्ग अंग्रेजों से तंग आकर, उनके विरुद्ध दंगा करने की ताक में थे।

राष्ट्रीयता का विकास

हमारा भारत बहुमुखी या विविध संस्कृतियों का देश है । हमारा सुदीर्घ और चारित्रिक परंपरा है । ये 19वी शताब्दी के उत्तरार्ध में राष्ट्रीयता का विकास के लिए भद्र नींव डाले । राष्ट्रीयता का मतलब यह है कि - एक निर्दिष्ट भौगोलिक प्रदेश के लोगों के मन में ''हम सब एक हैं'' भावना आकर एकता पैदा करना ।

सा.श. 1857 का प्रथम स्वातंत्र संग्राम में भारतीयों का संघर्ष अलग-अलग हुए, एकता नहीं था । इसलिए सही संयोजन के बिना संघर्ष विफल हो गया । इससे शिक्षित भारतीय संघठन का महत्व जान गए । तब यह राष्ट्रीय आंदोलन बन गया । राष्ट्रीयता का विकास के लिए कुछ अंशों ने प्रेरणा दी । वे इस प्रकार हैं ।

- **पश्चिमी शिक्षा तथा आधुनिक ज्ञान विज्ञान का परिचय:** अंग्रेजी शिक्षा पानेवाले भारतीय युरोपीय चिंतनशील कृतियों को पढकर राष्ट्रीय राजकीय मनोभाव को बढावा दिया। युरोप के परिकल्पना स्वातंत्र, समानता, भाईचारा आदी से राजकीय में प्रेरणा मिली । इससे आजादी की आशा को स्फूर्ति मिली । ''अंग्रेजी शिक्षा पाए लोग अपना साथ देंगे'' - अंग्रेजों का यह भरोसा झूठा साबित हुआ ।

©KTBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

• **एक रूप शासनात्मक व्यवस्था :** अंग्रेजों ने भारत में एकरूप शासन व्यवस्था लाए। इससे एक ही तरह के नियमों में बंधे भारतीयों में 'हम सब समान हैं' भावना आई । उसी तरह अंग्रेजों से जारी किए जन विरोधी कानूनों का विरोध करने लगे । यह भारतीयों में राष्ट्रीय भावना पैदा होने में सहायक बना ।

• **आर्थिक शोषण :** अंग्रेजों के आर्थिक नीति से भारतीयों के व्यापार, कृषी, उद्योगों का अवनति हुई । जमीन बिकने का वस्तु बन गया । दादाभाई नवरोजी ने अपने 'संपत्ती का रिसाव' में प्रतिपादित किया है कि - आंग्रेज हमें किस तरह लूटे हैं?

• **परंपरा का परिचय :** सर् विलियम जोन्स, एच.टी. कोल ब्रूक, म्याक्समुल्लर, कनिंगहैम आदी विदेशी विद्वान भारतीय चारित्रिक परंपरा को अपने अध्ययन द्वारा भारतीयों को परिचित कराया । इससे सबको विश्वास हो गया कि भारतीय परंपरा ग्रीक परंपरा से कम नहीं है। इस तरह राष्ट्रीयता का जड ज्ञान के रूप में और गहराई में उतरने लगा ।

• **सामाजिक, धार्मिक आंदोलन :** 19वी शताब्दी के भारतीय समाज सुधारक राजाराम मोहनराय, ईश्वरचंद्र विद्यासागर, दयानंद सरस्वती, विवेकानंद आदी लोगों ने भारतीय शोषित समुदायों को शिक्षा का, महत्व समझाया । दयानंदजी ने स्वराज्य तथा स्वदेशी विचारों को और विवेकानंदजी ने निर्जीव समुदायों में चेतना पैदा करने का काम किया । यह राष्ट्रीय विकास के लिए सहायक बना । पढे लिखे भारतीयों को क्रियाशील बनाया ।

• **भारत का प्रथम स्वातंत्र संग्राम की स्फूर्ति :** इस संग्राम से भारतीय ज्यादा संगठित होकर काम करना सीखा । इसके अलावा इस संघर्ष में हुतात्म हुए मंगल पांडे, लक्ष्मी बाई, हजरत महल आदी नायकों से अगले पीढी को स्फूर्ति मिली ।

• **जनांगीय भेदभाव :** अंग्रेज अपने आपको श्रेष्ठ मानकर भारतीयों को अनागरिक समझते थे । प्रशासन में उच्चतम पद सिर्फ अंग्रेजों के थे ।

इससे एक ही तरह के नियमों में बंधे हुए भारतीयों में ''हम सब एक हैं'' भावना आ गई। अंग्रेजों के जन विरोधी कानूनों को सब ने विरोध किया । इस तरह भारतीयों में एकता का भाव पैदा करने में सहायक हुआ ।

©KTBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

भारत राष्ट्रीय कांग्रेस (1885)

भारत राष्ट्रीय कांग्रेस को निवृत्त नागरिक सेवाधिकारी अल्लन आक्टवियन ह्यूम से 1885 में स्थापित हुआ । यह उनका सपना था । उमेशचंद्र ब्यानर्जी कांग्रेस के अध्यक्ष थे । कांग्रेस का पहला अधिवेशन में 72 प्रतिनिधियों ने भाग लिया था । उनमें ज्यादातर वकील, पत्रकर्ता और समाज के प्रतिष्ठित वर्ग के थे । वास्तव में कांग्रेस राष्ट्रीयांदोलन को प्रारंभ करने का पहला मंच था ।

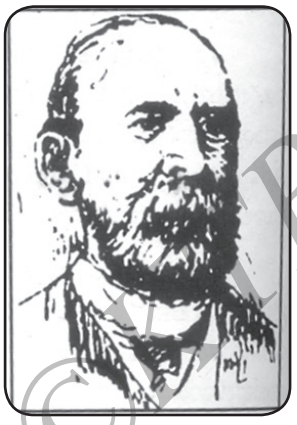

ए.ओ. ह्यूम
कांग्रेस का स्थापक

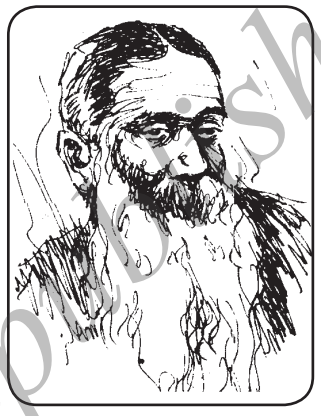

उमेशचंद्र ब्यानर्जी
प्रथम अधिवेशन का अध्यक्ष

.....

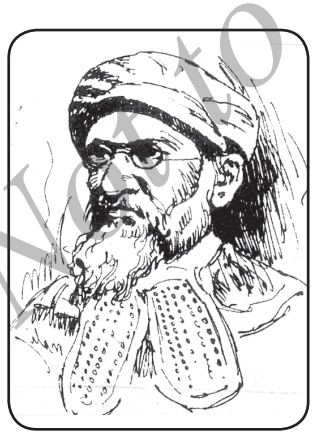

सैयद बद्रुद्धीन त्याब्जि

फिरोज षा मेहता

दादाभाई नवरोजी

© CBSE not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के उद्देश :

- देश के विविध भागों के राजकीय कार्यकर्ताओं के बीच स्नेह संबंध रखना ।
- राष्ट्रीय एकता को बढावा देना ।
- लोगों के माँग सरकार के सामने रखकर जनाभिप्राय रूपित करना ।
- प्रांतीयता छोडकर राष्ट्रीयता को अपनाना ।

मंदगामियों का युग (1885-1905)

भारतीय राष्ट्रीय प्रारंभिक नायकों को मंदगामी (सौम्यवादी) कहा गया है । सा.श. 1885-1905 के मध्य काल को मंदगामियों का काल माना गया है । वे संविधानात्मक नीति में विश्वास रखे थे । अंग्रेज शासन पर निष्ठा रखनेवाले लोगों ने प्रार्थना, माँग और प्रतिभटना (विरोध) नीति का अनुसरण किया । राजकीय, सामाजि, आर्थिक क्षेत्रों में सुधार लाने के लिए अंग्रेजों का मन बदलाना चाहा । दादाभाई नवरोजी, सुरेंद्रनाथ ब्यानर्जी, गोपालकृष्ण गोखले, महादेव गोविंद रानडे आदी मंदगामी नायक थे ।

मंदगामी नायकों के संघर्ष फलस्वरूप भारतीयों को शासन सभाओं में प्रवेश करना साध्य हुआ। मंदगामियों के प्रयत्न से यह मालूम हो गया कि भारत की गरीबी का कारण अंग्रेज हैं । भारतीय राजकीय संघर्ष के लिए प्रशिक्षण लेकर अंग्रेजों के विरुद्ध पूरे राष्ट्र में संघर्ष प्रारंभ किया।

दादाभाई नवरोजी

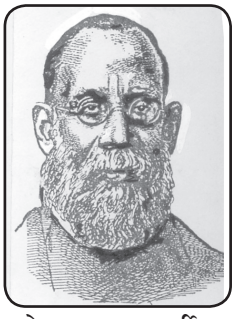
सुरेन्द्रनाथ ब्यानर्जी

गोपालकृष्ण गोखले

©KTBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

मंदगामियों के माँग

वाक् स्वातंत्र, मुद्रण स्वातंत्र, कार्यांग से न्यायांग को अलग करना, सेनाबल के खर्च में कमी, प्राथमिक-प्रौढ तथा तांत्रिक शिक्षा का अनुष्ठान, शश्त्रास्त्र निषेध कानून रद्द करना, बैंकिंग, सिंचाई, वैद्यकीय तथा स्वास्थ्य सुविधा, नमक पर का कर रद्द करना, भारत और इंग्लैंड में एक ही समय पर आय.सी.एस. परीक्षा चलाना, केंद्र तथा प्रांतीय शासन सभाओं में भारतीयों को प्रातिनिध्य, उच्चपद पर भारतीयों का नेमकाती आदी ।

तीव्रगामियों का युग (1905-1919)

मंदगामी जनता से दूर ही रहे । उनकी प्रार्थना, माँग आदी नीतियों को तीव्रवादियों ने भीख माँगने की नीती (पालिसी ऑफ मेंडिकेन्सी) बताया । इन नीतियों से युवा वर्ग आकर्षित नहीं हुआ। इनके इंतजार करके देखने की रीति को प्रश्न करनेवाले नए नायकों का एक समूह कांग्रेस में जन्म लिया । इन्हीं को तीव्रवादी कहते हैं । लाला लजपतराय, बाल गंगाधर तिलक तथा बिपिनचंद्रपाल तीव्रगामी समूह के नायक थे । ये लाल-बाल-पाल नाम से जनप्रिय हो गए। सा.श. 1905 - 1919 के कालावधी को तीव्रगामी राजकीय काल माना जाता है ।

लाला लजपतराय (लाल)

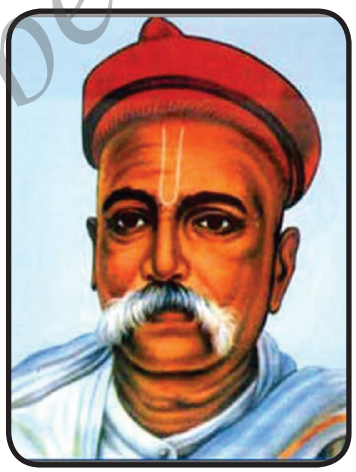

बाल गंगाधर तिलक (बाल)

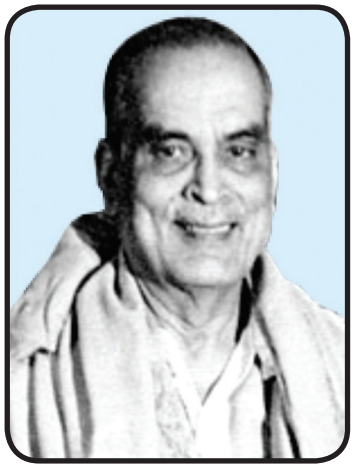

बिपिनचंद्रपाल (पाल)

©KTBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

तीव्रगामियों का विकास के कारण

- भारतीयों को उच्चपद न मिलना ।
- 1905 में लार्ड कर्जन ने बंगाल का विभाजन करके मतीय राजकारण करने का प्रयत्न करना।
- 1905 में रूस देश को छोटा देश जपान ने हराया । इस घटना से उनमें ऐसा विश्वास पैदा हो गया कि युरोपियनों को एशियन भी हरा सकते हैं ।
- ऐर्लेंड, रूस, चीना, टर्की, इजिप्त आदि राष्ट्रों में होनेवाले आंदोलन से प्रेरित होना।

बाल गंगाधर तिलक एक अप्रतिम देशभक्त थे । ''स्वराज्य मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है; मैं उसे पाकर ही रहूँगा ।'' इस घोषणा में आजादी का अटूट इच्छा थी । भारतीयों में एकता लाने के लिए तिलक ने गणेश तथा शिवाजी उत्सवों का परिचय कराया । 'मराठ' (अंग्रेजी), केसरी (मराठी) पत्रिकाएँ शुरु की । बिपिनचंद्रपाल ने न्यू इंडिया और अरविंद घोष ने 'वंदे मातरम्' पत्रिकाएँ आरंभ किया । लाला लजपतराय तो 'पंजाब के सिंह' नाम से मशहूर हुए । उन्होंने बताया कि ''स्वराज्य को हम हक के रूप में पाएँगे; भीख के रूप में हीं'' । बंगाल में बिपिनचंद्रपाल ने 'सामूहिक प्रतिभटना' का संघठन किया । तीव्रवाद का एक और प्रतिनिधि अरविंद घोष थे । विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार, स्वदेशी वस्तुओं का उपयोग, राष्ट्रीय स्कूलों को प्रारंभ करना आदि इनके विचार थे ।

बंगाल का विभाजन (1905)

तीव्रवादियों का राष्ट्रीय संघर्ष को प्रेरित करनेवाला प्रमुख घटना सा.श. 1905 का बंगाल विभाजन था । बंगाल में राष्ट्रीयता की लहर तीव्र होते हुए देखकर अंग्रेजी आतंकित हुए । इसलिए लार्ड कर्जन ने मतीय आधार पर बंगाल का विभाजन करके राष्ट्रीय तीव्रता को दमन करने का प्रयत्न किया । इस विभाजन का विरोध करके 1905 अक्तूबर 5 को बंगाल में 'राष्ट्रीय शोक दिन' मनाया गया । रवीन्द्रनाथ टागोर ने 'अमर सोनार बांग्ला' गीत राष्ट्रीय गीत बताया । बंकिमचंद्र का 'वंदे मातरम्' देशप्रेमियों का गीत था । बंगाल की एकता प्रदर्शित करने के लिए हिन्दू-मुस्लिमों ने आपस में रक्षाबंधन किया । जनता की तीव्र विरोध देखकर 1911 में बंगाल विभाजन रद्द करना पडा ।

©KTBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

लार्ड कर्जन

बंकिमचंद्र चटर्जी

मुस्लिम लीग-की स्थापना (1906)

विभाजन करके शासन करने की नीति से अंग्रेज मुस्लिमों को राष्ट्रीय आंदोलन से दूर रखने का प्रयत्न करते रहे । भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना होते ही मुस्लिमों को भी अपना एक संगठन रचना करने के लिए अंग्रेज उन्हें प्रोत्साहित किया । 1906 में एक मुस्लिम नियोग भारत का वाइसराय मिंटो से मिला । अंग्रेज के उकसाने पर सर् आगाखान, ढाका का नवाब सलीमुल्ला आदि मिलकर 1906 में भारतीय लीग को ढाका में (आज का बंग्लादेश की राजधानी) स्थापित किया।

सूरत दरार (1907)

बंगाल विभाजन के बाद तीव्रगामी पूरे देश में विदेशी बहिष्कार आंदोलन शुरु किया । लेकिन मंदगामी उसे सिर्फ बंगाल के लिए सीमित रखना चाहते थे । वे सरकार के साथ सीधा संघर्ष नहीं करना चाहते थे । तीव्रगामी तथा मंदगामियों के बीच का भिन्न विचार तीव्र होकर कांग्रेस में राजकीय विभाजन हुआ । सा.श. 1907 में सूरत के कांग्रेस अधिवेशन में इन दोनों के बीच कांग्रेस दो भागों में बांट गया ।

कांग्रेस में हुए विभाजन के बाद सरकार तीव्रगामियों के विरोध में दमनकारी क्रम किया । उनमें कई लोगों को जेल भेजा गया । कुछ लोगों को तडीपार भी कर लिया । तिलकजी को कालापानी शिक्षा देकर मांडेले (बर्मा) तडीपार कर दिया ।

तीव्रगामियों को राजकीय रूप से निष्क्रिय करने हेतु अंग्रेज मंदगामी और मुस्लिमों को शासकांग में ज्यादा प्रातिनिध्य देकर प्यार दिखाना चाहा । इस दिशा में मिंटो-मार्ले सुधार 1909 में जारी किया गया । इस कानून में मुसलमानों को 'अलग चुनाव क्षेत्र' दिया गया । इस बीच पहला महायुद्ध अचानक आरंभ हुआ (सा.श. 1914) । इससे राष्ट्रीय आंदोलन को नई चेतना मिली। - सा.श. 1916 में लोकमान्य तिलक और एनिबेसेंट ने होमरूल आंदोलन शुरु किया ।

©KLBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

होमरूल

यह ऐरिश होमरुल आंदोलन से प्रेरित था । भारत को स्वयं शासन लाना ही इसका उद्देश था । तिलक और एनिबेसेंट ने 1916 में अलग-अलग होमरूल आंदोलनों को महाराष्ट्र तथा तमिलनाडु में प्रारंभ किया ।

रौलेट कानून (1919)

सा.श. 1917 दिसंबर में न्यायमूर्ति रौलेट् के मार्गदर्शन में एक समिति की रचना हुई । भारत के क्रांतिकारी कार्यों को दमन करना ही इसका उद्देश था । अंत में रौलेट कानून 1919 फरवरी में जारी किया गया । इस कानून के अनुसार शक होने पर किसी व्यक्ति को बिना कारण बताए सरकार उसे बंधित कर सकता था । सूचना के बिना किसी भी प्रदेश का शोध कर सकते थे । बंधित व्यक्ति को वकीलों को निश्चित करने का हक भी नहीं था । इसलिए भारतीयों ने इसे तीव्र रूप से विरोध किया ।

जलियनवालाबाग हत्याकांड (1919)

रौलेट कानून विरोध में गांधीजी का सत्याग्रह शुरु होने से पंजाब के कई भागों में प्रतिभटना कार्य आरंभ हुए । सा.श. 1919 एप्रिल 13 को अमृतसर का स्वर्णमंदिर से थोडी दूरी पर रहे जलियनवाला बाग में एक सभा का आयोजन हुआ था । सभा में अपने नायक डा. किचलू और सत्यपाल के बंधन के विरोध में प्रतिभटन करना था ।

अमृतसर का रक्षापालक जनरल डायर ने प्रतिभटना करनेवाले लोगों पर गोली चलाने का आदेश दिया । उद्यान का एकैक बाहर जाने का मार्ग बन्द किया गया था । जन समूह निरायुध होने के कारण घबरा गए । बहुत सारे लोग मारे गए । सरकारी बयान के प्रकार मारे गए लोग सिर्फ 379 थे । लेकिन वास्तव में बहुत ज्यादा लोग मारे गए थे ।

©KTBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

जलियनवाला बाग हत्याकांड का घोर दृश्य

क्रांतिकारी राष्ट्रीयता

तीव्रवादियों में कुछ लोग सशस्त्र क्रांती करने चले । इन्हें 'क्रांतिकारी राष्ट्रीयवादी' कहते हैं। भारत को पूर्ण रूप से आजाद कराना इनका उद्देश था । क्रांतिकारी राष्ट्रीयवाद का मूल तत्व गहरी देशभक्ति और त्याग मनोभाव था ।

रहस्य संगठन रूपित करनेवाले क्रांतिकारियों में बलवंत फडके पहला क्रांतिकारी थे । दामोदर और बालकृष्ण चापेकर नामक दो भाई इस रहस्य संगठन के जीवनाडी थे । बाद में इन दोनों को फांसी दिया गया ।

विनायक दामोदर सावर्कर, खुदिराम बोस, चंद्रशेखर आजाद और भगतसिंग आदी हमारे देश के प्रमुख क्रांतिकारी थे । स्वतंत्र संग्राम के फांसी पर चढनेवालों में पहला हुतात्म खुदीराम था। (सा.श. 1908) तब वह सिर्फ 19 साल का था ।

© KTBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

खुदिराम बोस

विनायक दामोदर सावर्कर

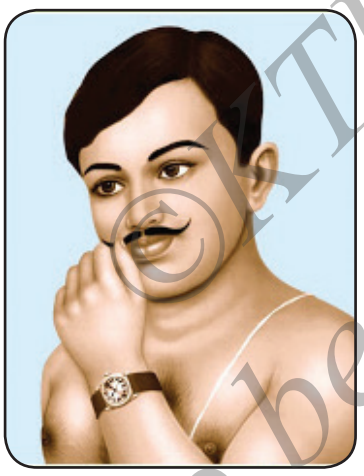

चंद्रशेखर आजाद

भगतसिंग

विनायक दामोदर सावर्कर एक और क्रांतिकारी था । 1899 में वे 'मित्रमेल' नाम का प्रथम गुप्त संगठन स्थापित किया । अंग्रेज सरकार इसे जीवावधि कारावास पर अंदमान जेल भेजा । इसे क्रूर दैहिक चित्रहिंसा दिया गया । अंदमान जेल में भारत सरकार ने उसका स्मारक बनाया है।

चंद्रशेखर आजाद 'हिन्दुस्तान सोसियालिस्ट रिपब्लिकन असोसियेशन' के साथ जुडके काकोरी फितूरी, शासन सभा पर बम गिराना, लाहोर में अंग्रेज अधिकारी स्यांडर्स पर गोली चलाना आदी कई प्रकरणों में शामिल थे ।

आजाद ने अंग्रेज सैनिकों से बचने के लिए एक छोटा पिस्तौल के साथ अकेला संघर्ष किया। जब एक ही गोली बची थी तब वह अपने कान पट्टी पर गोली मारकर खुद को खत्म करके, 'कभी किसीका बंदी नहीं बनेगा' इस बात को सच ठहराया । भगतसिंग, राजगुरु,

©KTBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

सुखदेव, भगवती चरण तथा गयाप्रसाद जैसे अनेक हुतात्म अंग्रेजों के बंधन से भारत को मुक्त कराने के लिए आप को अर्पण किया ।

भगतसिंग ने हिंदुस्तान समाजवादी रिपब्लिकन संगठन से जुडके उसका प्रधान कार्यदर्शी बना । 1929 में भगतसिंग, राजगुरु, सुखदेव ने दिल्ली में केन्द्रिय शासन सभा पर बम गिराया । लाहोर सेन्ट्रल में इन तीनों को फांसी दिया गया । ये 'इंक्विलाब जिन्दाबाद' (क्रांति चिरायु हो) घोषणा करनेवाले प्रथम भारतीय हैं ।

प्रमुख घटनाएँ

भारत राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना	1885
मंदगामियों का काल	1885-1905
तीव्रगामियों का काल	1905-1919
बंगाल का विभाजन	1905
मुस्लिम लीग की स्थापना	1906
सूरत दरार	1907
जलियनवाला बाग हत्याकांड	1919

I **नीचे के प्रश्नों का उत्तर एक वाक्य में उत्तर दीजिए ।**

1 राष्ट्रीयता किसे कहते हैं ?

2 भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थपना कब, किसने किया ?

3 बंगाल का विभाजन कब हुआ ?

4 बाल गंगाधर तिलक के प्रसिद्ध घोषणा क्या था ?

5 भारत मुस्लिम लीग की स्थापना कब हुई ?

6 'लाल, बाल, पाल, नाम से प्रसिद्ध राष्ट्रीय नायक कौन थे ?

7 होम रूल आंदोलनों को किसने आरंभ किया ?

8 जलियनवालाबाग हत्याकांड कब हुआ ? कौन अंग्रेज अधिकारी इसका कारण बना ?

9 किसी एक गुप्त क्रांतिकारी संघ का नाम बताइए ।

10 इंक्विलाब जिंदाबाद घोषणा किसने किया ?

©KTBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

II **समूह में चर्चा करके उत्तर दीजिए ।**

1 भारतीयराष्ट्रीय विकास के कारण बताइए ।

2 भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के उद्देशों की सूची बनाइए ।

3 भारत का स्वातंत्र में क्रांतिकारियों का पात्र क्या है ?

कार्यकलाप

1 दादाभाई नवरोजी और बालगंगाधर तिलक के जीवनी पढिए ।

2 क्रांतिकारियों के भावचित्रों को माहिती के साथ संग्रह करके एक आल्बम् तैयार कीजिए।

3 नीचे लिखे क्रांतिकारियों की जीवनी पढकर, एक लेख लिखकर स्कूल के बुलेटिन बोर्ड में प्रकट कीजिए ।

वासुदेव बलवंत फडके, खुदीराम बोस, चंद्रशेखर आजाद, मेडम कामा ।

©KTBS Not to be republished

3. गांधी युग (1919-1947)

महात्मा गांधी को हम प्यार से 'बापू' कहते हैं । वे भारत के राष्ट्रीयांदोलन का महान नायक थे । वे शोषण, अछूत का निवारण और हिन्दू मुसल्मानों का सामरस्य के लिए अपने आप को समर्पित किए थे । उनके नेतृत्व का यह संघर्ष काल को 'गांधी युग' (सा.श. 1919-1947) कहा गया है ।

1 महात्मा गांधी

अहिंसा, सत्याग्रह नीति गांधीजी के अस्त्र थे । स्वातंत्रांदोलन को जनांदोलन का रूप दिया। सरलता, सत्य तथा विनय उनका सफलता के सूत्र थे ।

आरंभिक जीवन: गांधीजी का जन्म सा.श. 1867 अक्तूबर 2 को गुजरात राज्य का पोरबंदर में हुआ । करमचंद गांधी तथा पुतलीबाई इनके माता - पिता थे ।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

गांधीजी के जीवन पर प्रभाव किए प्रमुख कृतियाँ हैं । भगवद्गीता, जान् रस्किन का 'अंत तक' (unto this last), टालस्टाय का 'तेरा अंगरंग' ही भगवान का राज्य (The kingdom of God is within you), सत्य हरिश्चंद्र नाटक ।

दक्षिण आफ्रिका में गांधीजी

गांधीजी का आरंभिक शिक्षा पोरबंदर में हुआ । उच्च शिक्षा पाने के लिए वे इंग्लेंड गए । ब्रिटेन में कानून पास किए । 1891 में भारत लौटकर राजकोट और मुंबई में वकालत करने लगे। बाद में दादा अब्दुल्ला कंपनी के निमंत्रण पर कानून सलहाकार के रूप में दक्षिण आफ्रिका गए ।

गांधीजी दक्षिण आफ्रिका में भारतीयों की हीन स्थिति देखकर दंग रह गए । 'गोरे' सरकार का जनांगीय नीति का विरोध किया । सत्याग्रह तथा अहिंसा मार्ग से सरकार का जनांगीय नीति की बदलने में सफल हुए ।

सत्याग्रह सिद्धांत संस्कृत के दो शब्दों से हुआ है । सत्य का मतलब वास्तविकता और आग्रह का अर्थ है जोर देना । इस तरह सत्याग्रह का अर्थ होता है - सत्य के लिए हटे रहना।

कार्य कलाप : दक्षिण आफ्रिका में गांधीजी का सत्याग्रह तथा अहिंसात्मक संघर्ष के बारे में ज्यादा जानकारी कीजिए ।

प्रारंभिक राजकीय जीवन

सा.श. 1915 में भारत लौटने के बाद गांधीजी ने अहमदाबाद के पास साबरमती आश्रम (सा.श. 1916) की स्थापना किया । अपना राजकीय गुरु गोपालकृष्ण गोखले के मार्गदर्शन पर पूरे भारत की यात्रा करके लोगों की दयनीय स्थिति देखा । चंपारन तथा खेडा में किसानों की तरफ से संघर्ष किया ।

चंपारन : चंपारन (बिहार) किसान प्लांटरों के विरोध का असमाधान और प्रतिरोध का सुदीर्घ इतिहास है । नीली उगाने के लिए किसानों को प्लांटर जबर्दस्ती करते थे । गांधीजी ने इनके विरुद्ध सा.श. 1917 में चंपारन सत्याग्रह प्रारंभ किया । अंत में किसानों की समस्या का हल हो गया । इस आंदोलन द्वारा बाबू राजेंद्रप्रसाद प्रमुख नायक बने ।

©KTBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

खेडा किसान आंदोलन: खेडा गुजरात राज्य का प्रमुख जिला है । सा.श. 1918 में फसलों का नुकसान होकर किसान आर्थिक रूप से संकष्ट में थे । इसलिए उन्होंने कर मुक्त करने के लिए सरकार से प्रार्थना की । सरकार इनके माँग को ठुकराकर, कर वसूलने पर जोर दिया । परिणाम स्वरूप खेडा में किसानों का आंदोलन प्रारंभ हुआ । गांधीजी ने इस आंदोलन को अपना पूरा समर्थन देकर, किसानों को बताया कि सरकार को कर मत देना । अंत में सरकार ने बताया कि - जिनको साध्य होता है, वे कर दे सकते हैं । इसे मानकर गांधीजी भी अपना आंदोलन खत्म करने को राजी हुए । इस आंदोलन द्वारा सरदार वल्लभभाई पटेल राजकीय नेता के रूप में उभरके आए ।

स्वातंत्र्य आंदोलन में गांधीजी

स्वातंत्र्यांदोलन के इतिहास में सा.श. 1919 वा साल एक महत्वपूर्ण साल है । यह गांधीजी के राजकीय क्षेत्र प्रवेश किया हुआ साल है । गांधीजी को यह पता चल गया था कि अंग्रेजों को दैहिक बल द्वारा भारत से नहीं भगा सकते । सा.श. 1919 में गांधीजी ने रौलेट कानून और जलियनवालाबाग हत्याकांड के विरोध में आंदोलन प्रारंभ किया तथा खिलाफत आंदोलन के नायक बने । हिन्दू मुस्लिमों के बीच सहकारिता लाना उनका उद्देश था ।

खिलाफत आंदोलन क्या है?

टर्की साम्राज्य का शासन खलीफ के हाथ में था । खलीफ दुनिया के सभी मुसल्मानों का परमोच्च धार्मिक नेता थे । पहला जागतिक युद्ध में टर्की ब्रिटेन के विरुद्ध युद्ध करके, पराजित हुआ । टर्की के अरेबिया , जोर्डान, इराक आदी राष्ट्र स्वतंत्र हो गए । सा.श. 1919 में कमालपाषा नामक नायक ने टर्की के खलीफ को निकालकर, खुद सम्राट बन गया । इससे भारतीय मुस्लिमों ने खलीफ के समर्थन में ब्रिटेन के विरुद्ध आंदोलन चलाया । इसे खिलाफत आंदोलन कहते हैं । गांधीजी आंदोलन के नेता बन गए । मोहम्मद अली और शौकत अली (दोनों भाई) इस आंदोलन के प्रमुख नायक थे ।

2 असहकार आंदोलन (सा.श. 1920-22)

गांधीजी के नेतृत्व में असहकार आंदोलन सा.श. 1920 में प्रारंभ हुआ । उन्होंने जनता से बताया कि 'स्वराज्य' पाने के लिए सरकार के साथ असहकार करके, जोर देना है । इसलिए

©KTBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

न्यायालय, शिक्षा संस्थाएँ शासकांग सभाओं का चुनाव और अंग्रेजी चीजों का बहिष्कार किया गया । इसके अलावा सरकारी कार्यक्रमों का बहिष्कार करने के साथ-साथ सर्कार से लिया उपाधियों को वापस कर दिया ।

इस आंदोलन में प्रमुख नायक चित्तरंजनदास, मोतीलाल नेहरू, वल्लभभाई पटेल, सुभाषचंद्र बोस आदी जुड गए । उनके अहिंसात्मक और सत्याग्रह विधानों से समाज के सभी स्तर के लोग आकर्षित होकर आंदोलन में भाग लिए । आंदोलन में विद्यार्थी, किसान, महिलाएँ शामिल थे । यह भारतीयों के लिए नया अनुभव था । रवीन्द्रनाथ टेगोर ने अपना 'नैटहुड्' उपाधि और गांधीजी ने अपना 'कैसर-ए-हिन्द' उपाधि अंग्रेज सरकार को वापस कर दिया । इसी समय आंदोलन को दमन करने के लिए सरकार भी तीव्र क्रम लिया । इससे उद्रिक्त होकर लोगों ने उत्तर प्रदेश के चौरी चौरा में वहाँ का पुलिसथाने के 22 पुलिसवालों को जिंदा जला दिया । (सा.श. 1922)। गांधीजी ने इस घटना को गंभीर रूप से लिया ।

गांधीजी ने सा.श. 1924 से 1929 तक अपने आपको खादी को जनप्रिय करना, हरिजनोद्धार आदी रचनात्मक कार्यों में लगा दिया । स्वराज्यवादी सी.आर. दास, मोतीलाल नेहरु के नेतृत्व में राष्ट्रीयांदोलन के कार्य आगे बढाए गए ।

गांधीजी के प्रमुख कृति तथा पत्रिकाएँ

'सत्य के साथ मेरे प्रयोग', 'हिन्द स्वराज्य', 'दक्षिण आफ्रिका में सत्याग्रह' आदी गांधीजी की कृतियाँ हैं । 'हरिजन', 'यंग इंडिया' पत्रिकाओं के वे संपदक थे ।

नेहरु विवरण (सा.श. 1927)

अंग्रेजों ने भारतीयों को सभी समुदायों को संतुष्ट करनेवाला एक संविधान रचना करने का चुनौती दिया । सर्वपक्ष सम्मेलन में - मोतीलाल नेहरू की अध्यक्षता में एक समिति की रचना की गई । समिति ने अंग्रेज अधिपत्य के नीचे स्वयं शासन करने का और संपूर्ण स्वातंत्र्य पाने का लक्ष्य रखा ।

सैमन् नियोग (सा.श. 1928)

©KTBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अंग्रेज सरकार ने सा.श. 1919 के सुधार भारत के प्रांतों में किस तरह हो रहे हैं ? इसका अध्ययन करके बताने के लिए सैमन नियोग को (सा.श. 1928) भारत भेजा । नियोग में सिर्फ अंग्रेजी सादस्य थे । भारतीयों को उसमें प्रातिनिध्य नहीं था ।

सैमन् नियोग का बहिष्कार

इसलिए भारतीय ''सैमन वापस चलो'' घोषणा के साथ बहिष्कार किया । लाहोर के बहिरंग प्रतिभटना संदर्भ में लाठी प्रयोग हुआ । इसमें लाला लजपतराय घायल होकर उनकी मृत्यु हो गई (सा.श. 1928)।

पूर्ण स्वराज्य (सा.श. 1929)

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के युवा नेता जवाहरलाल नेहरु और सुभाषचंद्र भोस ने अंग्रेजों के अधिपत्य में रहकर, खुद शासन करने का प्रस्ताव को ठुकराया । इसके परिणाम स्वरूप लाहोर के कांग्रेस अधिवेशन में 'संपूर्ण स्वातंत्र्य' निर्णय को माना । सा.श. 1930 जनवरी 26

©KTBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

को ''पूर्ण स्वराज्य दिन'' मनाने का निर्णय लिया । इस ऐतिहासिक दिन को यादगार बनाने के लिए स्वतंत्र भारत का संविधान को उसी दिन जनवरी 26, 1950 के दिन अंगीकृत किया गया । उस दिन से हर साल इस दिन को 'गणराज्योत्सव' दिन मनाते हैं ।

नागरिक कानून भंग आंदोलन

दंडी यात्रा

नागरिक कानून भंग आंदोलन को 1930 मार्च 12 को गांधीजी ने प्रसिद्ध दंडी यात्रा के साथ प्रारंभ किया । चुनिंदा 78 अनुयायियों के साथ गांधीजी साबरमती आश्रम से गुजरात का समुंदर किनारे तक 24 दिनों में लगभग 375 कि.मी. दूर चले । लोगों से नमक तैयार कराके नमक कानून भंग करना इस यात्रा का उद्देश था ।

कानून भंग आंदोलन जल्द ही देश भर में फैला । सब जगह लोगों ने हडताल, विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार, खादी प्रचार, शराब के दूकानों के सामने प्रतिरोध, अरण्य सत्याग्रह, कर निराकरण आदी में भाग लिया । अंकोला का नमक सत्याग्रह सारे भारत में कीर्तिमान होगया ।

इस समय वायव्य भारत में 'गडिनाड गांधी' खान अब्दुल गफारखान ने 'खुदाई खिदमतगार' (भगवान का सेवक) नाम का संघ की स्थापना की । नागाल्यांड में 13 साल की लडकी रानी गाय्डिल्यू ने अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह किया । ये सब देखकर अंग्रेज कुछ राजकीय रियायती भारतीयों को देने को तैयार हुए ।

©KTBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

गोलमेज का सम्मेलन (सा.श. 1930-32)

दंडी यात्रा के बाद अंग्रेज सरकार तीन गोलमेज के सम्मेलन लंडन में आयोजित किया। कांग्रेस की तरफ से गांधीजी ने दूसरे सम्मेलन में भाग लिया । लेकिन ये सम्मेलन भारतीय राजकीय समस्याओं को हल करने में विफल हो गए ।

ब्रिटेन प्रधानी राम्से म्याकडोनाल्ड ने गोलमेज सम्मेलन के बाद 'मतीय फैसला' (कम्यूनल एवार्ड सा.श. 1932) घोषित किया । उसमें दलित वर्ग के लिए प्रत्येक चुनाव क्षेत्र दिया । यह फैसला भारतीयों की एकता भंग करने का तंत्र मानकर गांधीजी ने इसका विरोध में पूना यरवडा जेल में आमरण उपवास आरंभ किया । अंत में गांधीजी तथा अंबेडकर के बीच पूना समझौता (सा.श. 1932) हुआ । इस तरह समस्या का हल हुआ ।

अंग्रेज सरकार ने सा.श. 1935 में भारतीयों को सरकार में राजकीय तथा शासनात्मक सहभागित्व ज्यादा प्रमाण में देने की दृष्टि से 'भारत सरकार कानून' जारी किया ।

सुभाषचंद्र बोस

भारत छोडो आंदोलन (सा.श. 1942)

क्रिप्स आयोग संधान का विफल होना भारतीयों में क्रोध पैदा किया । उन्होंने सा.श. 1942 आगस्त को मुंबई में कांग्रेस की सभा की । वहाँ 'भारत छोडो' प्रसिद्ध घोषणा का निर्णय लिया गया । भारतीयों को 'करो या मरो' घोषणा दिया । अगले दिन ही सरकार गांधीजी तथा बाकी लोगों को बंदी बनाया ।

भारत छोडो आंदोलन में भाग लिया जनसागर

बंधन का समाचार मिलते ही देश भर में हडताल, शिक्षा संस्थाओं में और कारखानों में बंद आदी प्रतिभटनाएँ हुए । पुलिस थाना, डाक-घर, रेल-स्टेशन आदी कई जगहों पर आक्रमण हुए। विद्यार्थी, कार्मिक, किसान आदी इस आंदोलन का समर्थन किया ।

© KTBS not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

'भारत छोडो' आंदोलन भी उस समय का राजकीय उद्देश को सफल नहीं बनाया । लेकिन भारत की जनता स्वतंत्र होने का दृढ निर्धार ले लिया था । यह स्पष्ट हो चुका था । यह गांधी युग का बहुत बडा जनांदोलन था ।

सुभाषचंद्र बोस और भारतीय राष्ट्रीय सेना (आय्.एन्.ओ.)

स्वातंत्र्य संग्राम में सुभाषचंद्र बोस का महत्वपूर्ण पात्र है । वे कलकत्ता विश्वविद्यालय के प्रतिभान्वित विद्यार्थी थे । लंडन के ऐ-सी-एस. परीक्षा में चौथा नंबर पर आए थे । वे देशबंधु चित्तरंजनदास के प्रभाव में आंदोलन से आकर्षित होकर राजकीय में आए । विशेष रूप से वे स्वामी विवेकानंद के जीवनी तथा लेखनों से प्रभावित हुए थे ।

सुभाषजी को गांधीजी पर अपार गौरव था । लेकिन उनके राजनीति का विरोध किया । अंत में गांधीजी के साथ विचार मत-भेद होकर सा.श. 1939 में कांग्रेस अध्यक्ष स्थान को इस्तीफा देकर पक्ष से बाहर आ गए । बाद में 'फारवर्ड ब्लाक' नाम का नया पक्ष संगठित किया ।

इस समय दूसरा महायुद्ध प्रारंभ हुआ था । (सा.श. 1939)। अंग्रेज ने बोस के क्रांतिकारी विचार जानकर उन्हें अपायकारी समझकर गृहबंधन में रखा । लेकिन बोस रहस्यमय रूप में बंधन से निकलकर पेशावर, काबूल (अफगानिस्तान) द्वारा अपायकारी यात्रा करके मास्को पहुँचे। वहाँ से विमान द्वारा जर्मनी के बर्लिन शहर आए । जर्मनी के सर्वाधिकारी हिट्लर के साथ समझौता किया। इसके द्वारा अंग्रेजों को भारत से बाहर करने के लिए मदद पाने में सफल हुए।

इस बीच अंग्रेजों के विरुद्ध जपान दूसरे महायुद्ध में प्रवेश किया । युद्ध में अंग्रेज सेना की सेवा में रहे 40,000 भारतीय सैनिक जपान के युद्ध कैदी बने । बोस ने मोहनसिंग के नेतृत्व में 'भारतीय राष्ट्रीय सेना' (इंडियन न्याशनल आर्मी - ऐ.एन.ए.) या 'आजाद हिन्द फौज' का संगठन किया । सा.श. 1943 में सुभाषचंद्र बोस सिंगापूर आकर ऐ.एन.ए. का नेता बने । तुरंत नेताजी ने सिंगापुर में 'स्वतंत्र भारत का हंगामी सरकार' स्थापित किया । इसे जर्मनी, इटली तथा जपान का भी मान्यता मिली। 'चलो दिल्ली' नारे के साथ नेताजी के नेतृत्व में ऐ.एन.ए. बर्मा द्वारा भारत के प्रदेश में (आज का मणिपुर) लगभग 150 मील तक अंदर आया और वहाँ भारतीय जमीन पर त्रिवर्ण ध्वज फहराया । लेकिन कुछ ही समय में अंग्रेज सेना बर्मा की राजधानी रंगून पर कब्जा कर लिया और साथ में ऐ.एन.ए. सैनिकों को बंदी बनाया

©KTBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

। इसी समय अणु बम के हमले से त्रस्त जपान सा.श. 1945 आगस्त को शत्रु सेना को घुटने टेक दिया । आगस्त 18 को नेताजी हवाई जहाज से जाते वक्त निगूढ रीति से गायब हुए ।

ऐ.एन.ए. अपना लक्ष्य पहुँचने में विफल तो हुआ लेकिन स्वातंत्र्यांदोलन में उसका एक महत्व का स्थान है । नेताजी ने घोषणा किया था 'अगर आप मुझे अपना खून दिया तो मैं आपको आजादी दूँगा ।' नेताजी के अपूर्व साहस और सामर्थ्य को ऐ.एन.ए. साक्षी है । कलकत्ता से मास्को तक और जर्मनी से जपान तक नेताजी का उन दिनों का सफर भारतीय इतिहास में ऐसे क्षण हैं, जिन्हें पहले कभी देखा न हो । अंग्रेजों के शत्रुओं द्वारा भारत को स्वातंत्र कराना उनका एकैक लक्ष्य था । भारत की जनता के लिए उन्होंने धैर्य, साहस, उदात्त देशप्रेम का उज्वल परंपरा छोडके गए हैं ।

अंबेडकर और उनके सुधार

डा.बि.आर. अंबेडकर

अंग्रेजों के साथ भारत राजकीय स्वातंत्र्य के लिए संघर्ष करते समय सामाजिक स्वातंत्र का प्रश्न उठानेवाले 'संविधान शिल्पी' डा. बि.आर. अंबेडकर थे । बचपन में ही अस्पृश्यता (छुआ-छूत) का कटु अनुभव पाने के कारण अंबेडकर ने छुआ छूत निर्मूल करने का दृढ निश्चय कर लिया था ।

अंबेडकर का जन्म मध्यप्रदेश का 'म्हों' में सा.श. 1891, एप्रिल 14 को हुआ । पिता रामजी सक्पल् और माता का नाम था भीमाबाई । बचपन की शिक्षा स्थानीय प्रदेश में ही हुआ । बाद में मुंबई का एल्फिन्स्टन् प्रौढशाला में पढाई की । उच्च शिक्षा प्रतिष्ठित लंडन स्कूल ऑफ एकनामिक्स, कोलंबिय विश्वविद्यालय से (अमेरिका) पी.एच.डी. एल.एल.डी, बार-एट्-ला भी किया । अध्ययन द्वारा अपना व्यक्तित्व रूपित किया।

'मोहर' नाम का अस्पृश्य जाति में जन्मा अंबेडकर को बचपन में छूआ-छूत का कडवा घूँट पीना पडा । सामाजिक असमानता को दूर करना है तो संविधानात्मक मार्ग ही एकैक साधन है - यह उनका विश्वास था । उनका विचार था कि दलित, शोषितों को राजकीय प्रातिनिध्य मिलने पर ही, उनका विमोचन होगा ।

©KTBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

इसलिए छुआ-छूत के विरुद्ध अनेक संघर्ष किए । उनमें महड् सत्याग्रह, नासिक का कलाराम देवालय में प्रवेश करना आदी संघर्ष महत्व के हैं । इस तरह दलितों में जागृती तथा स्वाभिमान पैदा किया । 'गूँगा नायक', 'बहिष्कृत भारत' आदी पत्रिकाओं का संपादक बनकर दलित, शोषित वर्गों का तथा अस्पृश्यों का आवाज बने । बहिष्कृत हितकारिणी सभा नामक संगठन स्थापित किया ।

डा. अंबेडकर दलित वर्गों के प्रतिनिधि बनकर, लंडन में हुए तीनों गोलमेज सम्मेलन में हिस्सा लिया । अंग्रेजों से जारी किया गया 'मतीय निर्णय' (म्यूनल अवार्ड सा.श. 1932) में दलित वर्ग के लिए अलग चुनाव क्षेत्र मिला । इस निर्णय के विरोध में गांधीजी ने पूना के यरवडा जेल में आमरण उपवास सत्याग्रह किया । इस समस्या का अंत गांधीजी और अंबेडकर के बीच 'पूना समझौता' (सा.श. 1932) के साथ हुआ । बाद में स्वतंत्र भारत का अपरिष्कृत संविधान रचना समिति के अध्यक्ष बनकर, संविधान की रचना करके 'संविधान शिल्पी' नाम से प्रख्यात हुए।

वे भारत का पहला कानून मंत्री बने । सा.श. 1956 दिसंबर 6 को उनकी मृत्यु हुई । मौत के कुछ ही महीने पहले उन्होंने बौद्ध धर्म का स्वीकार किया था । सा.श. 1990 में उन्हें मरणोत्तर भारतरत्न पुरस्कार प्रदान किया गया । उनका प्रसिद्ध घोष वाक्य यह था - 'शिक्षा, संगठन तथा संघर्ष' ।

लार्ड मौंट ब्याटन्

समाजवादी

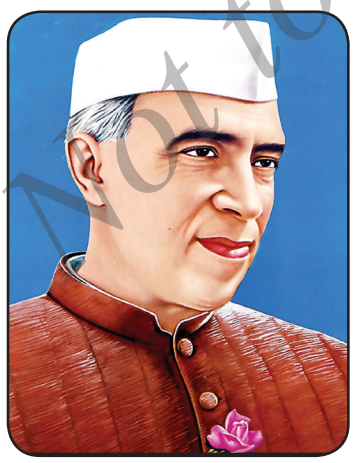

नेहरु

जयप्रकाश नारायण

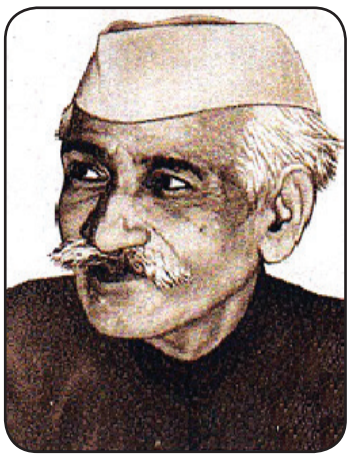

आचार्य नरेंद्रदेव

©KTBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

सा.श. 1930 के दशक में कांग्रेस के अंदर और बाहर समाजवादी चिंतनों का प्रचार हुआ। सा.श. 1934 के अधिवेशन में एक समाजवादी वर्ग कांग्रेस में स्पष्ट दिखने लगा । ज्यादा तर समाजवादी युवा पीढी के थे । उन्होंने कुछ ही दिनों में 'कांग्रेस सोशलिस्ट पक्ष' का स्थापना किया । उसका महाकार्यदर्शी जयप्रकाश नारायण थे । आचार्य नरेंद्रदेव पक्ष का एक और प्रमुख नायक थे । जवाहरलाल नेहरु, सुभाषचंद्र बोस कांग्रेस समाजवादी के प्रख्यात नायक थे । नेहरु अपने आपको 'समाजवादी' बताए, लेकिन वे तात्विक रूप से गांधीजी के साथ थे ।

समाजवादियों ने कई किसान और कार्मिक संगठन स्थापित करके, भारतीय समाज का दुर्बल वर्गों के अभिवृद्धि के लिए काम किया । जयप्रकाश नारायण, राममनोहर लोहिया, अरुण असफअली आदी सोशलिष्ट नायक 'क्विट इंडिया' आंदोलन में भाग लेकर जनप्रिय नेता बन गए।

जयप्रकाश नारायण (जे.पी.)

जयप्रकाश नारायण का जन्म बिहार में सा.श. 1902 में हुआ । उन्होंने अमेरिका के विविध विश्वविद्यालयों में सात साल उच्च शिक्षा पाया । वहाँ अध्ययन करते समय उन्हें समाजवाद का परिचय हुआ । भारत आने के बाद नेहरूजी के मार्गदर्शन पर कांग्रेस में शामिल हुए । सा.श. 1934 में कांग्रेस समाजवादी पक्ष का स्थापना किया । सा.श. 1941 में बंदी बने जयप्रकाश नारायण अगले साल हजारीबाग जेल से भागकर भूगत हो गए । वहाँ से ही 'भारत छोडो' आंदोलन का समर्थन किया । बाद में छद्मवेष (वेष बदलकर) में पूरे भारत संचार किया । सा.श. 1944 में फिर सरकार उन्हें बंदी बनाकर लाहोर के किले में रखा । बाद में वहाँ से छोडा गया ।

स्वातंत्र्य के बाद उन्होंने विनोबा भावे का भूदान यज्ञ में भाग लिया । सा.श. 1974 में सक्रिय राजकीय प्रवेश करके जयप्रकाश नारायण ने 'संपूर्ण क्रांति' नाम का आंदोलन शुरु किया। इस आंदोलन के परिणाम स्वरूप सा.श. 1977 में जनता पक्ष को अधिकार मिला । आंतरिक झगडों से जनता पक्ष का विभाजन हुआ तो वे निराश हो गए । सा.श. 1878 में इनका निधन हो गया। लोगों ने इन्हें प्यार से 'लोकनायक' कहा ।

©KTBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

स्वातंत्र्य की ओर

राष्ट्रीयवादियों का दबाव और दूसरा महायुद्ध के परिणाम से अंग्रेज जल्द ही इस समस्या का हल ढूँढने लगे । इस समय महायुद्ध के कारण अंग्रेजों की सेना शक्ति तथा आर्थिक शक्ति कम हो गई थी ।

दूसरे महायुद्ध के अंत में (सा.श. 1945) अधिकार में आया लेबर पक्ष भारतीयों के साथ राजकीय समझौता करना चाहा । ऐसी अंतिम अवस्था में भारत के भविष्य से संबंधित निर्णायक निर्धार को मौलाना अबुल कलाम आजाद, जवाहरलाल नेहरु और वल्लभभाई पटेल ने किया ।

भारत को अधिकार हस्तांतर किस तरह करना चाहिए । उसका तरीका अपनाने के लिए अंग्रेज सरकार ने सा.श. 1946 में क्याबिनेट आयोग को भारत भेजा । लेकिन इस समय जिन्ना नेतृत्व का मुस्लिम लीग अपने लिए अलग मुस्लिम देश के लिए जिद्द करने लगा । इसलिए भारत का विभाजन अनिवार्य हो गया । सा.श. 1947, जून 3 को भारत का 34 वा और अंतिम गवर्नर जनरल तथा वाइसराय लार्ड मौंट ब्याटन ने घोषणा किया कि - भारत का विभाजन करके अधिकार का हस्तांतर होगा ।

मौलाना अबुल कलाम आजाद

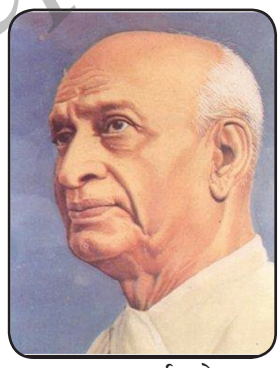

वल्लभभाई पटेल

सा.श. 1947 आगस्त 14 को पाकिस्तान भारत से अलग हो गया । । भारत सा.श. 1947 आगस्त 15 को स्वतंत्र हुआ। जवाहरलाल नेहरु भारत का पहला प्रधानमंत्री बने । प्रारंभ में सिर्फ व्यापारी उद्देश से आए अंग्रेज लगभग दो शतमानों तक भारत को आर्थिक, राजकीय रूप से दुर्बल किया । भारतीयों के निरंतर संघर्ष तथा आंदोलनों से साम्राज्यवादी अंग्रेजों को अंत में यहाँ से लौटना पडा । दीर्घ काल तक हुआ राष्ट्रीय संघर्ष का अंतिम दिन 15 आगस्त सा.श. 1947 भारत के इतिहास में एक अविस्मरणीय दिन है ।

©KTBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

प्रमुख घटनाएँ (सा.श.)

गांधीजी का जन्म	1869 अक्तूबर 2
असहकार आंदोलन	1920-1922
चौरी-चौर घटना	1922
पूर्ण स्वराज्य की घोषणा	1929
पूर्ण स्वराज्य की दिनाचरण	1930 जनवरी 26
नमक सत्याग्रह	1930 एप्रिल
पूना समझौता	1932
दूसरा विश्व युद्ध	1939-1945
भारत छोडो आंदोलन	1942
भारत को स्वातंत्र्य	1947 आगस्त 15.

©KTBS Not to be republished

अभ्यास

I **रिक्त स्थानों को सूक्त शब्द से भरिए ।**

1 गांधीजी के राजकीय गुरु ..... ।

2 गांधीजी ने अहमदाबाद के पास ..... आश्रम स्थापित किया ।

3 चौरी चौर घटना ..... में हुआ ।

4 'संपूर्ण स्वराज्य' निर्णय ..... में अंगीकृत हुआ ।

5 कांग्रेस सोशलिष्ट पक्ष का महाकार्यदर्शी ..... थे ।

6 संपूर्ण क्रांति आंदोलन की स्थापना ..... ने किया ।

7. स्वतंत्र भारत का पहला प्रधानमंत्री ..... थे ।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

II **नीचे के प्रश्नों का एक वाक्य में उत्तर दीजिए ।**

1 गांधीजी का जन्म कब और कहाँ हुआ ?

2 गांधीजी के राजकीय गुरु कौन थे ?

3 पूना समझौता किनके बीच हुआ ?

4 'फार्वर्ड ब्लॉक' किसने प्रारंभ किया ?

5 ऐ.एन.ए. विस्तार कीजिए ।

6 'भारत छोडो' आंदोलन में गांधीजी ने क्या घोषणा दिया ?

7 'मुझे रक्त दो, मैं तुम्हें स्वातंत्र दूँगा' यह घोषणा किसने दिया ?

8 अंबेडकर का जन्म कब हुआ ?

9 भारत का 'संविधान शिल्पी' किसे कहते हैं?

10 'लोक नायक' किसे कहते हैं ?

III समूह में चर्चा करके उत्तर दीजिए ।

1. गांधीजी के कानून भंग आंदोलन के बारे में बताइए ।
2. 'भारत छोडो' आंदोलन के बारे में विवरण दीजिए ।
3. सुभाषचंद्र बोस के स्वातंत्र्यांदोलन के बारे में संक्षिप्त विवरण दीजिए ।
4. अंबेडकर का सामाजिक स्वातंत्र्य संघर्ष के बारे में बताइए ।

कार्य कलाप

'दंडीयात्रा', 'भारत छोडो' आंदोलन के बारे में ज्यादा जनकारी लीजिए ।

☆ ☆ ☆

©KTBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पाठ 6 कर्नाटक - समाजमुखी आंदोलन

पाठ परिचय

अधिकार में रहे लोग अगर जनता के विरोध में कोई निर्धार, कार्यक्रम या योजनाओं को कार्यरूप में लाने लगे तो उसका विरोध करने का अधिकार जनता को है । कर्नाटक में ऐसे प्रसंग आये तो, बुद्धिमान लोग विरोध करके आंदोलन किया है । इसी समय दुर्बल, शोषित, पिछडे वर्ग के लोगों ने अपने आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक अभिवृद्धि के लिए संघर्ष किया । इस पाठ में कर्नाटक के परसिरवादी, महिलाएँ, किसान, दलित और कन्नड हेतु संघटनों का आंदोलन आदि का विवरण दिया है । साथ में अधिकार विकेंद्रीकरण की दिशा में जारी किए गए पंचायत राज व्यवस्था का परिचय दिया गया है ।

सामर्थ्य

1 परिसर आंदोलन के बारे में कुछ निदर्शनों के साथ जानेंगे ।
2 महिलाओं के सबलीकरण के लिए किया सरकार के कार्यों की खूब तारीफ करेंगे।
3 किसान अपने हित के लिए किया संघर्ष के बारे में जानेंगे ।
4 दलितों के संघर्ष के बारे में जानेंगे ।
5 कन्नड अवलोकन आंदोलन के बारे में दिलचस्पी लेंगे ।
6 पंचायत राज व्यवस्था की आवश्यकता जानेंगे ।

1 परिसर आंदोलन

हमारे पृथ्वी के भाग मिट्टी, पत्थर, पानी, हवा, रोशनी पर पशु-पक्षी, पेड-पौधे और मनुष्य आदि बाकी सब जीव अवलंबित हैं । प्रकृति में सहज समतोलन है। आदमी नागरिक बनते ही अपने आवश्यकताओं के लिए परिसर का बलि दे रहा है । प्रकृति को सृष्ठी का वरदान मानना छोडकर उसे सिर्फ अपने उपयोग का कच्चा वस्तु मान लिया है ।

भूमी पर रहे जैविक और अजैविक अंशों को परिसर कहते हैं ।

©KTBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

औद्योगिक क्रांति, वाणिज्य व्यापार, क्रांतियों से परसिर पूर्ण रूपसे खराब हो गया है । बडे बडे उद्यमी परिसर संपत्ती को अपने पकड में लेने के लिए निरंतर प्रयत्न कर रहे हैं । इससे कई नई समस्याओं का उत्पत्ति हो गया है । लोग गंभीर स्वास्थ्य समस्याओं से जूझ रहे हैं । प्राकृतिक संपत्ति के नाश से बहुत सारे लोग संकष्ट का सामना कर रहे हैं । बीसवी शताब्दी के उत्तरार्ध में लोगों में जागृति पैदा करने के लिए परिसर जागृति अंदोलन प्रारंभ हुआ । 1970 के दशक में परिसर आंदोलन जागतिक स्तर में आरंभ होकर कर्नाटक पहुँचा ।

गांधी ने बताया कि 'भूमी सभी की आवश्यकताओं को पूरी करती है मगर उनकी दुराशा को नहीं।'

पश्चिमी घाटों के प्रदेश में खान की खुदाई प्रारंभ होने के कारण परिसर संरक्षण आंदोलन अनिवार्य हो गया । 'सह्याद्री खान विरोधी मंच' आरंभ होकर कुदरेमुख और बाकी प्रदेशों के खानों का विरोध किया । केंद्र सरकार ही लोहे के खान का कंपनी प्रारंभ किया था । इस खान से भद्रा नदी का मूल ही गंदा हो गया । इस आंदोलन से सरकार पर तीव्र दबाव बना और परिसर संरक्षण कार्य प्रारंभ किया ।

सालुमरद तिम्मक्क : आज भी संघर्ष कर रही 85 साल की तिम्मक्का 284 पेडों को पंक्ति में लगायी है । अनपढ होने पर भी परिसर संरक्षण का पाठ पढानेवाली 'सालुमरद तिम्मक्क' की जिंदगी निस्वार्थ का है ।

सह्याद्री श्रेणी की प्रमुख नदी तुंगा कलुष होते देखकर 'तुंगा मूल बचाओं' आंदोलन प्रारंभ हुआ । सह्याद्री पर्वत श्रेणी के जंगल धीरे धीरे लुप्त हो रहे हैं । पेड-पौधों को बचाकर उनका विनाश रोकने के लिए विविध प्रदेशों में 'चिप्को' या 'अप्पिको' (गले लगाओ) आंदोलन शुरु हुए । चिप्को आंदोलन के लिए खुद को समर्पित किया सुंदरलाल बहुगुण को कोई नहीं भूल सकता ।

कार्यकलाप : 'अप्पिको' आंदोलन के ध्येयोद्देश का सूची बनाइए ।

©KTBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

वन विभाग नीलगिरी, अकेशिया जैसे, आयात किए पौधों को उगा रहा है । इस योजना को 'सामाजिक अरण्य' कहते हैं । परिसरवादियों ने नीलगिरी जमीन के अंतर्जल को नीचे ढकेलता है मानकर उसको उगाने का विरोध किया ।

दावणगेरे जिला हरिहर पालिफैबर कारखाना निरर्थक वस्तुओं को तुंगभद्रा नदी में छोडकर नदी का पानी गंदा करने के विरोध में आंदोलन आरंभ हुआ । बाकी आंदोलन ये हैं - कारवार का सीबर्ड नौका प्रदेश के विरोध में, करावली में कोजेंट्रिक्स नागार्जुन विद्युत योजना के विरोध का, तालाब बचाओ आंदोलन, भद्रा ऊपरी किनारे की योजना के विरोध का, कब्बन पार्क बचाओ, कार्गिल सीड्स संस्था के विरोध का, औद्योगिक नगरों के विरोध के आंदोलन आदि ।

आजकल राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर खबरों में रहे आंदोलन ये हैं - कर्नाटक के खान के विरोध में किया आंदोलन, बल्लारी, चित्रदुर्ग, चिक्कमगलूर, उत्तर कन्नड, दावणगेरे, रामनगर आदि जिलाओं में खान संपत्ती लूट करनेवालों के विरोध में किया गया आंदोलन ।

कर्नाटक लोकायुक्त संस्था के सार्वजनिक हितासक्ति दावाओं को तफ्तीश करके अक्रम खानों का जाँच करने का और उनके दीर्घ विवरण उल्लेखनीय है । इन सब के परिणाम स्वरूप प्रकृति का शोषण कम हो रहा है । आज भी कई आंदोलन चल रहे हैं । कृतक रासायनिक से जमीन को अनुपयुक्त करने की पद्धति के बदले में नैसर्गिक खाद का उपयोग करके कृषि उत्पादन के लिए जोर देनेवाला आंदोलन अब एक क्रांति का रूप धारण कर रहा है । यह एक समाधानकारक विषय है । कर्नाटक में 'सावयव कृषि मिषन' स्थापित होकर सावयव कृषि को प्रोत्साहन मिल रहा है । हजारों किसान इसका लाभ उठा रहे हैं । इस दिशा में कर्नाटक राज्य भारत में सबसे आगे है ।

2 महिला आंदोलन

महिला आंदोलन मुख्य रूप से स्त्री शिक्षा पर जोर दिया । कर्नाटक में श्रीरंगम्म और रुक्मिणम्म बी.ए. आनर्स उपाधि पानेवाली पहली महिलाएँ हैं । इंदिरम्म बेंगलूर

©KTBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

की प्रथम महिला मेयर थी । ये सब होने पर भी सबलीकरण मृगतृष्णा बन गया था। महिलाओं को संपत्ती में हिस्सा नहीं मिलता था । विविध धर्मीय महिलाएँ अलग-अलग रीति के शोषण का शिकार बनी हैं ।

कार्यकलाप : विविध क्षेत्र में साधना किए महिलाओं की सूची बनाइए ।

कई महिलाएँ घर के चार दीवारी से बाहर निकलकर आजादी के आंदोलन में भाग लेकर देशसेवा करने के लिए आगे आयीं । कमलादेवी चट्टोपाध्याय, सरोजिनी नायडू, अरुणा असफ अली, डा. मुत्तुलक्ष्मी रेड्डी आदि को हम यहाँ याद कर सकते हैं ।

अरुणा असफ् अली

1975 में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाना प्रारंभ किया । कर्नाटक सरकार ने महिला अभिवृद्धि के कार्यक्रम प्रारंभ किया । धीरे धीरे महिला संघटन सक्रिय होने लगे । बायाँ पंथीय संघटनों ने कार्मिक महिलाओं का संघटन करने का काम किया। महिला संघटनों ने दहेज, अत्याचार, संसारिक हिंसा का विरोध किया । महिलाओं के अधिकारों के समर्थन में कानून बनाने को दबाव डालने लगे । चुनाव में 33% स्थानों को स्त्रियों के लिए आरक्षण देकर शासनसभा में उनके लिए निर्णायक पात्र रहने के लिए संघर्ष कर रहे हैं ।

ये सब आंदोलनों के फलस्वरूप सरकार कई सुधार क्रमों को जारी किया है । स्थानिक संस्थाओं में 50% स्थान महिलाओं को आरक्षित रखने का आदेश जारी किया गया प्रथम राज्य कर्नाटक है । सरकारी नियोजन में भी महिलाओं को 33% आरक्षण देकर महिलाओं को न्याय दिया है । महिलाओं के हित-रक्षा के लिए सरकार ने महिला आयोग का स्थापना किया है । यह स्त्रीयों का शोषण के विरुद्ध आवाज उठाकर उन्हें न्याय दिलाने का काम करता है ।

© KTBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

3 किसान आंदोलन

किसानों को हमारे देश का रीढ की हड्डी माना गया है । लेकिन यह रीढ की हड्डी को मजबूत करने को जो आवश्यकताएँ हैं - उन्हें नहीं दिया है । आज भी हमारे किसान सरकार की सहायता के बिना जीने की स्थिति में नहीं है । उद्योगपती अपने उत्पादन का मूल्य खुद तय करते हैं । लेकिन किसान आज तक अपने उत्पादन का मूल्य निर्धारित नहीं कर सकते । वे हमेशा वरुणदेव की कृपा या अवकृपा के पात्र बने रहते हैं । अपनी रक्षा करनेवाला सरकार अगर संकष्ट के समय में मदद नहीं किया तो वे संघर्ष की राह पर चलते हैं । कई किसान ऐसे संघर्ष में अपनी जान देकर हुतात्म हुए हैं । शतमानों से किसान संघर्ष करते आए हैं फिर भी संतुष्ट जीवन का सपना अभी भी दूर है ।

किसान संघर्ष मुख्य रूप से भू-मालिकों के विरोध में हुए । स्वातंत्रोत्तर कर्नाटक में प्रथम आंदोलन 1951 में शिवमोग्गा जिले के कागोड में हुआ । किसानों ने गेणी माप करने का 'कोलग' के विरोध में आंदोलन प्रारंभ किया । बाद में कर्ज वसूली, श्रमिकों को दिया जानेवाला कष्ट आदि के विरोध में आंदोलन किया । समाजवादी पार्टी के शांतवेरी गोपालगौड इस आंदोलन के नेता थे । डा. राममनोहर लोहिया यहाँ आकर इनको अपना समर्थन दिए ।

कार्यकलाप : ना. डिसोज का 'कोलग' कादंबरी पढकर किसानों के स्थिति गति के बारे में प्रबंध लिखिए ।

1950 के दशक में उत्तर कन्नड जिले में समाजवादियों ने किसान आंदोलन किया। 1972 में कोलार में भू-आक्रमण आंदोलन हुआ । 1980 में मलप्रभा नदी भाग के किसान कपास पैदावार में नुकसान हुआ तो प्रतिभटन किया । कई किसान पुलिस के गोली के शिकार हुए । किसान सरकार के विरुद्ध असहकार आंदोलन आगे बढाए । इस संदर्भ में बीस से भी ज्यादा किसान नवलगुंद, नरगुंद और सवदत्ती में पुलिस के शिकार होकर अपनी जान गँवाये ।

©KTBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

इस समय किसान अपना - अपना संघठन बना लिए । कर्नाटक राज्य किसान संघ शिवमोग्गा जिला में आरंभ होकर स्थानीय समस्याओं को सुलझाने का काम किया। दूर दृष्टि रखकर आनेवाले विदेशी कंपनियों के आगमन का विरोध किया । कर्नाटक प्रांत किसान संघ, किसान सभा, दलित संघर्ष समिति, किसान कूली कार्मिक संघ आदि संघटनों ने किसानों के समस्याओं को समझाने के लिए आंदोलन का समर्थन किया ।

कार्यकलाप : बागूरु नविले आंदोलन के बारे में ज्यादा जानकारी लीजिए ।

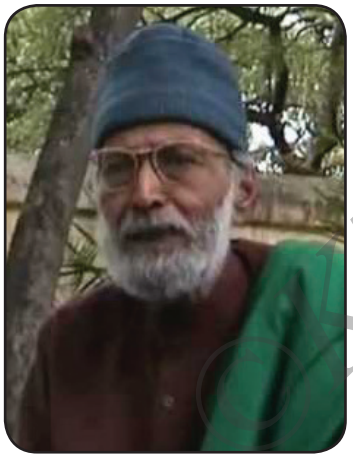

एम्.डी. नंजुंडस्वामी

किसान आंदोलन के नेताओं में एम.डी. नंजुंडस्वामी सुंदरेश, पुट्टण्णय्य, कडिदाल रामण्ण आदि प्रमुख हैं ।

4 दलित आंदोलन

प्रसिद्ध मनोविज्ञानी आर. डी. लियांग ने एक अनोखी बात बताया है : ''दूसरों के अनुभवों को आप समझ सकते हैं लेकिन उसका अनुभव कभी नहीं कर सकते''। दलित और महिला वर्गों के लिए यह बात लागू होता है। दलितों को वर्ण व्यवस्था में भी स्थान नहीं था । शूद्रादि शूद्र बने थे । सामाजिक रूप से कोई स्थान न होने का अछूत जाति में पैदा होने के कारण यह समुदाय समाजिक संबंध से दूर रहा । इसके विरोध में हुए कई संघर्षों को हम इतिहास में देख सकते हैं । स्वातंत्र पूर्व काल में दलितों से संबंधित विषय राष्ट्रीय स्तर पर चर्चा का विषय बन गया । गांधीजी और अंबेडकर के बीच का 1930 के चर्चा ही इसके लिए प्रमुख साक्षी है। दोनों का लक्ष्य एक होने पर भी राह अलग-अलग थे ।

स्वामी विवेकानंद उस समय का मैसूर महाराज 10 वा चामराज से मिलने के बाद स्वामीजी की सलाह के अनुसार महाराज ने दलितों के लिए प्रत्येक स्कूल खोला ।

1936 में दक्षिण भारत के प्रमुख दलित नेता एम. सी. राजा के नेतृत्व में मैसूर राजमहल में दलितों का प्रवेश हुआ ।

© KTBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पहले दलितों के लिए बाकी लोगों ने संघर्ष किया । लेकिन अब दलित ही अपने समस्याओं के लिए खुद लड रहे हैं । ये लोग अंबेडकर के सैद्धांतिक विचारों से स्फूर्ति पाते हैं । शिक्षा, संघटन और संघर्ष आदि दलित आंदोलन के बीजमंत्र बन गए हैं । अपने समस्याओं का परिहार के लिए राजकीय साधना को लक्ष्य में रखकर संघटन के रूप में जागृत हो रहे हैं ।

दलित वर्गों में अंबेडकर उनके स्वाभिमान के संकेत बने और 'दलित सूर्य' नाम से कीर्तिमान हुए । कर्नाटक में इन संघटनों का प्रभाव हुआ ।

बीसवी शताब्दी के ब्राह्मणेतर आंदोलनों में दलितों को शामिल नहीं किया गया। इसलिए 1970 के दशक कें दलित आंदोलन का स्वरूप एक निर्णायक शक्ति के रूप में उभरके आया । हैदराबाद कर्नाटक प्रदेश में बी. शामसुंदर ने 1970 में भीमसेना संघटन का स्थापना किया । 1973 का 'बसवलिंगप्प बूसा प्रकरण' दलित आंदोलन को नई दिशा दी ।

सचिव बसवलिंगप्प ने मैसूर के एक कार्यक्रम में 'कन्नड साहित्य बूसा साहित्य है' बता दिया । इसके विरोध में पूरा कर्नाटक में आंदोलन हुए । आखिर में बसवलिंगप्प को मंत्री पद त्यागना पडा । इस प्रकरण से दलित भावना तीव्र रूप से जागृत हुआ ।

1976 को भद्रावती में दलित लेखकों का संघ स्थापित हुआ । इसके आरंभ में ही कर्नाटक दलित आंदोलन का मजबूत कदम देख सकते हैं । बाद में इसके आश्रय में कर्नाटक दलित संघर्ष समिति की स्थापना हुई । प्रो.बी. कृष्णप्प इसका राज्य संचालक बने । इस तरह डी.एस.एस. एक संस्था का रूप पाया ।

धीरे - धीरे दलित संघर्ष समिति का विस्तार हुआ । नौकर, महिला, पौर कार्मिक, विद्यार्थी, लेखक और कलाकार संघ आदि इसकी शाखाओं की स्थापना हुई । पारंपरिक रूप से जिनके पास जमीन ही नहीं था वे दलित जमीन पाने के लिए आंदोलन शुरु किया । शैक्षणिक प्रगति करके अधिकार केंद्र तक पहुँचना दलित आंदोलन का उद्देश बना । आगे दलित आंदोलन में दरार दिखने लगे । अलग - अलग नामों के नए संघटनों का जन्म हुआ ।

©KTBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

कार्यकलाप : देवनूर महादेव और सिद्धलिंगय्य के कृतियों के बारे में ज्यादा जानकारी लीजिए ।

साहिति देवनूरु महादेव और सिद्दलिंगय्या अपने साहित्य द्वारा दलितों का अंतर जगत को बाकी लोगों को दिखाने का काम किया । बाकी दलित लेखक जागृतीकरण के नाम पर कितने सवालों का सामना कर रहे हैं? यह विचार का भी अनावरण कर रहे हैं । आज दलित वर्ग समाज के सभी जगहों में निर्णायक पात्र निभा रहे हैं । लेकिन उन्हें अभी भी लंबा रास्ता तय करना है ।

5 कन्नड बचाओ आंदोलन या कन्नड रखवाली आंदोलन

एकीकरण आंदोलन कन्नड भाषिकों में आत्मविश्वास और एकता लाया । साहित्य रचना द्वारा कन्नड लेखक लोगों के भाषा प्रेम को जिंदा रखा था । इस दिशा में सांस्कृतिक और कन्नड संघों का पात्र बडा है । 1960 के बाद बेंगलूर में अन्य भाषिकों का आधिक्य हुआ, तो अ.न.कृ., चिदानंद मूर्ति, म.न. राममूर्ति, वाटाल नागराज और कई लोग तथा कर्नाटक युवजन सभा, कन्नड जागृत परिषत, कन्नड शक्ति केंद्र आदी संघटन कन्नड, कन्नड भाषिक और कर्नाटक की अभिवृद्धि के काम करने में सफल हुए। इनके अलावा कई कन्नड के पक्ष में काम करनेवाले संघटन आज कन्नड जमीन, पानी और भाषा के संरक्षण कार्य में कार्यरत हैं ।

6 गोकाक आंदोलन

1980 का दशक कन्नड भाषा के अस्तित्व के लिए संघर्ष करने का समय था । 1982 में गोकाक विवरण के अनुष्ठान केलिए एक निर्णायक आंदोलन प्रारंभ हुआ । कन्नड समुदाय अभूतपूर्व रीति में यह आंदोलन किया । कर्नाटक में रहनेवाले अन्य भाषिक लेग जिद करने लगे कि वे अपनी ही मातृभाषा में शिक्षा पायेंगे । उस समय के मुख्यमंत्री आर. गुंडूराव जब उडुपि गए थे तब वहाँ के मठाधिपति ने उन्हें संस्कृत को प्राधान्यता देने को कहा । इसके परिणाम स्वरूप किस माध्यम में शिक्षा देना है? यह बात छोडकर शिक्षा में भाषाओं का स्थान कैसा रहना चाहिए निर्धारित करने के लिए एक समिति की रचना की गयी । डा. विनायक कृष्ण गोकाक की अध्यक्षता

©KTBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

में यह समिति ने कन्नड को प्रथम स्थान देना और उसे अनिवार्य करने का शिफारिश किया । यह समिति त्रिभाषा सूत्र को 350 अंक निधारित किया । त्रिभाषा परीक्षा में कन्नड को 150 अंकों का प्रथम भाषा होने का शिफारिश किया ।

गोकाक विवरण को उस समय का सरकार ने नहीं माना । डा. राजकुमार के नेतृत्व में पूरे कर्नाटक में बडा आंदोलन हुआ । कुवेंपु, पाटील पुट्टप्प आदि बडे साहित्यकारों ने इस आंदोलन का समर्थन किया ।

गोकाक आंदोलन के प्रमुख घोषणाएँ - 'हेसरायितु कर्नाटक, उसिरागलि कन्नड' (नाम हुआ कर्नाटक साँस बने कन्नड), 'एने बरलि कन्नड इरलि' (कुछ भी हो जाय कन्नड रहे), 'गोकाक वरदी, जारिगे बरलि' (गोकाक विवरण जारी हो)' 'कर्नाटकदल्लि कन्नडद उसिरु तुंबलि' (कर्नाटक में कन्नड की साँस रहे) आदी ।

विनायक कृष्ण गोकाक

डा. राजकुमार

कार्यकलाप : गोकाक विवरण के शिफारिशों के बारे में ज्यादा जानकारी लीजिए ।

7 पंचायत राज्य व्यवस्था

सरल भाषा में बताना है तो पंचायत राज्य को प्रशासन का विकेंद्रीकरण व्यवस्था कह सकते हैं । स्थानीयों को प्रशासन में भाग लेकर निर्णय लेने का अधिकार देना

© KTBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

ही इस व्यवस्था का उद्देश है । भारत को स्थानीय स्वयं शासन का परचिय होने पर भी आजादी के बाद उसे संविधानात्मक रूप देने का कार्य चला । केंद्र सरकार ने 1955 में बलवंतराय मेहता की अध्यक्षता में एक समिति बनाया । समिति ने तीन स्तर के प्रशासन व्यवस्था का शिफारिश किया ।

उस समय का राज्य सरकार ने प्रजासत्तात्मक विकेंद्रीकरण हेतु 1959 में मैसूर ग्रामपंचायतों का अधिनियम जारी किया । इसके द्वारा कर्नाटक में प्रजासत्तात्मक संस्थाओं को स्थायी स्थान दिया । नया कानून के अनुसार प्रशासन व्यवस्था के तीन स्तर ये हैं -

- ग्राम पंचायत
- तालूक पंचायत और
- जिला पंचायत

कर्नाटक में 1983 में आया जनता सरकार ने पंचायत राज व्यवस्था में क्रांतिकारक बदलाव लाया । इसका श्रेय उस समय का पंचायत राज विभाग का सचिव श्री नजीर साब को जाता है । दलित, पिछडे और महिला वर्गों को स्वयं प्रशासन में भाग लेने का अवकाश को पंचायत राज व्यवस्था ने दिया ।

नजीर साब

कार्यकलाप :आपके गाँव के ग्रामपंचायत की रचना और कार्य क्षेत्र के बारे में जानकारी लीजिए ।

©KTBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अभ्यास

I एक वाक्य में उत्तर दीजिए ।

1 'तुंगा मूल को बचाओं' आंदोलन क्यों प्रारंभ हुआ ?

2 'अप्पिको' आंदोलन किसे कहते हैं ?

3 'सामाजिक अरण्य' किसे कहते हैं ?

4 कर्नाटक में बी.ए. आनर्स उपाधि पानेवाली पहली महिला कौन है?

II दो या तीन वाक्यों में उत्तर दीजिए ।

1 हमें प्राचीन तालाबों को क्यों बचाना चाहिए ?

2 प्रमुख परिसर आंदोलनों का नाम बताइए ।

3 दलित आंदोलन क्यों प्रारंभ हुआ?

4 दलित आंदोलन के बीजमंत्र क्या है?

5 पंचायत राज व्यवस्था को क्यों महत्व है ?

III चर्चा कीजिए ।

1 आपके प्रदेश में पंचायत राज व्यवस्था से हुए सामाजिक, आर्थिक बदलाव ।

2 दलित आंदोलन के अभिवृद्धि कार्य ।

कार्यकलाप :

स्कूल में ग्रामपंचायत का नमूना सभा बनाइए (शिक्षकों की सहायता लीजए ।)

☆ ☆ ☆

©KTBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पाठ 7 | कर्नाटक - आर्थिक और सामाजिक परिवर्तन

पाठ परिचय

इस पाठ में आजादी के बाद कर्नाटक में हुए सामाजिक और आर्थिक अभिवृद्धि के मूल अंशों को जानने का प्रयत्न किया गया है ।

कुछ वर्गों को अभिवृद्धि का बडा भाग मिला हैं तो कुछ वर्ग कई कारणों से दूर ही रहे हैं । इसका परिणाम ही सामाजिक असमतोलन है । इसे दूर करने के लिए सरकार संविधान द्वारा भू-सुधार, पिछडे वर्गों का आयोगों की नियुक्ति आदि कार्य कर रहा है ।

सामर्थ्य

1 आजादी के बाद कर्नाटक में हुए सामाजिक और आर्थिक क्षेत्रों के अभिवृद्धि के बारे में जानेंगे ।

2 भू सुधार कानून का उद्देश और परिणामों को समझेंगे ।

3 पिछडे वर्गों का आयोग के देन की प्रशंसा करेंगे ।

©KTBS Not to be republished

1 भू सुधार

भू-मालिक की समस्याएँ दूर करने के लिए जारी किया गया क्रमों को भू-सुधार कहते हैं । जमीन आदमी के जीवन का अविभाज्य अंग है । उसकी जिंदगी जमीन पर ही निर्भर है । लेकिन जमीन का बँटवारा सभी समुदायों में समान रूप से नहीं हुआ है। यही भू स्वामित्व में रहे असमानता को दूर करने हेतु भू-सुधार का क्रम लिया गया ।

पहले भू मिालिकों के पक्ष में अधिकार थे । भू - किराएदार के पक्ष में कोई अधिकार नहीं था । इससे संपत्ती का चकबंदी और बँटवारे में बहुत असमतोलन हुआ। भू सुधार द्वारा समाज में समानता लाने का प्रयत्न 1970 के दशक में हुआ।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

किसान और दलित आंदोलन के परिणाम स्वरूप जमीन बँटवारे की समस्याएँ पैदा हो गई । भू हीन निचले वर्ग के समुदायों को भूमि देने का माँग करके कई आंदोलन हुए। इनके परिणाम स्वरूप भू-सुधार के अंश इस तरह हैं ।

1 जमींदारी पद्धति का निर्मूलन

जमीन पर भू-मालिक वर्ग का पकड कम करना इस क्रम का उद्देश था । भू सुधार में यह प्रमुख अंश है । 1955 में माजी उपराष्ट्रपति बी.डी. जत्ती के नेतृत्व में एक समिति की रचना की गई । यह समिति ने भू सुधार करने के बारे में कुछ शिफारिश की । इस समिति के अनुसार हर एक परिवार गरिष्ठ प्रमाण का 116 एकड शुष्क भूमी तथा 27 एकड सिंचित भूमि अपने लिए रख सकता है । ये शिफारिश जमींदारों के पक्ष में थे । 1957 में जारी किए गए ये शिफारिश बदलाव लाने में असमर्थ हो गये ।

1 एकड = 100 सेन्ट्स या 40 गुंटे

2 भू किराएदार पद्धति में सुधार

भू-किराएदार कई समस्याओं के सामना कर रहे थे । उनमें ज्यादा प्रमाण का किराया, भू-मालिकाना में अभद्रता और बिना मालिकत्व के भू-हीन कार्मिक आदि थे। इन समस्याओं के समाधान के लिए 1974 में मुख्यमंत्री देवराज अरस ने भू-मालिकाना के बारे में एक क्रांतिकारक कानून जारी किया । इससे कई जमाने से किराए पर जमीन में काम करनेवाले भू-हीन अब भू - मालिक बन गए ।

1974 के भू-सुधार (संशोधन) कानून के प्रमुख अंश

1. सभी तरह के किराए को रद्द कर दिया ।
2. किसान जिस जमीन में हल चलाता था उस जमीन पर उसका अधिकार हो गया ।
3. जो जमीन को किराए पर देते थे वह जमीन सरकार के स्वाधीन हो गया । उस जमीन पर अधिकार या परिहार चाहिए तो उन्हें न्यायाधिकरण द्वारा अर्जी देना था ।

©KTBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

4 न्यायाधिकरण का निर्णय अंतिम था । उसका निर्णय को सिर्फ उच्च न्यायालय में प्रश्न कर सकते थे ।

3 गरिष्ठ भू-मालिकाना परिसीमा

1957 के बाद से 1990 तक प्रमुख भू-मालिकाना परिसीमा के लिए बहुत प्रयत्न किए गए । एक परिवार के लिए जमीन का गरिष्ठ सीमा को उस समय का सरकार निर्धारित किया था । 1977 में इनाम रद्दति का कानून जारी किया गया ।

1974 में जमीन का गरिष्ठ सीमा को इस तरह निर्धारित किया गया । बिना सिंचाई के शुष्क जमीन है तो उसकी सीमा एक परिवार के लिए 54 एकड होना चाहिए। सिंचाई की सुविधा रहकर दो या उससे ज्यादा पैदावार करते हैं तो एक परिवार के लिए 10 से 18 एकड और एक पैदावार का सिंचित जमीन है तो एक परिवार के लिए 27 एकड निर्धारित किया था ।

इनाम रद्दति कानून के बारे में ज्यादा जानकारी लीजिए ।

4 आर्थिक भू-मालिकाना की रचना

किस भू-मालिकाना से किसान कृषि के खर्चों को निकालके अपने तथा अपने परिवार के सुखी जीवन के लिए आय रख सकता है उस जीवनाधार भू-मालिकत्व को 'आर्थिक भू-मालिकाना' कहते हैं । भू - मालिकाना का क्रोढीकरण और गरिष्ठ परिसीमा से कई किसानों का जीवनस्तर सुधर गया ।

5 सहकारी कृषि की अभिवृद्धि

किसान स्वयं प्रेरणा से सहकार संघों की स्थापना करके अपने सब जमीनों को सहकारी देखरेख को सौंपकर सभी मिलकर कृषि करते हैं । उत्पादन में जमीन के शाश्वत अभिवृद्धि के लिए जरूरी राशि निकालकर बचा हुआ भाग को समान रूप से लेते हैं । इसे 'सहकारी कृषि पद्धति' कहते हैं ।

©KTBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

भू-सुधार से भू-हीनों को भू-मालिकाना हक मिला । किसानों के अधिकारों की रक्षा की गई । सहकार कृषि पद्धति से किसानों को थोडा लाभ भी मिला । लेकिन यह पद्धति निरीक्षित प्रमाण में लोगों तक नहीं पहुँचा ।

2 पिछडे वर्गों के आयोग

भारत का सामाजिक व्यवस्था असमानता से भरा है । श्रेणीकृत जाती व्यवस्था से कई जाति पिछडे रह गए । अंग्रेज भारत आने के बाद समाज में नये बदलाव आने लगे ।

अंग्रेज प्रशासन में जाति भेद के बिना सभी अंग्रेजी भाषा सीखने लगे । अंग्रेजी जाननेवालों को सरकार में नौकरी मिलने लगे । बहुसंख्यात होने पर भी शिक्षा के बिना उन्हें सरकारी नौकरी नहीं मिलते थे । इसलिए मैसूर संस्थान में साहुकार चेन्नय्य, एम. बसवय्य आदि के नेतृत्व में ब्राह्मणेतर आंदोलन शुरु किया ।

भारत में पहले नाल्वडी कृष्णराज ओडेयर के काल में पिछडे वर्गों का आयोग 1918 में न्यायमूर्ति लेस्ले. सी. मिल्लर के अध्यक्षता में स्थापित हुआ । 1921 में प्रथम आरक्षण कानून जारी किया गया ।

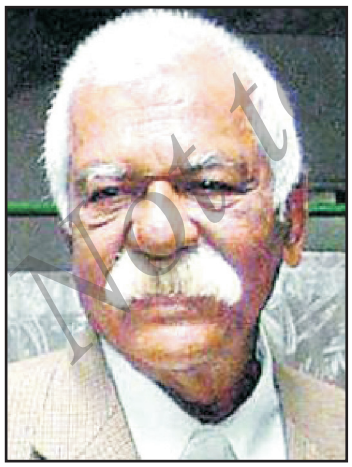

एल.जी. हावनूर

मुख्यमंत्री डी. देवराज अरस से 1975 में एल. जी. हावनूर के नेतृत्व में प्रथम पिछडे वर्ग का आयोग स्थापित किया गया । 1975 के एस. एस. एल. सी परीक्षा में उत्तीर्ण हुए अलग - अलग जाती के विद्यार्थियों का फीसदी को जाती के पिछडापन जानने का मापदंड माना गया । हावनूर विवरण के आधार पर 1977 में सरकारी कानून जारी किया गया । यह एक क्रांतिकारी कानून माना गया । पिछडे वर्गों को सबल बनाने में यह कानून सहायक बना । इसे सर्वोच्च न्यायालय में विचार किया गया । कर्नाटक सरकार ने उच्च न्यायालय को भरोसा दिया कि कानून में रहे

©KTBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

कमियों को ठीक कर दिया जाएगा। इसके परिणाम स्वरूप 1983 में टी. वेंकटस्वामी आयोग की नियुक्ति हुई । राजकीय दबाव के कारण वेंकटस्वामी के विवरण को सरकार नहीं माना । मुख्य मंत्री रामकृष्ण हेगडे के समय में न्यायमूर्ति ओ. चिन्नप्प रेड्डी के नेतृत्व में एक समिती की रचना की गई । इस प्रस्तुति के शिफारिश भी राजकीय दबाव के कारण जारी नहीं किया गया।

यहाँ तक जारी किए गए पिछडे वर्गों से संबंधित आरक्षण कानून किसी वैज्ञानिक प्रस्तुति के शिफारिश पर रूपित नहीं हैं बल्कि राजीसूत्र पर अवलंबित हैं ।

अभ्यास

I दो या तीन वाक्यों में उत्तर दीजिए ।

1 भू-सुधार किसे कहते हैं ?

2 मुख्य सुधार के नाम बताइए ।

3 एक परिवार का जमीन के गरिष्ठ सीमा को कर्नाटक सरकार क्यों तय किया है ?

5. सहकारी कृषिपद्धति किसे कहते हैं ?

6. एल. जी. हावनूर आयोग ने पिछडेपन को किस तरह पहचाना ?

★ ★ ★

©KTBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पाठ 8 स्वातंत्र्य के संघर्ष में कर्नाटक की महिलाएँ

पाठ परिचय :

इस अध्याय में निम्नलिखित तत्यों की जानकारी मिलती है-

स्वतंत्रता के संघर्ष में भाग लेने वाली कर्नाटक की महिलाओं के नाम इस प्रकार हैं - रानी अब्बक्का देवी, बेल्लारी सिद्धम्मा, कमलादेवी चटट्टोपाध्याय, यशोधरम्म दासप्पा, उमाबाई कुंदापुर। हमारे पुरुष प्रधान समाज ने प्राचीन काल से ही महिलाओं का कार्यक्षेत्र परिवार तक सीमित माना था । इसलिए सार्वजनिक क्षेत्र में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभानेवाली महिलाएँ बहुत कम नजर आती हैं । उदाहरण के लिए रानी अब्बक्का देवी एक मिसाल बन गई हैं । आधुनिक काल में पाश्चात्य परिकल्पनाएँ जैसे कि समानता, स्वतंत्रता, विश्वबंधुत्व, भारतीय समाज के लिए, ऐसी अवधारणाओं को भारतीय अंग्रेजी पढे-लिखे लोगों ने हमारे यहाँ फैलाया। नये सामाजिक परिवर्तन के लिए भी यही कारण रहे । स्वतंत्रता के संघर्ष के संदर्भ में गाँधीजी के नेतृत्व में आंदोलन चलाये जाते थे । इसी समय नेपथ्य में कुछ सामाजिक संघ संस्थाएँ काम करती थीं : वे भी खुलकर सामने आये और संस्थाओं ने स्वतंत्रता आंदोलनों को बलप्रदान किया। इस स्वतंत्रता संग्राम में किसान मजदूरों ने और विद्यार्थि, महिलाओं ने भाग लिया था। स्वतंत्रता में हमारा भी एक है, ऐसी भावना को महिलाओं ने व्यक्त किया। महिलाओं ने बड़ी सक्रियता से स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लिया था । इस परिप्रेक्ष्य में कर्नाटक की महिलाओं का योगदान अनन्य है । अपना समस्त जीवन मातृभूमि की स्वतंत्रता और विकास के लिए महिलाओं ने समर्पित किया । महिलाओं ने स्वतंत्रता के आंदोलन में जो अपना योगदान दिया है उसे समझना हमारा कर्तव्य है । इन महिलाओं में रानी अब्बक्का देवी (मंगलूरु के पास उल्लाल), कमलादेवी चट्टोपाध्याय, बेल्लारी सिद्धम्मा, उमाबाई कुंदापुर, कृष्णाबाई, पणबेकर, जी.आर. भागीरथम्मा, सिद्धम्मा जोयिस और यशोधरम्मा दासप्पा आदि प्रमुख थी । अनेक महिलाओं ने इस आंदोलन में बढ-चढकर भाग लिया । नाम - शोहरत की परवाह नहीं किया ।

सामर्थ्य :

1. स्वातंत्र्य संग्रम में भाग लिए महिलाओं का पात्र समझना।
2. गांधी पूर्व स्वातंत्र्य संग्रम में भाग लिए महिलाओं के बारे में जानना।
3. स्वातंत्र्य संग्रम में प्रमुख रुप से भाग लिए महिलाओं की याद करना।
4. स्वातंत्र्य के बाद कर्नाटक के अभिवृद्धि में महिलाओं का योगदान के बारे में जानना।

©KTBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

रानी अब्बक्का देवी

रानी अब्बक्कदेवी

गाँधीजी से पहले चलाये गए स्वतंत्रता आंदोलन में कित्तूर रानी चेन्नम्मा, केलदी चेन्नम्मा के पंक्ति में साथ निभाने वाली महिला का नाम है 'रानी अब्बक्का देवी' ये चौटा घराने से संबंधित थी । इनके चाचाजी तिरुमलराय ने अब्बक्का देवी को युद्ध करने का प्रशिक्षण दिया था, बाद के दिनों में उन्होंने अब्बक्का देवी को राज -गद्दी पर बिठाया। अब्बक्का का विवाह मंगलूरु के 'भंग' प्रांत से संबंधित लक्ष्मप्पा अरस से हुआ था । लेकिन इनका वैवाहिक जीवन दीर्घ काल तक नहीं चला । इस प्रकार उन्हें वापस उल्लाल जाना पड़ा । पुर्तगालियों ने रानी अब्बक्का को कष्ट पहुँचाना चाहा लेकिन उनकी एक न चली। परिणामस्वरूप 1555 में पुर्तगालियों रानी अब्बक्का पर युद्ध कर दिया। इस युद्ध में अब्बक्का की जीत हुई । 1568 में पुर्तगालियों के वायसराय 'एन्टोनियोमोरहा' के नेतृत्व में उल्लाल में सेना साहित्य प्रवेश किया। रानी अब्बक्का ने स्वयं को बचाते हुए कहीं दूर चली गयी । बाद में अब्बक्का ने दो सौ सैनिकों के साथ पुर्तगालियों पर हमला कर दिया । इस युद्ध में पुर्तगाली सैनिकों को बंधक बना लिया गया । इसी सिलसिले में एक और युद्ध हुआ जिसमें पुर्तगाल के एडमिरल ''मास्कारेन्स'' उल्लाल के सैनिकों से मारा गया । रानी अब्बक्का ने पुर्ततालियों को मंगलूर के किले को छोडने के लिए दबाव डाला । परन्तु पुर्तगाली लोग उल्लाल की संपत्ति से आकर्षित होकर बार-बार वे उल्लाल पर हमला करते थे । 1570 में अब्बक्का ने बिजापुर के सुल्तान और कालिकट के जामोरिन के साथ त्रिता का समझौता किया। जामोरिन के राजा का सेनापति 'कुल्लिपूकर मार्ककर' ने अब्बक्का देवी के पक्ष में युद्ध किया और मंगलूर के किले को अपने कब्जे में ले लिया । वापस आते समय पुर्तगालियों के हाथों मारा गया अब्बक्का देवी के पति लक्ष्मरस की सहायता से अब्बक्का देवी को युद्ध में हराकर उन्हें कैद कर लिया गया। कारागृह में ही उनकी मृत्यु हो गई । रानी अब्बक्का देवी की याद में मंगलूरु के पास उल्लाल में 'वीर रानी अब्बक्का उत्सव' मनाया जाता है । शूर-वीर महिलाओं को उनकी उपलब्धियों के लिए 'वीर-रानी अब्बक्का पुरस्कार' से सम्मानित किया जाता है । इसी परिप्रेक्ष्य में दिनांक 15-1-2003 के दिन डाक विभाग ने अब्बक्का देवी के चित्र को डाक-लिफाफे पर लगाकर सार्वजनिक रूप से जारी किया ।

©KTBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

बेल्लारी सिद्धम्मा (1903-1981)

इनका जन्म वर्तमान हावेरी जिले के धुंडसी गाँव के रूढिवादी परिवार 1903 में जन्म हुआ था। इनके पिता का नाम 'कोट्टिगे बसप्पा' था । वे पेशे से व्यापारी थे साथ ही स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने के प्रति उत्साही थे । इनके पिताजी सिद्धम्मा जी को समाचार पत्र लाकर देते थे जिनके माध्यम से वे राष्ट्रीय विचारधाराओं को पढकर जानकारियाँ प्राप्त करती थी । इनका विवाह बेल्लारी के मुरुगप्पा जी से हुआ ; वे भी स्वतंत्रता सेनानी थे । इस वजह से सिद्धम्मा संपूर्ण रूप से स्वतंत्रता आंदोलनों में भाग लेती थी । 1930 के दशक में पुराने मैसूर में तेजी से स्वतंत्रता आंदोलन चल रहा था । ऐसे में एस. निजलिंगप्पा, टी. सिद्धलिंगैय्या, सरदार वीरण्ण गौड़ा जैसे अनेक स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने वाले नेता अग्रिम पंक्ति में मौजूद थे । बेल्लारी सिद्धम्मा जी ने 1938 में जो शिवपुर कांग्रेस अधिवेशन हुआ था उसमें भाग लिया था । 13-4-1938 के दिन ध्वजारोहण करने के बाद वे गिरफतार हो गयी । इस वजह से एक महीने तक वे जेल में रहीं। पूरे रियासत में वे ही प्रथम महिला थी, जिन्होंने ध्वजारोहण किया था । रियासत के अनेक समाचार पत्रों में उनकी वचनबद्धता की प्रशंसा का वर्णन था । जेल से छूटने के बाद सिद्धम्मा ने संपूर्ण रूप से स्वयं को राष्ट्रीय आंदोलन में स्थान दिया । बाद में 1930 में चित्रदुर्गा के अरण्य सत्याग्रह में भाग लिया । दावणगेरे तहसील के अनगोडु और मायकोण्डा के अरण्य प्रदेश में ताड़ के पेडों को काटने के आंदोलन में भाग लेकर दिनांक 29-09-1939 से लेकर 08-9-1940 तक जेल में बंद रही । इसके बाद 1942 के 'भारत छोडो' आंदोलन में सिद्धम्मा ने भाग लिया । भारत स्वतंत्र होने के बावजूद भी मैसूर विरासत, भारतीय संघ व्यवस्था में शामिल न होने के कारण सिद्धम्मा जी ने 1947 में 'राजमहल सत्याग्रह' अथवा 'मैसूर चलो' सत्याग्रह प्रारंभ किया। इस आंदोलन के कारण मैसूर रियासत भारतीय संघ में शामिल हुआ । इसके परिणाम स्वरूप अक्तूबर 1947 में के.सी.रेड्डी के नेतृत्व में नई सरकार अस्तित्व में आयी ।

स्वतंत्रता के बाद सिद्धम्मा जी ने दावणगेरे तहसील के विधायक के तौर पर काम किया । ग्रामीण गरीब महिलाओं के स्वास्थ्य की रक्षा के लिए 'मातृ-मंदिर' की स्थापना करके उनके लिए आशा की किरण बन गयी । इनकी इस सेवा - भावना के लिए राज्यसरकार ने ताड पत्र प्रदान करके उनको सम्मानित किया । इस प्रकार सिद्धम्मा जी ने मैसूर की स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लेकर महिलाओं को सम्मानित किया ।

©KTBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

कमलादेवी चट्टोपाध्याय (1903 - 1988)

कमलादेवी चट्टोपाध्याय

कमला देवी चट्टोपाध्याय का जन्म मंगलूर में तीन अप्रैल 1903 के दिन रईस घराने में हुआ था । इनके पिता का नाम धारेश्वर अनंतराय था और माता का नाम गिरिजा बाई था । अंग्रेजों की साम्राज्यवादी व्यवस्था में वरिष्ट अधिकारी थे । कमला देवी की पढाई कैथोलिक कान्वेंट और सेंट मेरिस स्कूल में हुई थी । इनका विवाह 14 वर्ष की उम्र में हुआ था । दुर्भाग्यवश थोड़े ही दिनों में ये विधवा हो गई । सरकारी नौकरी में होने के कारण इनके पिता का तबादला मद्रास में हो गया तब कमला देवी ने अपनी पढाई मद्रास में ही पूर्ण की । बाद में अंग्रेजों का मशहूर लंदन स्कूल आफ एकोनोमिक्स में पढाई करके उपाधि प्राप्त करने के बाद वे स्वदेश लौटी । यहाँ इन्होंने स्वयं को समाज सेवा के क्षेत्र में लगाया । इसी संदर्भ में हरींद्रनाथ चट्टोपाध्याय से इनका परिचय हुआ, जो कवि साहित्यकार और स्टेज कलाकार थे । कमलाबाई ने इनसे पुनर्विवाह किया।

कमलादेवी राष्ट्रीय स्तर की राजनीति में पहचान पाने वाली कर्नाटक की बहुमुखी प्रतिभावान महिला थी । ये गांधीजी और सरोजिनी नायडू से प्रभावित होकर सविनय अवज्ञा आंदोलन में भाग लेनेवाली महिला थी । उन्होंने कर्नाटक राज्य में भ्रमण करके युवकों को स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने के लिए प्रेरित किया । 1929 में इलाहबाद नगर में राष्ट्रीय ध्वज को हाथ में लेकर कमला देवी ने नारे लगाते हुए जुलूस में भाग लेकर अंग्रेजों का विरोध किया । लाहौर कांग्रेस अधिवेशन में लिए फैसले के अनुसार गाँधीजी ने 12 मार्च 1930 के दिन अपने 78 अनुयायियों के साथ साबरमती आश्रम से नमक सत्याग्रह आंदोलन प्रारंभ किया । मई 5 तारीख के दिन दांडी नामक जगह पहुँचकर 6 मई के दिन नमक बनाकर अंग्रेजों की नमक कानून का विरोध किया। इस अवसर पर देश की जनता को नमक सत्याग्रह में भाग लेने को कहा । कमला देवी ने गाँधीजी से मुलाकात करके महिलाओं को नमक सत्याग्रह में भाग लेने के लिए अनुमति प्राप्त की । कमला देवी और अवंती बाई गोखले ने पहली टोली में रहकर नमक कानून का उल्लंघन करने का आंदोलन में भाग लिया । गांधीजी ने कहा - ''नमक को खरीदो, इसका मूल्य छह महीने की सजा है'' ऐसे कहते हुए नमक को बेचकर अंग्रेजों के सामने गिरफ्तार हुए ।

©KTBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

उन्हें अंग्रेजों ने यरवडा जेल में बंद कर दिया । जेलसे छूटने के बाद भी बंबई के कवाकापुर में स्वदेशी वस्तुओं को बेचने का काम किया । राष्ट्रीय स्तर पर कांग्रेस के सेवादल (महिलाओं की टोली) की जिम्मेदारी सँभाला । पूरे भारत में घूमकर महिला स्वयंसेवकों को संघटित किया । बंबई का बोरिविली में महिला स्वयंसेवकों के लिए प्रशिक्षण शिबिर का आयोजन किया गया । सेवादल द्वारा किये जानेवाले गतिविधियों को देखने के बाद अंग्रेजी सरकार ने इस संघटन को रद्द कर दिया और कमला बाई को गिरफ्तार कर लिया। कमला बाई को आर्थर रास्ते पर स्थित एक जेल में बंद कर दिया गया । इसी जेल में मीराबेन नामक स्वतंत्रता सेनानी से मुलाकात किया। इसके उपरांत कमला बाई को वेलूरु जेल में भेज दिया गया ।

कांग्रेस पार्टी में आंतरिक समूह थे । सैद्धांतिक रूप से समाजवाद धारणा से प्रभावित होकर नेहरूजी, राममनोहर लोहिया, आचार्य नरेंद्र देव आदि नेताओं ने कांग्रेस पार्टी में ही आंतरिक रूप से कांग्रेस सोशियलिष्ट पार्टी की स्थापना की । कमलादेवी चट्टोपाध्याय 1934 में इस पार्टी की सदस्य बनी । कमलादेवी ने कर्नाटक में घूम-घूमकर समाजवाद के सिद्धांतों का सार्वजनिक रूप से भाषण देकर प्रचार किया । इस प्रकार उन्होंने लोगों को जागृत किया । इससे उन्हें अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा । कमला देवी न केवल एक स्वतंत्रता सेनानी थी बल्कि वे एक समाज सुधारक, महिला-चिंतक, साहित्यकार और अभिनेत्री भी थी । उन्होंने अनेक क्षेत्रों में अपनी सेवाएँ प्रदान की थी । 1955 में इन्हे पद्मभूषण, 1962 में वतमूल फाउन्डेशन द्वारा पुरस्कार, 1966 में रैमन मैगसेसे इंटरनैशनल अवार्ड, शांतिभारत देसेटीकोतम पुरस्कार, सेन्ट्रल अकादमी पुरस्कार और 1987 में इन्हें पद्मविभूषण पुरस्कार से सम्मानित किया था । इस प्रकार हम कह सकते हैं कि कमलादेवी चट्टोपाध्याय बहुमुखी प्रतिभा होने के साथ-साथ कर्नाटक की गौरवान्वित व्यक्ति थी । इनका 1988 में निधन हो गया ।

यशोधरम्मा दासप्पा (1905 - 1980)

यशोधरम्मा जी का जन्म 28-5-1905 में बेंगलूरु में हुआ था । इनके पिताजी का नाम रामय्या और माता का नाम रेवम्मा था । इनके पिताजी में सुधार करने की भावना थी । इन्होंने अपनी प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा बेंगलूरु में पायी थी ।

मद्रास के क्वीन मेरी कालेज में प्रवेश पाकर इंटर मीडिएट की शिक्षा पूर्ण किया । बेंगलूरु में वापस आने के बाद राव साहेब चेन्नय्या जी के तीसरे पुत्र दासप्पा के साथ 1926 में विवाह

©KTBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

हुआ । दासप्पा और यशोधरम्मा समाज सेवक थे । गांधीजी के प्रभाव में आकर यशोधरम्मा जी राष्ट्रीय कांग्रेस की सक्रिय कार्यकर्ता बनी थी । वर्धा सेवाग्राम में कुछ दिन इस दंपति ने अपनी सेवाएँ अर्पित करके अपने मूल निवास स्थान को लौट आए । मैसूर रियासत में इस दंपत्ति ने निरंतर रूप से स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लिया । इतना ही नहीं स्वतंत्रता के बाद इस दंपत्ति ने देखा कि मैसूर रियासत भारतीय संघ का एक हिस्सा बन गया है ।

मैसूरु न्याय विधायक सभा के लिए हुए चुनाव में इनके पति एच.सी. दासप्पा जी प्रजा संयुक्त दल के उम्मीदवार बने थे । यशोधरम्मा कांग्रेस की सदस्य बनी थी । यशोधरम्मा जी ने समाज सेविका के तौर पर काम करते हुए, 1938 में स्वतंत्रता के लिए हुए आंदोलन जो शिवपुरा ध्वजसत्याग्रह का एक भाग था उसमें यशोधरम्मा ने भाग लिया था । 1942 में भारत छोडो आंदोलन हुआ था । इस आंदोलन में यशोधरम्मा दासप्पा का घर स्वतंत्रता आंदोलन से संबंधित गतिविधियों का रहस्यात्मक केंन्द्र बना था । आंदोलन के बारे के लेखनों को 'ज्वाला' नामक पत्रिका में गुप्त रूप से मुद्रण करवाया था ।

मैसूर रियासत में लोक तांत्रीय सरकार की स्थापना के लिए 1947 में 'मैसूर चलो' नामक आंदोलन हुआ था । इसके लिए यशोधरम्मा दासप्पा ने लोगों को संगठित किया । मैसूर राजमहल के सामने इन्होंने हडताल किया था । इस आंदोलन की तीव्रता को ध्यान में रखकर मैसूर के राजा ने अपने अधिकार जनता को सौंप दिये । स्वतंत्रता के बाद यशोधरम्मा दासप्पा, विधायक, लोकसभा सदस्य एस. निजलिंगप्पा के मंत्रि-मंडल में समाज कल्याण मंत्री के तौर पर अपने अद्भुत सेवाएँ अर्पित की थी । कैंसर की वजह से 1980 में यशोधरम्मा दासप्पा जी का निधन हो गया था ।

उमाबाई कुन्दापुर (1892 - 1992)

उमाबाई कुन्दापुर जी का जन्म 1892 ईसवी में कर्नाटक राज्य के दक्षिण कन्नड जिले के कुन्दापुर स्थान में हुआ था । इनके पिता का नाम गूलिकेरे कृष्णराय और माता का नाम तुंगाबाई था । इन्होंने तेरह वर्ष की उम्र में स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लिया था । इनका विवाह संजीव राव से हुआ था । 1921 के बाद इनके पति के प्रोत्साह से स्वतंत्रता के आंदोलन में भाग लेना शुरु किया था। खादी वस्त्रों को धारण कर कांग्रेस द्वारा होने वाली गतिविधियों का

उमाबाई कुंदापुर

©KTBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

प्रभार सँभाला । दुर्भाग्य से 1923 में इनके पति का देहांत हो गया और इस वजह से वे डुबली में आकर रहने लगी ।

इन्होंने तिलक, गाँधी और हर्डेकर जी की राष्ट्रीयता की आलोचना से प्रभावित होकर मराठी भाषा में 'स्वदेशी व्रत' नामक नाटक की रचना करके स्वदेशी सिद्धांत की महत्ता का प्रतिपादन किया। मुंबई में सारस्वत साहित्यिक समाज और भगिनी मण्डली और तिलक विद्यालय की जिम्मेदारी को सँभाला । परिणाम स्वरूप स्त्रियों में स्वदेशी भावना, खादी वस्त्रों का प्रचार और राष्ट्रीय शिक्षा से संबंधित जागृति कार्यभार को सँभाला । तिलक के नेतृत्व में स्वतंत्रता के संघर्ष कार्यक्रम में भी भाग लिया था ।

गांधीजी द्वारा संचालित कार्यक्रम में भी उमाभाई भाग लेने लगी । 1923 में एन.एस. हरडेकर जी ने सेवा दल की स्थापना की थी । इस संस्था के महिला वर्ग का नेतृत्व उमा बायी ने किया था। इतना ही नहीं 1924 में जो बेलगाँव में कांग्रेस का अधिवेशन हुआ था उसमें भी इनकी प्रमुख भूमिका थी । नमक सत्याग्रह आंदोलन में भी इन्होंने भाग लिया था । परिणामस्वरूप इन्हें चार महीने तक कारागृह में रहने का दंड दिया गया । हिण्डलगा और यरवडा जेल में उमाबाई बंद थी । कुछ महीनों बाद जेल से रिहा होने के बाद अंकोला, शिरसी, सिद्धापुर, जैसे जगहों में सत्याग्रह में भाग लेने के कारण इन्हें पुनः जेल में बंद कर दिया गया ।

उमाबाई कुंदापुर अनेक निराश्रित महिलाओं के लिए आश्रय दाता बन गई । अस्वस्थ होने के कारण उमाबाई 'भारत छोडो' आंदोलन (1942) में भाग नहीं ले सकी फिर भी इन्होंने किसी तरह से तटस्थ रहकर आंदोलन का समर्थन किया : इतना ही नहीं इन्होंने उग्र स्वभाव वाले क्रांतिकारियों को आश्रय दिया था । उमाबाई ने गाँधीजी की सलाह का पालन करते हुए कस्तूरबा निधि कोष की जिम्मेदारी अपने हाथों में लिया और समाज सुधार कार्य को जारी रखा । इन्होंने निःस्वार्थ रूप से देश की स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेकर स्वयं को राष्ट्र के लिए समर्पित कर दिया था। इनका निधन 1992 में हुआ था ।

©KTBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अभ्यास

I. **नीचे के रिक्त स्थानों को सूक्त शब्द से शरिए । ।**

1. रानी अब्बक्का के स्मरणार्थ उल्लाल में _____ मनाते हैं ।
2. बल्लारी सिद्दम्मा का जन्म _____ में हुआ ।
3. 1938 में यशोधरम्मा ने _____ में भाग लिया ।
4. यशोधरम्मा _____ सचिव थी ।
5. स्वदेशी व्रत नाटक का रचयिता _____ ।

II. **समूह में चर्चा करके उत्तर दीजिए ।**

1. उल्लाल की रक्ष में पुर्तगालियों के साथ रानी अब्बक्कदेवी का संघर्ष के बारे में विवरण कीजिए ।
2. बहुमुख प्रतिभाशाली कमलादेवी चट्टोपाध्याय कर्नाटक की गौरवान्वित व्यक्ति सम र्थन कीजिए ।
3. स्वातंत्र संग्राम में उमादेवी कुंदापुर की योगदान क्या है ? सूची बनाइए ।

III. **कार्य कलाप**

1. स्वातंत्र संग्राम में भाग लिए महिलाओं की जीवनी पढिए ।
2. स्वातंत्रता के बाद कर्नाटक की अभिवृद्धि में महिलाओं का पात्र इस विषय पर भाषण स्पर्धा का आयोजन कीजिए ।

☆ ☆ ☆

©KTBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पाठ 9 कर्नाटक एकीकरण और सीमा विवाद

पाठ परिचय

कर्नाटक का लगभग दो हजार सालों से भी ज्यादा का इतिहास है । चारित्रिक रूप से कर्नाटक के लोग अलग-अलग राजकीय व्यवस्था में पले हैं । विजयनगर साम्राज्य के पतन के बाद कन्नड भाषिक प्रदेश मराठा, पेशवा, पालेगार, अंग्रेज, सुल्तान, नवाब आदी के प्रशासन में 20 घटकों में बंट गए थे । इससे कन्नड भाषिक अपने ही जमीन पर परकीय हो गए थे । इससे कन्नड भाषिक अपने ही जमीन पर परकीय हो गए थे । कर्नाटक एकीकरण आंदोलन के अलग अलग स्तरों का परिचय दिया गया है । प्रस्तुत चल रहे सीमा - विवादों को भी निरूपित किया है।

सामर्थ्य

1. कर्नाटक एकीकरण का पृष्टभूमि तथा आंदोलनों के प्रमुख स्तरों के बारे में जानना ।
2. सा.श. 1956 के बाद पैदा हुए सीमा-विवादों को जानकर उसका हल के बारे में सूचित करना ।

1 कर्नाटक एकीकरण का पृष्टभूमि

'कविराजमार्ग' कृति में वर्णन किया गया है कि - कन्नड प्रदेश कावेरी से लेकर गोदावरी तक था । कई कन्नड राजवंश इस प्रदेश पर राज किए । लेकिन विजयनगर साम्राज्य पतन के बाद कन्नड प्रदेशों में कई राजकीय बदलाव हुए । राजकीय रूप से जो शक्तिशाली बने, वे कन्नड प्रदेश तथा वहाँ के लोगों का उपेक्षा कर दिया । टिप्पू की मृत्यु के बाद अंग्रेज इन प्रदेशों को अलग-अलग भाषा बोलनेवालों के 20 शासनात्मक राजकीय शक्तियों के अधीन कर दिया । कन्नड प्रदेश के लोगों को मराठा, निजाम आदी के अधीन में परकीय होकर जीना पडा । ऐसे प्रतिकूल परिस्थिति से बाहर निकलकर कन्नड भाषिक अपना एक राज्य बनाने के लिए संघर्ष किया । इसे ही एकीकरण आंदोलन कहा गया है ।

©KTBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

बांबे कर्नाटक के लोगों ने एकीकरण का पहला कदम रखा । रा.हा. देशपांडे के अध्यक्षता में एकीकरण कल्पना को सा.श. 1890 में 'कर्नाटक विद्यावर्धक संघ' संस्था का रूप दिया ।

कार्यकलाप : बांबे कर्नाटक में कन्नड स्कूल प्रारंभ करने के लिए काम किए कन्नड का शेर 'डेप्यूटी चेन्नबसप्पा' के बारे में ज्यादा जानकारी लीजिए ।

कन्नड साहित्य परिषत बेंगलूरु में सा.श. 1915 में प्रारंभ हुआ । इसका लक्ष्य था कि - कन्नड भाषा और साहित्य का सर्वतोमुख अभिवृद्धि तथा कर्नाटक एकीकरण को प्रोत्साहन देना आदी । कर्नाटक एकीकरण सभा को धारवाड में सा.श. 1916 में प्रारंभ किया । ये संघठन कर्नाटक एकीकरण आंदोलन को आगे बढाया ।

सा.श. 1924 में बेलगावि कांग्रेस अधिवेशन में हुइलगोल नारायणराव ने 'उदयवागलि नम्म चेलुव कन्नडनाडु' स्वागत गीत गाकर, एकीकरण आंदोलन को विद्युत् चालन दिया । इस सम्मेलन (समारोह) का अध्यक्ष महात्मा गाँधीजी ने भी एकीकरण को अपना समर्थन दिया । एकीकरण आंदोलन और स्वातंत्रांदोलन दोनों एक साथ चले ।

कार्यकलाप : एकीकरण के लिए काम किए साहित्यकारों का नाम की सूची बनाइए। बी.एम.श्री. के बारे में ज्यादा जानकारी लीजिए ।

2 एकीकरण आंदोलन में पत्रिकोद्यम तथा साहित्यिक पात्र

विश्व कर्नाटक, नव कर्नाटक, वाग्भूषण, जय कर्नाटक, संयुक्त कर्नाटक आदी दिन पत्रिका, साप्ताहिक आदी एकीकरण आंदोलन को प्रेरणा दिया । ये पत्रिकाएँ अलग अलग भागों से प्रकट होते थे । इनके साथ साहित्य कृतियों ने भी एकीकरण को स्फूर्ति दिया ।

कर्नाटक प्रदेश, भाषा, संस्कृति के लिए परिश्रम किया आलूर वेंकटराय ने उस समय की दु:स्थिति देखकर कहा था - ''छी:, कहाँ है कर्नाटक? चार - पाँच भागों में कटा हुआ, बिखरा हुआ कर्नाटक को जोडकर अखंड करनेवाला कौन ? उतना अभिमान किसमें है ?''

कन्नड प्रदेश, भाषा का वैभव को कर्नाटक के लोगों को बताना ही वेंकटराय का उद्देश था । इसके लिए उन्होंने 'कर्नाटक का गतवैभव' नाम का ग्रंथ लिखकर, अपने ही खर्च में उसको प्रकट

©KTBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

भी किया । यह अत्यंत स्फूर्तिदायक पुस्तक था । हैदराबाद के कन्नड भाषित लोग इन्हें सम्मानित (सा.श. 1941) करके, 'कर्नाटक कुलपुरोहित' उपाधि दिया । मुंबई कर्नाटक में जागृति पैदा करने में शांतकवि के पात्र भी महत्व का है । साहित्य सम्मेलन के खर्चे के लिए 'बेडलु कन्नड दासय्य बंदिह, नीडिरम्मा तडमाडदे' गाकर पैसे इक्कट्ठा किया । कुवेंपु के 'जय हे कर्नाटक माते', 'नी मेट्टुव नेल अदे कर्नाटक' आदी गाने लाखों लोगों के दिल को छुआ । हुइलगोल नारायणराव का 'उदयवागलि नम्म चेलुव कन्नडनाडु' गीत अत्यंत जनप्रिय हुआ । कंय्यार किञ्ञण्ण रै ने कर्नाटक में कासरगोडु विलीन होने के लिए अंत तक संघर्ष किया । और भी कई कवि, लेखकों ने कर्नाटक के लोगों में एकता, एकीकरण के बारे में अभिमान आदी जागृत किया ।

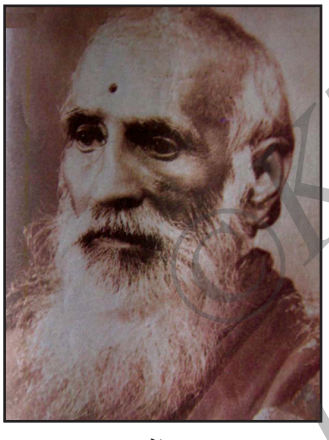

आलूरु वेंकटरायरु

हुइलगोल नारायणराव

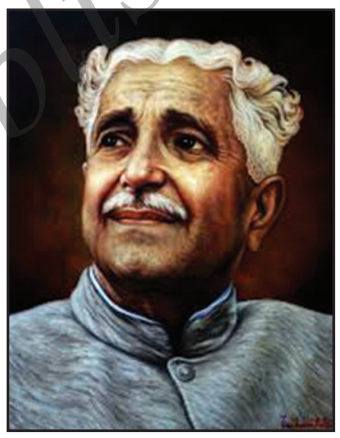

कुवेंपु

3 स्वातंत्रोत्तर एकीकरण आंदोलन

पचास सालों का एकीकरण का सपना देश के आजादी के बाद ही साकार हुआ, वह भी तीन चरणों में ।

1. पहला चरण (सा.श. 1947-48)

1947 के पहले हमारे देश में दो प्रकार के राज्य थे । अंग्रेज भारत के प्रांत तथा संस्थानिक (राजा के अधीन) 562 राज्य । संविधान सभा ने भारत को भाषा के आधार पर विभाजन न करके, चार तरह के प्रशासन को घटक के रूप में विभाजित किया । वे ही

© KSEEB Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

ए.बी.सी.डी. घटक । उसी तरह कर्नाटक के बीस प्रशासित घटकों को पाँच घटकों में फिर विभाजित किया गया । मुंबई, मद्रास, मैसूरु, हैदराबाद और कोडगु - ये पाँच घटक थे । ये सब कर्नाटक एकीकरण के पहले चरण में हुआ ।

2. दूसरा चरण (सा.श. 1953)

सा.श. 1951-52 में लोकसभा का पहला सार्वत्रिक चुनाव हुआ । चुनाव के बाद उग्र मनोभाव के आंदोलन करनेवाले 'अखंड कर्नाटक राज्य निर्माण परिषत्' नाम का पक्ष की स्थापना किया (सा.श. 1952) । यह पक्ष एकीकरण के लिए सत्याग्रह करके लगभग 5000 लोग बंधित होकर जेल चले गए । उस समय के मुख्यमंत्री केंगल् हनुमंतय्य, एस. निजलिंगप्प आदी एकीकरण को समर्थन दिया । एकीकरण करने के लिए पूरे राज्य में प्रवास किया, प्रचार भाषण किया।

सा.श. 1952 में पोट्टि श्री रामलु नामक आंध्र नेता ने अलग आंध्र प्रांत रचना की माँग करके उपवास किया । 58 दिनों के बाद उनका निधन होने से वहाँ तीव्र संघर्ष हुआ । इस घटना के बाद नेहरु ने आंध्र की रचना का घोषणा किया । इस प्रकार आंध्र की रचना हुई ।

जब आंध्र प्रदेश की रचना हुई तब बल्लारि जिले के सात तालूकों को मैसूरु प्रांत में जोडा गया । यह एकीकरण का दूसरा चरण था ।

3 अंतिम चरण (सा.श. 1956)

आंध्र प्रदेश की रचना के बाद भाषा के आधार पर प्रांतों को पुनर् विभाजन की माँग बढी । केंद्र सरकार ने राज्यों के पुनर्घटन करने के लिए 'राज्य पुनर्घटना आयोग' (एस. आर. सी.) की नियुक्ति की । उसका अध्यक्ष एस. फजलअली थे । (इसे फजलअली नियोग कहते हैं) एच.एन. कुंज्रु, के.एम. पणिक्कर इसके सदस्य थे । आयोग ने सा.श. 1955 में अपना विवरण सौंपा । उसके अनुसार भाषा और प्रशासन के सुविधा देखकर पुनर्घटन का कार्य प्रारंभ हुआ । राज्य के सभी पक्ष आयोग का निर्णय को मान्य किया । लेकिन कासरगोडु को केरल राज्य में जोडने का और बल्लारि जिले के कुछ तालूकों को आंध्रप्रदेश में जोडने की सलाह को कर्नाटक के लोग एक कंठ से विरोध किया ।

©KTBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

केंद्र सरकार राज्य पुनर्घटन आयोग का निर्णय मानने से सा.श. 1956 नवंबर 1 को 'विशाल मैसूरु राज्य' अस्तित्व में आया । मैसूरु राज्य में नीचे दिए जिले थे ।

1. पुराना मैसूरु प्रांत के 9 जिले	मैसूरु, मंड्य, बेंगलूरु, कोलार, हासन, तुमकूरु, चिक्कमगलूरु, शिवमोग्ग, चित्रदुर्ग ।
2. मुंबई प्रांत से	बेलगावी, धारवाड, विजापूर (विजयपुर) और उत्तर कन्नड
3. हैदराबाद प्रांत से	गुल्बर्गा (कलबुरगी), रायचूरु, बीदर ।
4. मद्रास प्रांत से	दक्षिण कन्नड जिले, कोल्लेगाल (तालूक), बल्लारि (बल्लारि सा.श. 1953 में आंध्र प्रदेश में शामिल)
5. सी राज्य	कोडगु

(सा.श. 1956 में 19 जिले थे । आज कुल 30 जिले हैं)

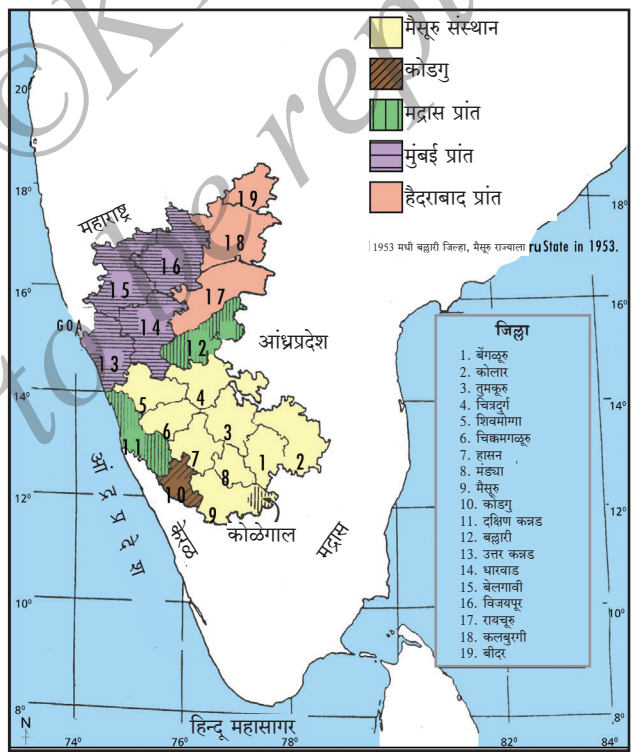

कर्नाटक एकीकरण (सा.श. 1956)

©KTBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

सा.श. 1956 में एकीकृत विशाल मैसूरु राज्य के पहला मुख्यमंत्री एस. निजलिंगप्प थे । बाद में मुख्यमंत्री देवराज अरस ने सा.श. 1973, नवंबर 1 को विशाल मैसूरु राज्य को 'कर्नाटक' पुनर् नामकरण किया ।

केंगल हनुमंतय्य

एस. निजलिंगप्प

डी. देवराज अरस

4 सीमा विवाद

राष्ट्रीय दृष्टिकोण से ही भाषा ही भाषा के आधार पर प्रांतों की रचना हुई फिर भी सीमा भाग के कुछ कन्नड भाषी लोगों को अन्याय हुआ । भाषिक रूप से बहुसंख्यात होने पर भी अन्य भाषिक प्रांतों में रहने से वे वहाँ अल्पसंख्यात हो गए । केरल का कासरगोडु, आंध्रप्रदेश का अलूरु और तालवाडी तालूक, महाराष्ट्र का चंदगड, सोल्लापूर, अक्कलकोटे आदी प्रदेशों में अधिक कन्नड बोलनेवाले लोग हैं फिर भी ये लोग कर्नाटक के न होकर बाहरी राज्यों में रह गए । इसलिए आज भी कर्नाटक सरकार और कन्नड भाषिक लोग ये प्रदेशों को वापस कर्नाटक में जोडने की आशा से निरंतर संघर्ष करते हैं । मुख्य रूप से महाराष्ट्र, केरल आंध्र प्रदेश और तमिलनाडु के साथ निरंतर सीमा संघर्ष चल रहा है । इस संघर्ष का हल ढूँढने का प्रयत्न करना चाहिए ।

कार्य कलाप : कन्नडाभिमान जागृत करनेवाले पद्यों का संग्रह कीजिए ।

1 कर्नाटक, महाराष्ट्र, केरल बीच का सीमा विवाद

कर्नाटक, महाराष्ट्र तथा केरल के सीमा विवाद का हल निकालने के लिए सा.श. 1965 में केंद्र सरकार ने सुप्रीम कोर्ट का निवृत्त न्यायाधीश महाजन के एक सदस्य आयोग की रचना की । यह आयोग ने सीमा विवाद के तीनों राज्यों की समीक्षा करके महाराष्ट्र का अक्कलकोटे,

©KTBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

जत्त, केरल का कासरगोड को मैसूरु राज्य में और निप्पाणी, खानापूर, हल्याल महाराष्ट्र में शामिल करने के लिए केंद्र सरकार को विवरण दिया । ज्यादा प्रदेश के निरीक्षण में महाराष्ट्र था लेकिन कम प्रदेश पाना पडे तो महाजन आयोग का निर्णय पर संतुष्ट नहीं है । यह सीमा विवाद सुलझाए बिना आज भी केंद्र सरकार के सामने है ।

I नीचे के प्रश्नों का एक वाक्य में उत्तर दीजिए ।

1) कर्नाटक विद्यावर्धक की स्थापना कब हुई ?
2) कर्नाटक कुल पुरोहित किसे कहते हैं ?
3) कर्नाटक एकीकरण को अपना योगदान दिया दो संगठनों का नाम बताइए ।
4) 'उदयवागलि नम्म चेलुव कन्नडनाडु' गीत का रचनाकार कौन है ?
5) विशाल मैसूरु राज्य कब अस्तित्व में आया ?
6) 'कर्नाटक' नामकरण कब, किसने किया ?

II समूह में चर्चा करके उत्तर दीजिए ।

1) कर्नाटक एकीकरण को प्रेरणा दिया कवि तथा उनकी कविताओं के बारे में बताइए।
2) राज्य पुनर्घटक आयोग के अध्यक्ष तथा सदस्यों के बारे में क्या जानते हैं ?

कार्यकलाप :

1 कर्नाटक का सुंदर मानचित्र पर जिला केंद्रों को पहचानिए ।
2 एकीकृत कर्नाटक (सा.श. 1955) की सीमा को भारत के मानचित्र पर पहचानिए।
3 'उदयवागलि नम्म चेलुव कन्नड नाडु' और गोविन्द पै का 'कन्नडिगर ताइ' गानों को समूह में गाइए ।

☆ ☆ ☆

©KTBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

नागरिकशास्त्र

पाठ 10	हमारी सुरक्षा सेना

पाठ परिचय :

इस पाठ में हम अपनी सुरक्षा सेना के विभागों, कार्यों, प्रशिक्षण केंद्रों, आधुनिक शास्त्रास्त्र केंद्र कार्यालयों आदि का परिचय प्राप्त होगा। साथ ही सहायक सुरक्षा बल (सेना), पूरक सुरक्षा सेना तथा नागरिक सुरक्षा के बारे में इस पाठ से जानकारी प्राप्त होगी ।

सामर्थ्य :

1. हमारी सुरक्षा सेना के बारे में जानकारी प्राप्त करना।
2. थल सेना, नौकादल (जलसेना) तथा वायुसेना के बारे में जानकारी प्राप्त करना।
3. सुरक्षा सेना के सामर्थ्य (क्षमता) को जानना।
4. पूरक सहायक सेना के सेवाओं को जानना तथा सम्मान करना।
5. सहायक सेना बल की स्वयं सेवा के बारे में जानना तथा गर्व का अनुभव करना।

©KTBS Not to be republished

सुरक्षा सेनाएँ

अपने देश को बाहरी आक्रमणों से सुरक्षित रखना राष्ट्र का प्रथम कर्तव्य है। इन कार्यों के लिए सुरक्षा सेनाएँ हैं। इनके लिए सैनिक नियुक्त हैं। इस प्रकार सुरक्षा सेनाओं की भूमिका हहत्वपूर्ण है। भारत में अनुशासन, क्षमतापूर्ण तथा पराक्रमी सुरक्षा सेना का होना बडे गौरव की बात है। स्वतंत्रता के बाद हमारे देश की समग्रता के सामने संकष्ट आए तो उन्हें हम समर्थ रुप से सामना कर चुके हैं। उदा: चीन तथा पाकिस्तान का आक्रमण। हमारे सेना बल मातृभूमि के लिए सब कुछ त्याग करने को तत्पर है। कारगिल युद्ध में इसका प्रदर्शन स्पष्ठ उदाहरण है।

- भारत 15,200 कि.मी. थल सीमा प्रदेश तथा 7516.5 कि.मी. जल सीमा प्रदेशों से युक्त है।
- देश की सुरक्षा व्यवस्था के लिए आय-व्यय का 40 प्रतिशत से अधिक धन आराक्षित रखा जाता है।

सुरक्षा बल के कर्तव्य

- देश के सीमांत प्रदेशों की सुरक्षा ।
- देश की समग्रता को बनाए रखना।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

- चोरी से निर्यात तथा कानून के विरुद्ध होने वाले क्रिया कलापों पर रोक।

भारत के राष्ट्रपति को हमारी सुरक्षा सेना (बल) का सर्वोच्च अधिकार प्राप्त है । सुरक्षा व्यवस्था को तीन भागों में बाँटा गया है - थलसेना, नौकादल (जलसेना) और वायु सेना। सुरक्षा सेनाएँ स्वातंत्र्योत्सव तथा गणराज्योत्सव परेड में भाग लेकर अपनी क्षमता का प्रदर्शन करती हैं।

सुरक्षा सेनाओं में अपने सामर्थ्य प्रदर्शन के प्रशिक्षण केंद्र हैं। इनमें प्रमुख हैं - राष्ट्रीय सुरक्षा कालेज, नई दिल्ली, सुरक्षा सेवा कर्मचारी प्रशिक्षण केंद्र, उदकमंडल (ऊटी), भारतीय सैन्य अकाडभी, डेहराडून तथा राष्ट्रीय सुरक्षा अकाडभी, खडकवासला, पूना (पुणे)।

भारतीय थल सेना

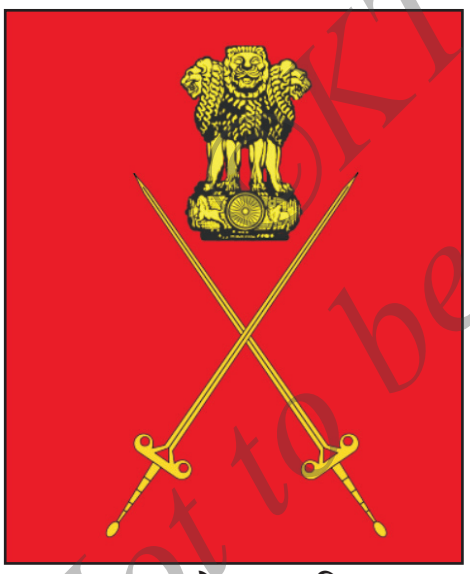

थलसेना का चिन्ह

भारतीय थल-सेना विश्व की द्वितीय अत्यंत बडी थल-सेना है। सेना के अंतर्गत पदाति (सैनिक), अश्वदल, तोपदल, ऊँट दल तथा युद्ध टैंकर होते हैं।

थल सेना में कुल 11,00,000 योद्धा हैं।
9,60,000 अतिरिक्त योद्धा हैं।

थल सेना के प्रमुख को दण्डनायक या सेनापति (जनरल) कहा जाता है। ये सेना का नियंत्रण, प्रारीक्षण, थल सेना के प्रधान कार्यालय से करते हैं।

देश की सीमाओं की रक्षा के साथ साथ प्राकृतिक आपदा जैसे भूकम्प, बाढ, अकाल, भूस्खलन, तूफान आदि समयों में मानवीय सहायता कार्य थल सेना करती है। थल सेना तकनीकी रुप से काफी अभिवृद्धि कर चुकी है और गुप्तचर व्यवस्था भी इसका अंग है।

© KTBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

भारतीय नौकादल

नौकादल का चिन्ह

समुद्री तटों तथा द्वीपों की सुरक्षा के लिए नौका दल की आवश्यकता है। भारत की जल सेना (नौकादल) विश्व की छटवीं बडी जलसेना है। इसके प्रमुख को एडमिरल कहा जाता है। जल सेना का प्रमुख कार्यलय नई दिल्ली में है।

जल सेना में आधुनिक प्रकार के प्रक्षेपण जहाज हैं। तथा पनडुब्बी भी इनके अंतर्गत है। इनमें आइ.एन.एस विभूति तथा आइ.एन.एस गोदावरी प्रमुख है। इसके अतिरिक्त आइ.एन. एस. विराट और आइ.एल.एस. विक्रमादित्य जैसे विमान वाहक वाली जल सेना सुसज्जित है। कर्नाटक के समुद्री तट पर सीबर्ड (समुद्री पक्षी) नौका स्थल की स्थापना की गई है।

भारतीय वायुसेना

वायुसेना का चिन्ह

युध्द विमान

भारत विश्व का पाँचवा बडा वायुसेना वाला देश है। इसके प्रमुख को एयरचीफ मार्शल कहते हैं। इसका केंद्रीय कार्यालय नई दिल्ली में है। प्रशासन की सुविधा के लिए वायु सेना को पाँच कमाण्ड के रुप में विभक्त किया गया है। बेंगलूर, हैदराबाद तथा डिंडिगल (तमिलनाडु) वायुसेना को प्रारीक्षण देने वाले प्रमुख केंद्र हैं। वायुसेना तकनीकी दृष्टी से अनेक आधुनिक नवीन युद्ध विमानों से युक्त है और शस्त्रों से सज्जित है।

©KTBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

हमारी वायुसेना जैगुवार जैसे आधुनिक युद्ध निमान से युक्त है। यह कुल 1,00,000 योद्धाओं तथा 1330 युद्ध विमानों वाली है। वायुसेना का बलशाली होना हमारे लिए बडे गौरव की बात है।

पूरक सुरक्षा सेना -

सुरक्षा सेना के अतिरिक्त उन्हें विषम परिस्थितियों में सहायता के लिए पूरक सुरक्षा सेना कार्य निर्वाह करती है।

- **सीमा सुरक्षा दल -** भारत के सीमांत प्रदेशों की रक्षा करना सीमा सुरक्षा दल का प्रमुख कार्य है। कारगिल युद्ध में सीमा सुरक्षा दलों ने पर्वत की ऊँचाई तक जाकर सेना के साथ युद्ध किया । मृत्यु तक अपने कर्तव्य को निभाना ही इनका उद्देश्य है।

सीमा सुरक्षा दल

- **सीमांत सडक संघटन** - सीमांत सड़कों का संघटक दल बंद सड़कों को आवागमन के लिए खोलकर सैनिको के कार्यों में तुरंत मदद करता है। सड़क निर्माण, पुल निर्माण तथा भूमिगत (आंतरिक) नालों का निर्माण कार्य इस संघटन द्वारा किया जाता है।
- समुद्र तट के पहरेदार - यह एक अर्धफौजी दल है। इसका प्रधान कर्तव्य -तूफान, चक्रवात, सुनामी जैसे प्राकृतिक प्रकोप की परिस्थिति में सुरक्षा कार्य इनका है। गलत तरीके से देश में घुस आना, चोरी से निर्यात आदि कार्यों को रोकना ही इन दलों का प्रधान कार्य है।

Not to be republished © TBS

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

समुद्रतट के पहरेदार

समुद्री तट का पहरा दल 84 अत्याधुनिक जाहाजों तथा 45 विमानों और हेलिकाप्टर से युक्त है। 5440 योद्धा इस पहरेदारी में नियुक्त (तैनात) हैं।

- **केंद्र औद्योगिक सुरक्षा दल** - यह विश्व का सबसे बडा औद्योगिक सुरक्षा दल है। 1,28,000 योद्धा इसमें संलग्न हैं। यह देश के लगभग 300 से अधिक सरकारी निजी औद्योगिक इकाइयों तथा प्रयोगालयों को सुरक्षा प्रदान करता है। इसके अतिरिक्त विमान पत्वन, बंदरगाह, रेलवे स्टेशन, एतिहासिक स्मारकों की सुरक्षा, परमाणु शक्ति केंद्रों को भी सुरक्षा प्रदान करता है।
- **सहायक सुरक्षा दल** - सम्पूर्ण देश में युवाओं में सेवा तथा देश प्रेम जागृत करने के लिए विद्यालयों और महाविद्यालयों में अनेक कार्य कलापों का आयोजन किया जा रहा है। इनमें एन.सी.सी. एक प्रमुख क्रिया - कलाप है।
- **एन.सी.सी.(NCC) (नेशनल कैडेट कॉर्प) :** सामूहिक जीवन की प्रधानता नेतृत्व आदि गुणों का विकास NCC करता है। इस प्ररिक्षण को प्राप्त करने वालों को सेना में भर्ति होने के लिए विशेष (छूट) प्रधानता होती है। उच्च शिक्षा के लिए भी विद्यार्थियों की इससे छूट (आरक्षण) प्राप्त होता है। विद्यालय तथा महाविद्यालयों में युवक तथा युवती NCC में दाखिल हो सकते हैं। कुल मिलाकर राष्ट्र की सुरक्षा

©KTBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

का कर्तव्य निभाना सिखाना इसका प्रमुख उद्देश्य है। अनुशासन तथा एकता इसका मूल उद्देश्य है।

एन.सी.सी.

सन् 2012 से भारत के 610 जिलों के 8770 विद्यालयों तथा 5521 महाविद्यालयों में छउउ की इकाई रही है। कुल 13,00,000 छउउ कैडेट हैं।

- **गृहरक्षक दल (होमगार्डस)** - यह पुलिस दल के सहायक रुप में कार्य करता है। इसके कार्य हैं - आंतरिक सुरक्षा प्रदान करना, अनिवार्य स्थिति, प्राकृतिक विकोप आदि समयों पर सहायता करना।
- **नागरिक पुलिस दल** - पुलिस दल राज्य तथा केंद्र स्तर पर होते हैं। राज्य पुलिस दल का कार्य क्षेत्र राज्य तक ही सीमित है। केंद्र सरकार ने अपनी अलग पुलिस दल बनायी है।

राष्ट्रीय सुरक्षा दल - राष्ट्रीय सुरक्षा दल गणनीय लोगों को सुरक्षा प्रदान करता है। यह देश की आंतरिक सुरक्षा तथा भयोत्पादन के दमन पर अधिक बल देता है। बम निष्क्रिय दल इसकी सहायता करता है।

©KTBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

- **भारतीय रेड क्रॉस संस्था** - रेडक्रॉस संस्था संपूर्ण भारत के 700 जिलों में अपनी शाखाओं सहित कार्यरत है। राष्ट्रपति इसके अध्यक्ष होते हैं। रेडक्रॉस संस्था का प्रमुख उद्देश्य मानवीयता और स्वयं सेवा है।

रेड क्रॉस संस्था का चिन्ह

समूह में चर्चा कर उत्तर दीजिए -

1. सुरक्षा दल (सेना) का सर्वोच्च अधिकार किसे प्राप्त है?
2. सुरक्षा दल के विभाग कौन-कौन से हैं?
3. थल-सेना के प्रमुख को क्या कहते हैं?
4. थल-सेना का प्रशासनिक कार्यालय कहाँ है?
5. नौकादल (जलसेना) के प्रमुख को क्य कहते हैं?
6. एन.सी.सी. का प्रमुख उद्देश्य क्या है?
7. थल-सेना का प्रमुख कार्य क्या है?
8. सीमांत सड़क संघटन का कार्य क्या है?
9. रेडक्रॉस संस्था का प्रमुख उद्देश्य क्या है?
10. सुरक्षा दल में सेवा करना क्य आप पसंद करते है? कारण बताइए।

©KTBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

चर्चा कीकिए

हम सुरक्षा दल में क्यों सेवा की जाए?

क्रिया कलाप -

1. अपने गाँव के सैनिकों से मिलिए तथा उन्हें अपने विद्यालय में आमंत्रित कीजिए।
2. सुरक्षा दल को विविध इकाई के चिन्हों का संग्रह कीजिए।
3. नजदीक के विद्यालय, महाविद्यालय के एन.सी.सी. इकाई से मिलिए।

ज्ञात रहे -

थल सेना के उच्च अधिकारी - जनरल, लेफ्टिनेंट - जनरल, मेजर जनरल, ब्रिगेडियर, कर्नल, लेफ्टिनेंट कर्नल, मेजर कैप्टन और लेफ्टिनेंट। नौकादल तथा वायुसेना में भी उनके अपने उच्च अधिकारियों की श्रेणी (रैंक) होती है।

©KTBS Not to be republished

☆ ☆ ☆

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पाठ 11	संविधान परिष्करण

पाठ परिचय :

भारतीय संविधान के परिष्करण करने के तरीके का विवरण दिया गया है।

सामर्थ्य :

1. भारतीय संविधान के स्वरुप को समझना ।
2. भारतीय संविधान के परिष्करण के विधान को समझना।
3. सरल बहुमत से परिष्करण करने के विधान को समझना ।
4. विशेष बहुमत से परिष्करण का विधान समझना।
5. विशेष बहुमत के आधे राज्य के मत से परिष्करण का विधान समझना।

संवैधानिक कानून में स्थिरता एक आवश्यक लक्षण है। फिर भी निरंतर होने वाले सामाजिक परिवर्तन और परिवर्तित परिस्थिति से सामंजस्य करने में संवैधानिक परिष्करण की आवश्यकता होती है।

संविधान का स्वरुप -

परिष्करण के आधार पर संविधान के स्वरुप को निश्चित किया जा सकता है। परिष्करण का तारीका सरल होने पर उसे सरल संविधान कहते हैं। परिष्करण विधान कठिन हो तो वह कठिन संविधान कहलाता है। भारत का संविधान सरल और कठिन दोनों अंशों का सम्मिलन है।

संविधान परिष्करण का तरीका -

हमारे संविधान का तीनप्रकार से पारिष्करण किया जा सकता है। वे हैं -

1. सरल बहुमत परिष्करण विधान।
2. विशेष बहुमत परिष्करण विधान
3. विशेष बहुमत के साथ कम से कम अर्ध राज्यों की सहमति प्राप्त कर परिष्करण का विधान।

©KTBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

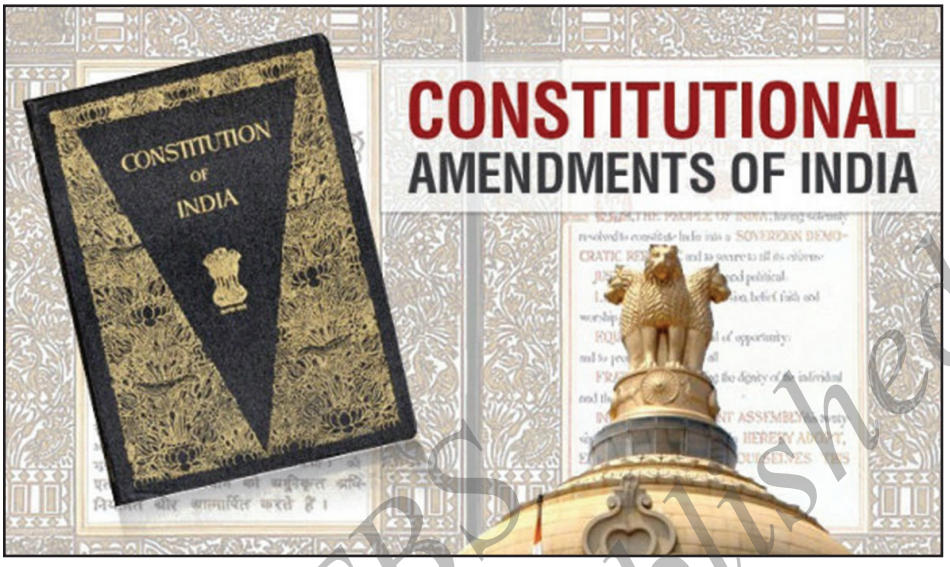

भारतीय संविधान

उपरोक्त परिष्करण विधान का विवरण ये हैं -

सरल बहुमत परिष्करण विधान :

संविधान के कुछ भाग को संसद के (लोकसभा और राज्य सभा दोनों सदन) सामान्य शासन प्रक्रिया के सरल बहुमत (संसद के सदस्यों में आधे से अधिक सदस्यों की सहमति) द्वारा परिष्करण किया जा सकता है। उदा : भारतीय नागरिक की अर्हता।

विशेष बहुमत परिष्करण विधान -

संविधान के कुछ भाग में संसद के विशेष बहुमत द्वारा परिष्करण किया जा सकता है। विशेष बहुमत का अर्थ है- संसद के सदस्यों के दो तिहाई (3/2) भाग सदस्यों की सहमती प्राप्त कर संविधान में परिष्करण करना । उदा: मूलभूत अधिकार, राज्य निर्देशक तत्व तथा अन्य अंश ।

विशेष बहुमत के साथ अर्ध-राज्य की सहमति द्वारा परिष्करण विधान -

संसद का विशेष बहुमत के साथ-साथ आधे राज्य की सहमति प्राप्त कर संविधान के कुछ भागों का परिष्करण किया जा सकता है। यह उपरोक्त दोनों विधान से कठिन विधान है। इस विधान द्वारा राष्ट्रपति का चयन, केंद्र तथा राज्य सरकार के बीच अधिकार बाँटने तथा अन्य अंशों का परष्किरण किया जा सकता है।

©KTBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

इन तीनों प्रकार द्वारा भारतीय संविधान में आवश्यक परिवर्तन किया जा सकता है। परिवर्तित समाज और परिस्थितियों के अनुकूल उपयुक्त परिवर्तन लाना संविधान में उल्लेखित है।

सितंबर 8, 2016 तक हमारे संविधान में 101 बार परिष्करण किया जा चुका है।

समूह में चर्चा कर उत्तर लिखिए -

1. संविधान परिष्करण से क्या तात्पर्य है?
2. भारतीय संविधान के परिष्करण के विधान कौन-कौन से हैं?
3. सरल बहुमत परिष्करण विधान किसे कहते हैं?
4. विशेष बहुमत परिष्करण विधान के बारे में लिखिए।
5. भारतीय संविधान के परिष्करण का तृतीय विधान का विवरण दीजिए ।

चर्चा कीजिए -

1. संविधान का परिष्करण क्यों आवश्यक है। इस विषय पर चर्चा कीजिए ।

©KTBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

भूगोल विज्ञान

पाठ 12	आस्ट्रेलिया - अत्यंत समतल भू-भाग

पाठ परिचय

इस पाठ में आस्ट्रेलिया की स्थिति और परिवेश, उसके प्राकृतिक विभाग और नदियों का विवरण जलवायु, प्राकृतिक वनस्पति, व्यवसाय, पशु-पालन, खनिज तथा उद्योग, जनसंख्या - विकास, वितरण तथा घनत्व के बारे में जानकारी प्राप्त होगी ।

सामर्थ्य

1 विश्व में आस्ट्रेलिया की स्थिति, परिवेश के बारे में जानेंगे ।

2 आस्ट्रेलिया का सतही लक्षण, नदियों का जल, जलवायु तथा वनस्पतियों के बारे में जानेंगे ।

3 इस भू - भाग के व्यवसाय और पशु - पालन के बारे में जानेंगे ।

4 विविध प्रकार के खनिजों तथा उद्योगों का परिचय प्राप्त करेंगे ।

5 जनसंख्या - आकार, वृद्धि, वितरण तथा घनत्व के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे ।

1 स्थिति विस्तार तथा भौगोलिक परिवेश

स्थिति : आस्ट्रेलिया भू-भाग पूर्णतया दक्षिण और पूर्वी गोलार्ध में है । यह 10^0 45^1 दक्षिण से 43^0 39^1 दक्षिणी अक्षांश तथा 113^0 9^1 पूर्व से 153^0 39^1 पूर्व देशांतर तक विस्तृत है । इस भू भाग में लगभग मध्य भाग से मकर रेखा होकर गुजरती है ।

विस्तार : विस्तार तथा जनसंख्या दोनों को दृष्टि से आस्ट्रेलिया विश्व का छोटा भू-भाग है । तस्मानिया द्वीप सहित आस्ट्रेलिया 76.82 लाख कि.मी. क्षेत्रफल में विस्तृत है संयुक्त राज्य अमेरिका से यह भू भाग थोडा छोटा है और भारत से दुगुना बडा है । यह विश्व का सातवाँ भू-भाग है जो दक्षिणोत्तर में 3,940 कि.मी. लम्बा और पूर्व-पश्चिमी भाग में 4,350 कि.मी. चौडा है ।

©KTBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

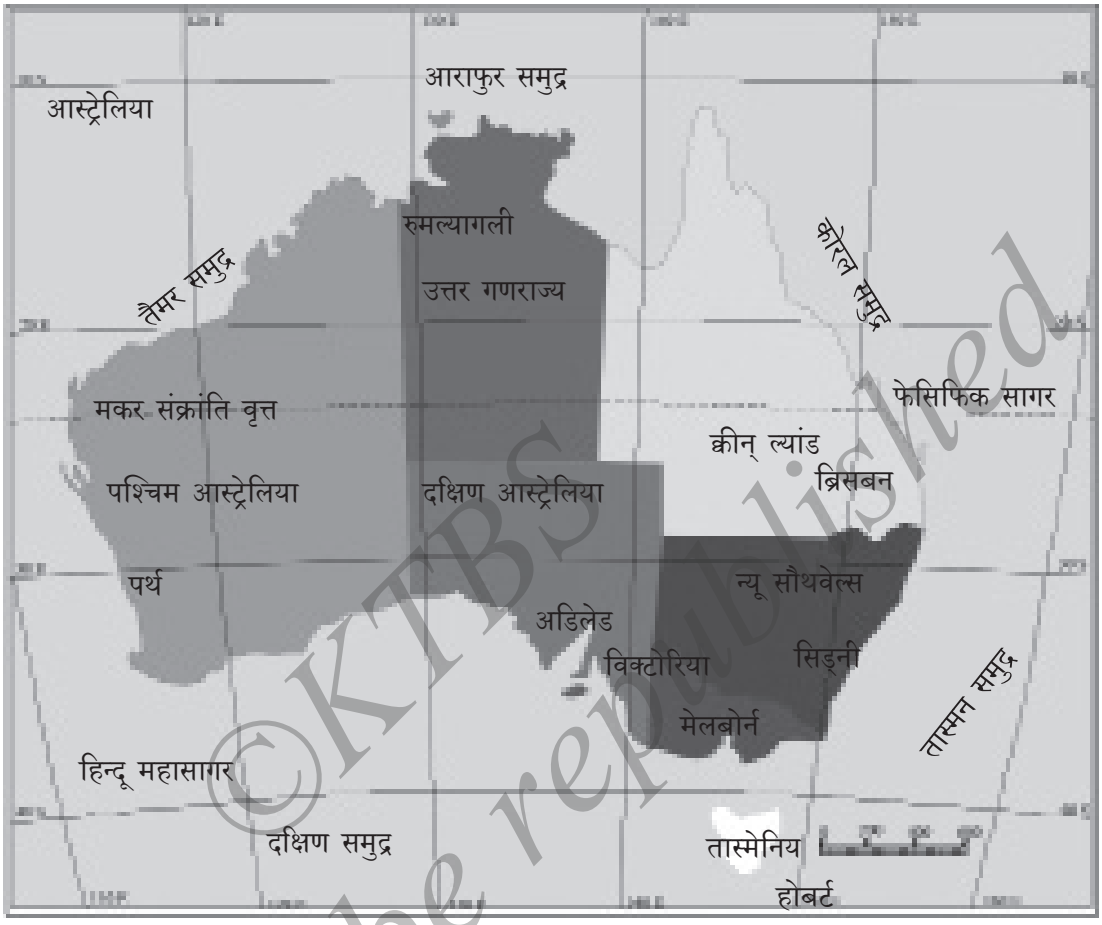

आस्ट्रेलिया - राजनैतिक

आस्ट्रेलिया नामक शब्द 'दक्षिण' शब्द के अर्थ में आस्ट्राल (लैटिन शब्द) शब्द से लिया गया है ।

मध्य तथा दक्षिण पेसिफिक सागर में 10,000 द्वीप समूह हैं । जिन्हें 'ओसीनिया' कहा जाता है । इनमें आस्ट्रेलिया प्रमुख भू-भाग है ।

भौगोलिक परिवेश : आस्ट्रेलिया हिन्द महासागर तथा पेसिफिक (प्रशांत) महासागर के मध्य स्थित द्वीप है । इस भू-भाग के उत्तर पश्चिम की ओर तैमूर आर्पूरा समुद्र है, उत्तर पूर्व में टोरेस जल डमरु मध्य तथा दक्षिण - पूर्व में तास्मान समुद्र है ।

©KTBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

2 प्राकृतिक भू-भाग और नदियों का विस्तार

प्राकृतिक भू-भाग : आस्ट्रेलिया के कुल विस्तार का लगभग 94% प्रतिशत भाग समुद्र तल से 600 मीटर से भी निम्न भाग में समतल रूप में है । इससे इसे 'अत्यंत समतल भू-भाग' कहा जाता है । इस भूभाग का अधिकतम भाग मरुस्थल होने के कारण इसे 'मरुस्थलीय भू-भाग कहते हैं ।

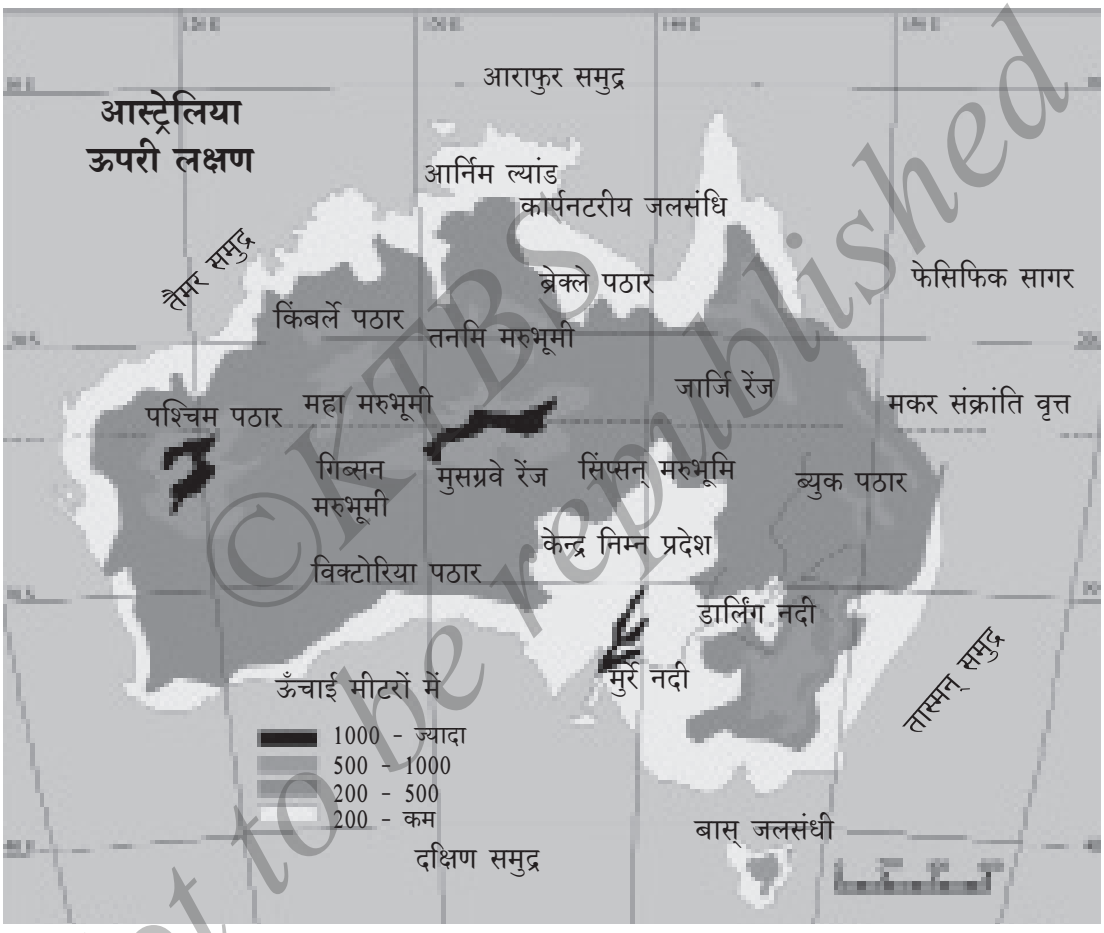

आस्ट्रेलिया - प्राकृतिक

आस्ट्रेलिया मूलतः गोंडवाना भू-भाग का एक हिस्सा है जो अत्यंत प्राचीन है । इसे भू स्वरूप के आधार पर तीन प्राकृतिक विभागों में बांटा गया है -

1 पूर्वी उत्तर प्रदेश 2 मध्य निम्न प्रदेश 3 पश्चिमी पठार

©KTBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

17हवीं शताब्दी में यूरोपीय व्यक्ति जेम्स कुक द्वारा अन्वेषित 'आस्ट्रेलिया' को नयी भू-भाग माना जाता है ।

1 पूर्वी उन्नत प्रदेश : यह पूर्वी भाग है जो उत्तर में यार्कशिखर, दक्षिण में तास्मिया बास जलडमरु मध्य तक विस्तृत है । लगभग पूर्वी समुद्र तट तक विस्तृत यह पर्वत श्रेणीयाँ पूर्वी भाग में निचले तथा पश्चिमी भाग में ढलाऊ हैं । पहले पूर्वी समुद्र की ओर प्रवेश बडा दुर्गम था, इसलिए इसे ''ग्रेट डिवाइडिंग श्रेणी'' कहा जाता था । यह श्रेणी न्यूसाउथ वेल्स में काफी ऊँची होकर गहरे ढलान से पूर्ण है । इन्हें ''आस्ट्रेलिया का आल्प्स'' तथा 'न्यू इंग्लैण्ड श्रेणी'' कहा जाता है । ऊँचे शिखर शीत काल में हिमाच्छादित हो जाते हैं । यह भाग कोसियोक्सो (2230 मीटर) का अत्यंत उच्च शिखर है ।

आस्ट्रेलिया के पूर्वी तट के बाहर दक्षिणोत्तर में ''ग्रेट बैरियीर रीफ'' नामक ''मूँगे की शैलभित्ति'' फैली हुयी है ।

2 मध्य निम्न प्रदेश : उत्तर में कार्पेंटेरिया की खाडी से दक्षिण के मर्रे के मैदान तक यह निम्न प्रदेश विस्तृत है । पूर्वी उन्नत भाग से पश्चिम की ओर आंतरिक जल व्यवस्था है । इसके मध्य भाग में स्थित आयर झील की ओर नदियाँ बहती हैं । विश्व का प्रसिद्ध ''आर्टीसियन नदी घाटी (थाला)'' यहाँ) स्थित है ।

आर्टीसियन नदी घाटी (थाला)

©KTBS not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

इस निम्न मैदानी भाग को तीन भागों में विभक्त किया गया है :

1 मर्रे - डार्लिंग नदी का मैदान ।

2 आयर झील का मैदान ।

3 कार्पेंटेरिया का मैदान ।

मर्रे नदी

डार्लिंग नदी

मर्रे और डार्लिंग नदियों का मैदान, उत्तर में स्थित आयर झील से अलग होता है। इन नदियों से जल आपूर्ति होने के कारण यह आस्ट्रेलिया का समृद्ध कृषि भाग है। इससे उत्तर की ओर स्थित आयर झील का मैदान विशाल थाल के आकार में फैला है । यहाँ कई नमकीन झीलें भी हैं । इसका काफी - भाग रेगिस्तानी प्रदेश होने के कारण अत्यंत कम जनसंख्या है । कार्पेंटेरिया का मैदान समतल है, यहाँ फ्लिंडर तथा मिचेल नदियाँ बहती हैं । इसे आयर झील के मैदान से बरक्ले पठार अलग करता है ।

3 पश्चिमी पठार : यह कार्पेंटेरिया की खाडी से ऑनस्लो पर्थ तथा आल्बेनिया तक विस्तृत भाग है । यह आस्ट्रेलिया के भाग के उच्च तथा निम्न पठारी भाग हैं । 'ग्रेट बालू का टीला', गिब्बन (सिंपसन) तथा विक्टोरिया मरुस्थल के साथ साथ यह भाग भारत के दक्कन के पठार के समान ही प्राचीन भी है । यहाँ कई बालू के टीले तथा छोटी - छोटी पहाडियाँ भी हैं । इनमें केन्द्र भाग में मेकडोनल और मसग्रेव श्रेणियों ऊँची हैं ।

नदियों का विस्तार : अत्यंत गर्म और शुष्कता के कारण आस्ट्रेलिया का काफी भाग रेगिस्तानी है । इससे नदियों की व्यवस्था कम होने पर भी कुछ नदियों छोटी तो कुछ अकालिक हैं । समुद्र में मिलने वाली नदियों से अधिक झीलों मे मिलनेवाली अन्तर्देशी नदियों ही अधिक हैं । कई नदियाँ पूर्व के उन्नत प्रदेश में उत्पन्न होकर

© KTBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

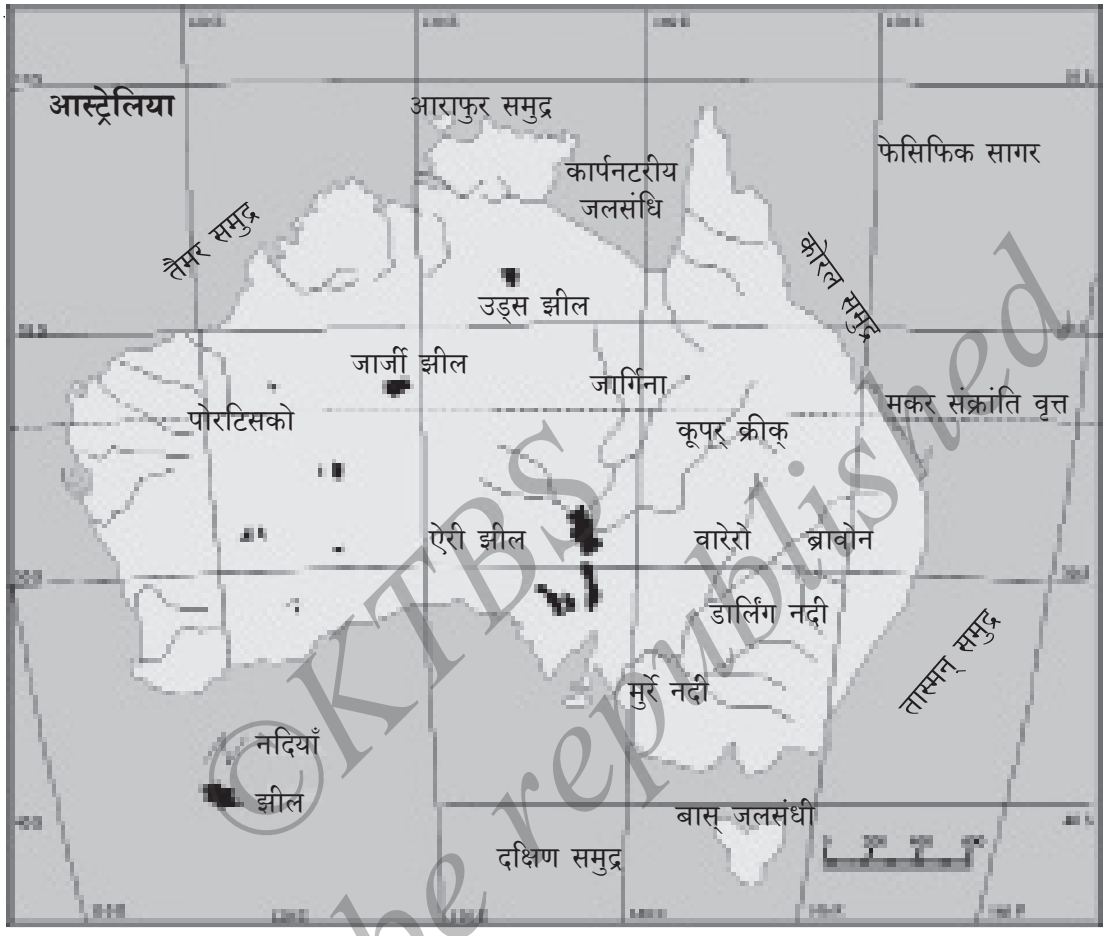

आस्ट्रेलिया की नदियाँ

मर्रे आस्ट्रेलिया का अत्यंत प्रमुख नदी है । यह न्यू साउथवेल्स के दक्षिणी पूर्व की ओर स्थित कोसियुस्को शिखर के पास उत्पन्न होकर पूर्व और दक्षिणी पश्चिम की ओर बहती हुयी (2,590) एनकाउन्टर की खाडी में जाकर मिलती है । वर्ष की कुछ ऋतुओं में मात्र इस नदियों में नौकायान संभव है । पूर्व की ओर बहनेवाली नदियाँ छोटी हैं तथा तेजी से बहती हैं ।

आस्ट्रेलिया में कुछ झीलें भी हैं । जो छोटी है और खारे पानी की झीलें हैं । उदाहरण के लिए - टारेन्स, गेर्डनर आदि । इनमें आयर झील अत्यन्त बडी और इस भू-भाग के निम्न भाग में है । इसके पश्चिम की ओर विश्व का सबसे बडा 'एकशिला' आयर (उलूरु) है ।

©KTBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

आयर शिलाभाग

आयर झील

3 जलवायु तथा प्राकृतिक वनस्पति

जलवायु : आस्ट्रेलिया के मध्य भाग से मकर रेखा होकर गुजराती है जिससे यह उष्ण तथा उप उष्ण जलवायु वाला प्रदेश है । इस भू-भाग के काफी हिस्से में वर्षपूर्ण अत्यधिक गर्मी होती है । पश्चिमी तट पर शीत सागर की ठंडी धारा बहती है जिससे आस्ट्रेलिया का पश्चिमी भाग रेगिस्तानी तथा शुष्क जलवायु वाला है । उत्तरी भाग में मानसूनी तथा दक्षिणी तटीय प्रदेशों में भूमध्य सागरीय आदर्श जलवायु होती है ।

शीत ऋतु : आस्ट्रेलिया के दक्षिणी गोलार्ध में स्थित होने के कारण यहाँ काल तथा ऋतुएँ उत्तरी गोलार्ध के विपरीत होती हैं । अर्थात उत्तरी गोलार्ध में ग्रीष्मऋतु होने पर यहाँ शीत ऋतु होती है । उदा : जून से अगस्त की अवधि में यहाँ गर्मी कम होती है । वह उत्तर से दक्षिण की ओर कम होती जाती है । किंतु दबाव बढता जाता है । हवाएँ अन्तर्देश से समुद्र की ओर बहती (चलती) हैं । ये अधिक वर्षा नहीं लाती । शुष्क तथा गर्म जलवायु होती है । तस्मानिया में अलग जलवायु होती है ।

ग्रीष्म ऋतु : यह दिसंबर से फरवरी तक होती है । इस अवधि में गर्मी अधिक होती है । आस्ट्रेलिया भू-भाग के पूर्वी भाग से पश्चिमी रेगिस्तानी भाग में तापमान अधिक होता है । दक्षिण भाग तथा तस्मानिया द्वीपों में साधारण गर्मी होती है ।

देश के अन्दरूनी भागों में दबाव कम होता है । हवाएँ समुद्र की ओर से चलती हैं जिससे थोडी वर्षा होती है । इस भू-भाग के दक्षिणी और दक्षिण पूर्वी भागों में वर्षा अधिक होती है ।

©KTBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

4 प्राकृतिक वनस्पति और जीव जन्तु

प्राकृतिक वनस्पति : आस्ट्रेलिया में घने जंगलों की कमी प्रमुख लक्षण है । इस भू-भाग का काफी हिस्सा घास का मैदान, छोटे - छोटे वनस्पति (पौधों) तथा खुले खुले कम पेडों से युक्त है । जो यहाँ की जलवायु को प्रतिबिंबित करता है । आस्ट्रेलिया के विविध प्राकृतिक वनस्पतियाँ इस प्रकार हैं -

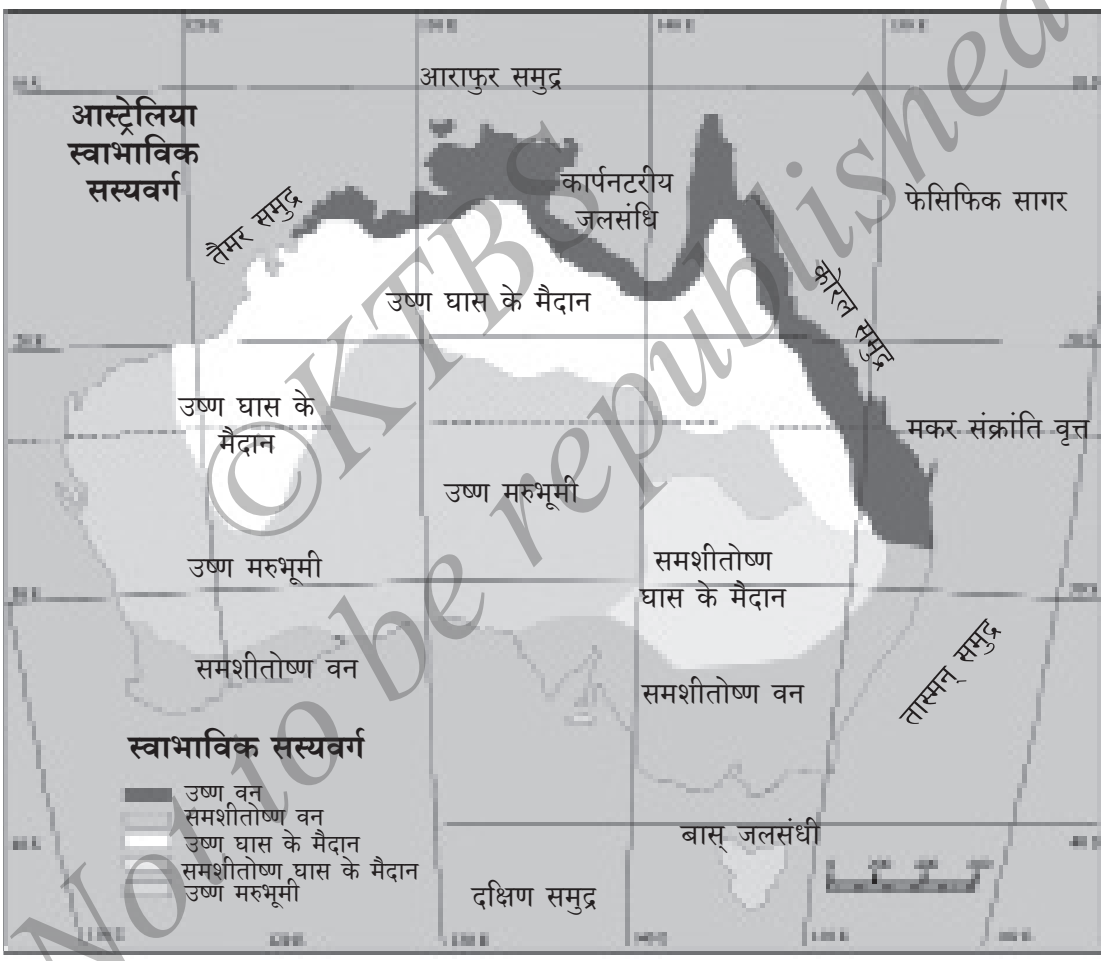

आस्ट्रेलिया के स्वाभाविक सस्यवर्ग

1 उष्ण क्षेत्रों के वन : अधिक वर्षा काले उत्तरी और उत्तर पूर्वी तटीय प्रदेशों में ऐसे वन देखे जा सकते हैं । यत्र तत्र बिखरे से बहुत कम क्षेत्र में ये वन फैले हुए हैं । यहाँ उगाये जाने वाली प्रमुख पेडों में विषमवृक्ष देवदारु ताड, (खनूर) अंगू आदि आते हैं।

©KTBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

2 सम शीतोष्ण क्षेत्र के वन : ऐसे जंगल पर्वतों तथा पहाडी टीलों पर पाए जाते हैं । इस कारण इन्हें पहाडी क्षेत्रों के वन भी कहा जाता है । ये अधिकतर क्वीन्सलैंड, न्यूसाउथ वेल्स, विक्टोरिया और तस्मानिया प्रदेशों में पाये जाते हैं । यहाँ के प्रमुख वृक्षों में - नीलगिरी, बबूल, चीड, आदि हैं । जो तेल तथा कागज बनाने के लिए अधिक उपयुक्त हैं ।

3 घास के मैदान : आस्ट्रेलियाई घास के मैदान दो प्रकार के हैं - (1) उष्णक्षेत्रों के घास के मैदान (सवाना) (2) समशीतोष्ण क्षेत्र के घास के मैदान अथवा डाउन्स। (ढलवा मैदान)

उष्ण क्षेत्रों के घास के मैदान : पूर्व के उन्नत प्रदेशों से पश्चिमी भाग के क्वीन्सलैंड, उत्तरी आस्ट्रेलिया के मध्य तथा पश्चिमी आस्ट्रेलिया के उत्तरी भाग में फैले हुए हैं ।

सामशीतोष्ण क्षेत्र के मैदानों में मर्रे - डार्लिंग नदियों के मैदान विस्तृत प्रदेश में फैले हैं । ये पशु-पालन के लिए काफी उपयुक्त हैं । इस क्षेत्र में झाडियों (भेड पालन के लिए उपयोगी), मिशेल तथा अत्रेबेल घास के प्रकार देखे जा सकते हैं ।

सावना घास मैदान

डाउन्स घास मैदान

4 छोटी झाडियाँ : ये पश्चिमी आस्ट्रेलिया के दक्षिण तथा पश्चिमी भागों, दक्षिणी आस्ट्रेलिया और क्वीन्सलैंड के कुछ भागों में देखी जा सकती हैं । वर्षा की कमी के कारण छोटी - झाडियाँ मात्र उगती हैं । बबूल के वृक्ष ही यहाँ बहुत होते हैं । यत्र तत्र नीलगिरि के वृक्ष, नागफनी तथा काँटेदार पौधे पाये जाते हैं ।

©KTBS not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

आश्

सिडार

ताड

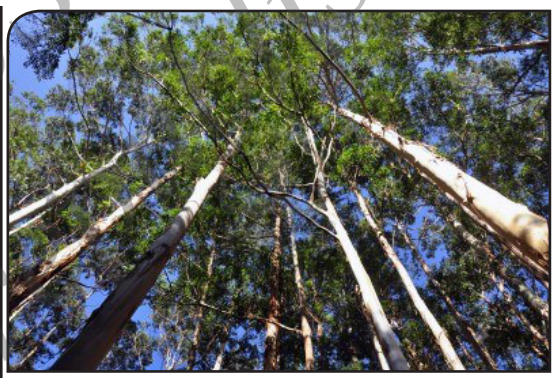

नीलगिरी

5 रेगिस्तानी वनस्पतियाँ : पश्चिमी आस्ट्रेलिया के केन्द्र तथा पूर्वी भागों में ऐसी वनस्पतियाँ पायी जाती हैं । यहाँ साल्ट बुश (खाटी झाडियों) नागफनी की जाति के वृक्ष, नाटे घास और विविध प्रकार के काँटेदार पौधे उगते हैं । ये वनस्पतियाँ अकाल का सामना कर सकती हैं । अर्थात अकाल में भी इन पर कोई असर (प्रभाव) नहीं पडता ।

6 जीव जन्तु : आस्ट्रेलिया में पाये जानेवाले जीव जन्तु पक्षी अन्य कहीं भी नहीं पाये जाते । ये विचित्र जीव जन्तु भी हैं । प्लाटिपस नामक स्तनीय जीव अंडे देती है और बच्चों को दूध भी पिलाती है । इसके पूरे शरीर में ऊनी फर युक्त चमडे की खाल है । यह अपने बच्चों को अपने पेट के बाह्य थैले में विकसित करती है । ''एमू'' आस्ट्रेलिया का अत्यंत बडा पक्षी है । यहाँ मोर की जाती का एक सुंदर पक्षी

Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

''लैर'' है । कूकुबुरी नामक जीव जिसकी बोली मानो हँसने का स्वर हो, काला हंस, आदि पक्षी यहाँ पाये जाते हैं । ''कांगरू'' यहाँ का राष्ट्रीय प्राणी (जीव) है । 'डिंगो' नामक भेडिए जैसा जंगली कुत्ता यहाँ पाया जाता है । वाल्लभी, मक्की खानेवाले एकिहना, पेड पर चढनेवाले छोटे छोटे भालू आदि यहाँ पाए जाते हैं । सरीसृप तथा विषैले सांप सर्वत्र सामान्य रूप में पाये जाते हैं ।

कांगरू

वल्लभी

डिंगो

कोला भालू

एमु

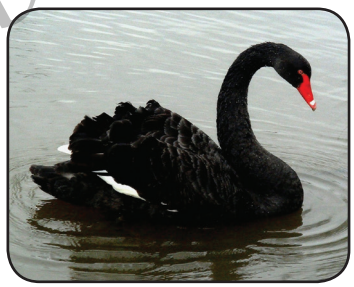

काला हंस

आस्ट्रेलिया ''अनोखे तथा अन्यत्र न पाए जानेवाले जीव जन्तुओं का देश'' है। लगभग 60% प्रतिशत पक्षी और जीवजन्तु विश्व में अन्यत्र नहीं पाए जाते हैं ।

5 व्यवसाय और पशु - पालन

व्यवसाय : आस्ट्रेलिया की वृत्ति में व्यवसाय भी एक है । किंतु यहाँ कृषि योग्य भूमि कम है । इस भूमि का विस्तार की दृष्टि से केवल 4% प्रतिशत भाग मात्र कृषि योग्य है । जो समुद्री तट तथा नदी के मैदानी भाग में पाया जाता है । कुल जनसंख्या के केवल 44% प्रतिशत लोग व्यवसाय में संलग्न हैं । गोरों (श्वेत) का इस वृत्ति में लगाना ही एक विशेष बात है ।

वर्षा की कमी तथा वर्षा का अकालिक वितरण, अनुपजाऊ रेगिस्तानी मिट्टी,

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

कृषि योग्य भूमि की कमी तथा सिंचाई की कमी के कारण कृषि क्षेत्र कम हैं । फिर भी आस्ट्रेलिया अपनी माँगे स्वयं पूर्ण करते योग्य कृषि का उत्पादन करता है ।

आस्ट्रेलिया व्यापक (विस्तृत) व्यवसाय पद्धति का पालन करता है । यहाँ भूमि स्वामित्व का आकार बडा है, आधुनिक व्यवसाय क्रम का उपयोग किया जाता है, निर्यात के उद्देश्य से वाणिज्यिक फसलों की उपज को प्रमुखता दी जाती है । और विविध फसलों को उगाया जाता है । उदा: गेहूँ, गन्ना, कपास, तंबाकू, मक्का, आदि तथा फल और सब्जियाँ भी उगायी जाती हैं ।

गेहूँ

गन्ना

तंबाकू

कपास की खेती

सेब की फसल

गेहूँ आस्ट्रेलिया का अत्यंत प्रमुख खाद्य पदार्थ है । इसे दक्षिणी आस्ट्रेलिया क्वीन्सलैंड, न्यूसाउथ वेल्स तथा विक्टोरिया में उगाया जाता है । मर्रे तथा डार्लिंग नदियों के मैदानी भाग गेहूँ के लिए प्रख्यात हैं । आस्ट्रेलिया अपने गेहूँ उत्पादन का लगभग 70% प्रतिशत निर्यात करता है ।

यहाँ मक्का एक अन्य खाद्य पदार्थ है । इसे जानवरों के खाद्य तैयार करने के लिए उगाया जाता है । इसे क्वीन्सलैंड तथा नन्यूसाउथ वेल्स् में अत्यधिक उगाया जाता है। मर्रे - डार्लिंग नदियों के मैदानी क्षेत्र में थोडा बहुत धान उगाया जाता है ।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

गन्ना आस्ट्रेलिया की प्रमुख वाणिज्यिक फसल है । यह अधिकतर पूर्वी तटीय क्षेत्र से जुडे न्यूसाउथ वेल्स से क्वीन्सलैंड तक के प्रदेश में उगाया जाते हैं । एक अन्य वाणिज्यिक फसल ''तंबाकू'' क्वीन्सलैंड में अत्यधिक उगायी जाती है । विविध प्रकार के फल तथा सब्जियाँ तस्मानिया, विक्टोरिया और -न्यू - साउथवेल्स में उगाए जाते हैं ।

पशु-पालन : यह आस्ट्रेलिया की प्रमुख वृत्ति हैं । आस्ट्रेलिया ''पशुपालन देश'' के नाम से ही प्रसिद्ध है । दुग्ध उत्पादन, मांस, ऊन तथा चमडा आदि वस्तु के लिए भेंड तथा गायों का पालन किया जाता है ।

ऊन - भेड पालन

भेड पालन आस्ट्रेलिया की प्रमुख आर्थिक पेशावृत्ति है । यहाँ अधिक संख्या में भेंडों का पालन उन उत्पादन तथा कच्चा ऊन निर्यात के लिए प्रसिद्ध है । विस्तृत घास के मैदान, आस्ट्रेलिया के कुँओं द्वारा जल प्राप्ति, ठंडी और शुष्कजलवायु आति आधुनिक तरीके से भेड पालन विशाल बाजार की सुविधा भेड पालन के लिए प्रेरक सामग्री है। यहाँ पाले जानेवाली भेडों में लगभग 75% प्रतिशत भाग 'मेरिनो' जाति की भेडे हैं । जो उत्तम स्तर के ऊन प्रदान करती हैं । विस्तृत भेड पालन क्षेत्र को ''भेड का मैदान'' कहा जाता है ।

गाय - बछडों को मुख्यतः गाय के माँस तथा दुग्ध उत्पादन के लिए पाला जाता है । सवाना प्रदेशों में गाय के मांस के लिए तथा समशीतोष्ण प्रदेश के डाउन्स (निम्न प्रदेश) घास के मैदानी प्रदेशों में दुग्ध उत्पादन के लिए गाय - बछडों का पालन किया जाता है ।

Not to be republished © TBS

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

6 खनिज तथा उद्योग धन्धे

खनिज : आस्ट्रेलिया में काफी खनिज सम्पदा है । लौह खनिज, बाक्साइट, जस्ता, तिक्कल, ताँबा, मैंगनीज, स्वर्ण, सीसा, यूरेनियम, रांगा (टिन) यहाँ की प्रमुख खनिजे हैं । साथ ही इंधन उपयोगी खनिज में कोयला, पेट्रोलियम, तथा प्राकृतिक गैसें भी यहाँ उपलब्ध हैं । इनमें से अनेक खनिजों का निर्यात किया जाता है ।

बॉक्साइट उत्पादक प्रदेशों में वाइपा, गोव, मिशेल का पठारी भाग और जर्राडिल प्रमुख है । विश्व का सर्वाधिक बाक्साइट निक्षेप आस्ट्रेलिया में है । पश्चिमी आस्ट्रेलिया के कूलगार्डी और कूलगार्ली प्रसिद्ध स्वर्ण उत्पादक केन्द्र हैं । विक्टोरिया न्यूसाउथ वेल्स तथा क्वीन्सलैंड के कुछ भागों में भी स्वर्ण प्राप्त होता है । सीसा, जस्ता और चाँदी साथ-साथ प्राप्त होते हैं । इनके उत्पादक प्रदेश ब्रोकन हिल्स (न्यूसाउथ वेल्स) रेनिसन और रिसडान (तस्मानिया) आईस पर्वत (क्वीन्सलैंड) और आर्थर नदी का मैदान प्रमुख हैं ।

न्यूसाउथ वेल्स ताँबे का अत्यधिक उत्पादन होता है । इसी प्रकार कार्पेंटेरिया की खाडी प्रदेश में मैंगनीज उत्पादन अधिक होता है । आस्ट्रेलिया में यूरेनियम (उत्पाद के) निक्षेप अधिक मात्रा में हैं । जो आधिकतर उत्तरी प्रांतो (60%) में पश्चिमी आस्ट्रेलिया तथा दक्षिण आस्ट्रेलिया में पाए जाते हैं ।

उद्योग धंधे : वर्तमान में आस्ट्रेलिया उद्योग धन्धों की प्रगति के क्षेत्र में प्रमुख स्थान रखता है । खनिज सम्पदा कृषि विकास विज्ञान एवं तकनीकी प्रगति विदेशी सम्पत्ति विनिमय और विशाल बाजार उद्योग धन्धों के लिए अनुकूल रही है । प्रारंभ से ही आस्ट्रेलिया का उद्योग विदेशी छत्र छाया पर अवलंबित है । उसपर जापान की देन अधिक है । प्रमुख उद्योग धंधो तथा उत्पादन केन्द्र इस प्रकार है ।

* लोह - इस्पात उद्योग - प्रमुख केंद्र न्यूक्यासल, वोल्लांगांग और वेयेल्ला, लौह तथा कोयला क्षेत्र में हैं ।

* स्वचालित वाहन उद्योग - एडिलेड, मेलबोर्न, सिडनी तथा गीलांग प्रदेश में ये उद्योग हैं ।

©KTBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

* जहाज निर्माण - मेरिबरो, ब्रिस्वेन, सिडनी, न्यूक्यासल, मेलबोर्न तथा एडिलेड। अधिकतर पूर्वी समुद्रतट पर स्थित है ।
* विद्युत उपकरण - सिडनी और मेलबोर्न शहरों में देखा जा सकता है ।
* कपडा उद्योग - मेलबोर्न, सिडनी, ब्रिस्वेन तथा गीलांग शहरों मे स्थित है ।
* कागज, गत्ता और लकडी का गूदा - विक्टोरिया, न्यूसाउथ वेल्स, क्वीन्सलैंड तथा तस्मानिया प्रदेशों में इसके उद्योग होते हैं ।
* तेल शुद्धीकरण - कुर्नेल, क्विनान, गीलांग, मेलबोर्न तथा ब्रिस्बेन ।

सिडनी

अन्य उद्योग धंधे में विमान निर्माण (सिडनी, मेलबोर्न) आटे की चक्की, मछली तथा फल संस्करण (सफाई) रासायनिक वस्तु निर्माण आदि प्रमुख हैं ।

7 जनसंख्या

विकास वृद्धि : जैसा की पूर्व में ही बताया जा चुका है, आस्ट्रेलिया विस्तार में ही नहीं जनसंख्या की दृष्टि से भी छोटा देश है। इसकी कुल जनसंख्या 20.0 मिलियन (2012) है । यह विश्व की कुल जनसंख्या का 0.31% प्रतिशत भाग मात्र है । इस भू भाग की जनसंख्या 1860 में 1.15 मिलियन थी । पिछले शतक के अंत में इस भू-भाग की जनसंख्या की वृद्धि देखी जा सकती है ।

वितरण : आस्ट्रेलिया की जनसंख्या के वितरण में कभी अन्तर्देशीय भाग का अधिकतम भाग निर्जन प्रदेश है । न्यूसाउथ वेल्स अधिकतम जनसंख्या $\left(\frac{1}{3}\right)$ वाला प्रांत है । विक्टोरिया का स्थान $\left(\frac{1}{4}\right)$ दूसरा है । इसके बाद क्वीन्सलैंड, दक्षिणी आस्ट्रेलिया और तस्मानिया को स्थान मिलता है । इसके विपरीत साथ ही उत्तरी

© ITBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

प्रांत अत्यंत कम जनसंख्या वाला प्रदेश है । देश की जनसंख्या का आधे से अधिक भाग छः नगरों में घनत्व वाला है । उदा : सिडनी, मेलबोर्न, ब्रिस्बेन, एडिले, पर्थ तथा न्यूक्यासल ।

जन घनत्व : विश्व के सबसे कम जनसंख्या घनत्ववाले देशों में आस्ट्रेलिया भी एक है । इसका कुल जनघनत्व प्रति कि.मी. क्षेत्रफल में तीन जन मात्र हैं । यह एक प्रदेश से दूसरे प्रदेश में भिन्न है । सभी नगर प्रदेश, राजधानी तथा उद्योग धन्धों के केन्द्रीय प्रदेशों में जनघनत्व अधिक है । उदा : विक्टोरिया, न्यूसाउथ वेल्स, तस्मानिया, क्वीन्सलैंड इत्यादि । इस भाग के दक्षिणी पूर्वी भाग में साधारण जनघनत्व है । किन्तु रेगिस्तानी और अर्ध रेगिस्तानी भू-भाग में लगभग 80% प्रतिशत भाग में जनघनत्व अत्यंत कम है ।

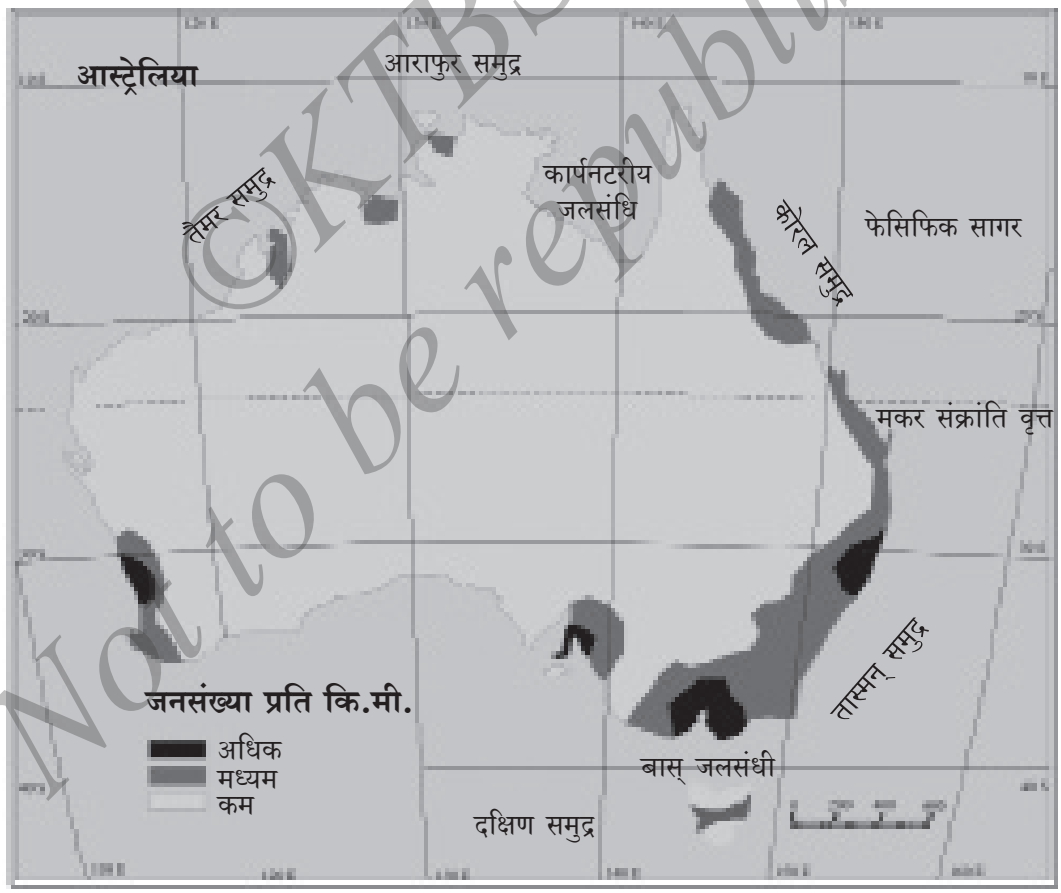

आस्ट्रेलिया की सनसंख्या घनत्व

आस्ट्रेलिया में ग्रामीण जनसंख्या (15%) से अधिक नगर की जनसंख्या (85%) की मात्रा है । ❋

©KTBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

नवीन शब्द :

द्वीप, गोंडवाना, थाल आकार, एकशिला, मूँगे का टीला, कांगारू, लैर, डिंगो, कूकुबुर्रा, वाल्लभी, और कोल ।

अभ्यास

दो अथवा तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए ।

1 आस्ट्रेलिया को 'अत्यंत समतल भू-भाग' कहा जाता है । क्यों ?
2 आस्ट्रेलिया की स्थिति और परिवेश को समझाइए ।
3 आस्ट्रेलिया के प्रमुख प्राकृतिक विभाग कौन कौन से हैं ?
4 आस्ट्रेलिया की नदियों के बारे में लिखिए ।
5 आस्ट्रेलिया की प्रमुख फसलें कौन कौन सी है ?
6 आस्ट्रेलिया के प्रमुख खनिज कौन कौन से है ?
7 आस्ट्रेलिया के प्रमुख उद्योग धन्धों के बारे में लिखिए ।
8 आस्ट्रेलिया से निर्यात होने वाले पदार्थों का विवरण दीजिए ।
9 आस्ट्रेलिया में जनघनत्व कम क्यों है ?
10 आस्ट्रेलिया घास के मैदान के बारे में लिखिए ।

कार्य कलाप

1 एट्लस की सहायता से आस्ट्रेलिया के प्रमुख पर्वत, नदी, झील का नामांकन कीजिए । इसकी एक सूची बनाइए और अस्ट्रेलिया के नक्षा स्वयं बनाइए ।
2 अपने आवासीय स्थल का निरीक्षण कर वहाँ की उपज, वनस्पति, जीवजंतु, पर्वत आदि के बारे में एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए ।

©KTBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पाठ 13	अंटार्कटिक - श्वेत भू-भाग

पाठ परिचय

इस पाठ में अंटार्कटिक की स्थिति, विस्तार तथा भौगोलिक परिवेश, सतही लक्षण प्राकृतिक वनस्पति, जीव जन्तु, अन्वेषण, अंटार्कटिक समझौता तथा प्रमुख सुधार केंद्रों के बारे में जानेंगे ।

सामर्थ्य

1 अंटार्कटिक की स्थिति विस्तार तथा भौगोलिक परिवेश जानेंगे ।

2 अंटार्कटिक का सतही लक्षण, भूमि तथा जल भाग के बारे में जानेंगे ।

3 प्राकृतिक वनस्पति और जीव जन्तुओं के बारे में जानेंगे ।

4 अंटार्कटिक की खोज, समझौता तथा संशोधन केंद्रों के बारे में जानेंगे ।

©KTBS Not to be republished

1 स्थिति, विस्तार तथा भौगोलिक परिवेश

स्थिति : दक्षिण ध्रुव के चारों ओर फैला हुआ भू-भाग अंटार्कटिक है । अथवा $66^{0}30^{1}$ दक्षिणी अक्षांश में विस्तृत भाग ही अंटार्कटिक है । उत्तरी ध्रुव में स्थित अंटार्कटिक सागर के विपरीत होना ही इस भाग की विशिष्टता है ।

विस्तार : अंटार्कटिक विश्व का पाँचवा बडा भू-भाग है । इसका कुल विस्तार 14.2 मिलियन कि.मी. क्षेत्रफल है । यह भारत तथा चीन देश के विस्तार से बडा है। संयुक्त राज्य अमेरिका के विस्तार का डेढ गुना है यह अंटार्कटिक भू-भाग ।

भौगोलिक परिवेश : अंटार्कटिक भू -भाग चारों ओर से विशाल जलराशी से आवृत्त है । यह जलराशी दक्षिणी सागर के नाम से ही जानी जाती है । किन्तु यह दूसरी जलराशी हिन्द महासागर तथा पेसिफिक महासागर के मिलने से बनी जलराशि है । लैटिन अमेरिका के दक्षिणी छोर पर स्थित केप हारन इस भू-भाग के निकट का भू-भाग है । यह 990 कि.मी. की दूरी पर है । इस भाग के पूर्व में हिन्द महासागर, पश्चिम में पेसिफिक महासागर तथा उत्तर-पश्चिम की ओर अटलांटिक महासागर है ।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

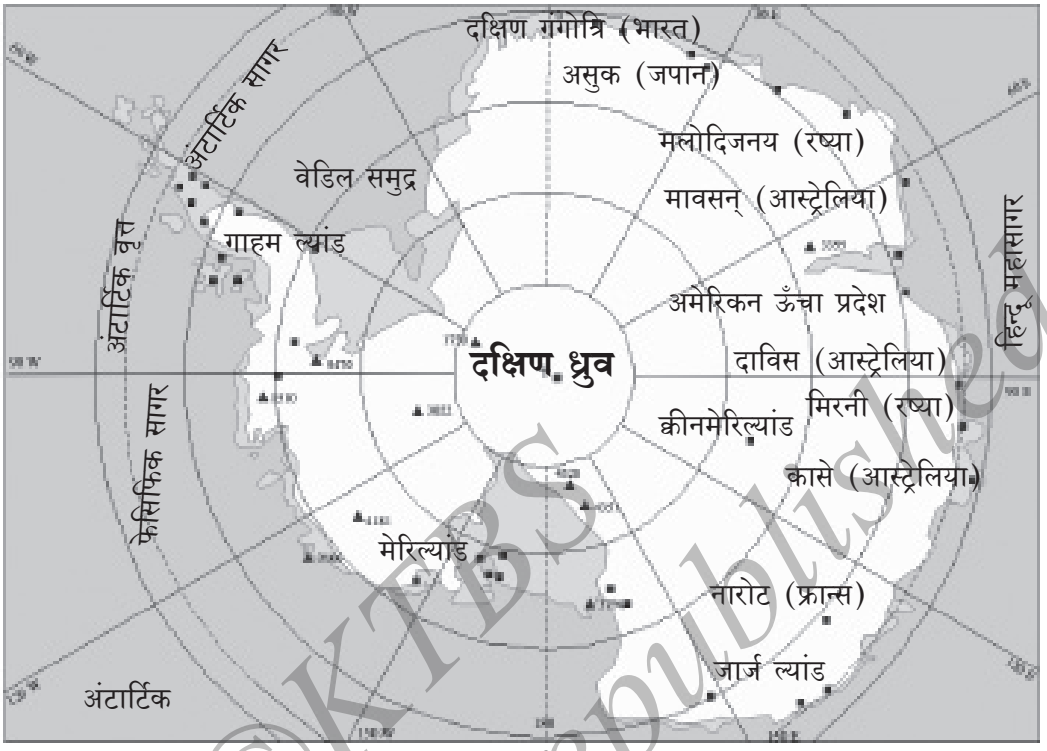

अंटार्टिक खंड

2 सतही लक्षण

अंटार्कटिका भाग 98% प्रतिशत हिमाच्छादित है । इसके सतही लक्षण अधिकतम बर्फीले ढोकों से परत रूप में ढक (जम) गया है । ऊँचे पर्वत शिखर तथा पठारी भूमि दिखाई पडते हैं । बर्फ के ढाकों की परत लगभग 2200 मीटर से भी अधिक मोटी है, जो सर्वत्र श्वेत वर्ण की लगती है । इस प्रकार यह भाग ''श्वेत खंड'', हिम बर्फ का रेगीस्तान भी कहा जाता है । तथा अत्यंत शीत (ठंडा) होने के कारण ''शीतल खंड'' भी कहा जाता है ।

अंटार्कटिक भाग में पर्वत, पठार, घाटी, गुफाओं जैसे भू-स्वरूप हैं । समुद्री तल से कुल 2,300 मीटर ऊँचा अंटार्कटिका भाग भूगोल का सर्वाधिक ऊँचा भू-भाग है । ट्रॉंस अंटार्कटिकापर्वत श्रेणी इस भाग को दो भौगोलिक भागों में विभक्त करती है ।

बर्फीले खंड

©KTBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

1) पूर्व अंटार्कटिक 2) पश्चिम अंटार्कटिक ।

(1) पूर्व अंटार्कटिक अटलांटिक तथा हिन्द महासागर की ओर मुख करता है। यह इस भू-भाग का आधे से अधिक भाग को लिए हुए हैं । इसलिए इसे 'ग्रेटर अंटार्कटिक' भी कहते हैं । इसके तटीय क्षेत्र में पर्वत घाटी और हिमनदियाँ हैं । इस भाग के मध्य भाग में पठारी भाग है । जहाँ दक्षिणी ध्रुव स्थित है ।

(2) पश्चिमी अंटार्कटिक यह पेसिफिक सागर की ओर है । इसका काफी हिस्सा समुद्र तल से नीचे है । इस भौगोलिक विभाग का अंटार्कटिक प्रायःद्वीप भाग पर्वतों से युक्त है । इसके 's' आकार का छोर दक्षिण अमेरिका की ओर नुकीला है। इसके निकट कई द्वीप हैं । साथ ही पर्वत शिखर और ज्वालामुखी भी हैं । इस भाग के एल्सवर्तपर्वत श्रेणी में स्थित विन्सन मासिक (5140 मीटर) शिखर ही अंटार्कटिक भाग का ऊँचा शिखर है । 'रॉस' द्वीप में स्थित ''माउन्ट एरेवस'' अंटार्कटिक शिखर का अत्यंत प्रमुख जागृत ज्वालामुखी है । प्रिंस चार्ल्स नामक एक अन्य पर्वत यहाँ है ।

ट्राँस अंटार्कटिक पर्वत श्रेणी के विपरीत छोर पर दो बडे खाडियाँ है । वे हैं - रास समुद्र तथा वेड्डेल समुद्र की खाडियाँ ।

3 वनस्पती और जीवजंतु

जैसा की पूर्व ही बताया जा चुका है, अंटार्कटिक भाग हिमाच्छादित है । प्रतिकूल शीत वातावरण / तापमान से युक्त है । यहाँ वर्ष में छः मास अंधेरा / रात तथा छः महीने उजाला / दिन होता है । यहाँ जीव जन्तु का जीवन कठिण है । कई शिलावल्क तथा शैवाल यहाँ की प्रमुख वनस्पतियाँ हैं । वे खुले भाग के चट्टानों पर देखे जा सकते हैं । यहाँ के प्रतिकूल जलवायु में जीवित रहा पानेवाले कुछ जानवर है । किंतु चारों ओर के जल भाग में कई प्रकार के जीवजन्तु देखे जा सकते हैं । उदा : पेंग्विन, हुवेल (तिमिंगल) सील, क्रील, मछलियाँ तथा विविध प्रकार के पक्षी सीगडी (छोटी मछली) और इंचाक जैसे क्रील प्राणियों की संख्या काफी है । ये जीव जन्तु समूह में तैरते हुए जीवन बिताते हैं । ऐसे सूक्ष्म जीव समुद्र के बडे प्राणी तथा मछलियाँ का मुख्य आहार बनते हैं ।

©KTBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

समुद्री तट पर असंख्य पेंग्विनों का वास होता है । यह उडने वाले पक्षी हैं । अदिले, एंपरक तथा चिनस्क्राप यहाँ के पेंग्विनों की प्रजातियाँ हैं । हिमाच्छादित इस भाग को आनेवाले जहाजों का सर्वप्रथम स्वागत करनेवाले 'अदिले' पेंग्विन ही हैं । इस भाग के निकट के द्वीप तथा समुद्री तट पर सीलों की संख्या अधिक है । 6 (छः) प्रकार के सील की पहचान की जा सकती है । लगातार शिकार के कारण सील सामर्थ्य के कगार पर है ।

पेंग्विन

सील

• पेंग्विन अपनी संतान अभिवृद्धि के लिए प्रस्तर गुफा का निर्माण करते हैं । उनके घोसलों को 'रुकरी' कहा जाता है ।

• दक्षिण ध्रुव के निकट स्थित इस भाग का 'वोस्टाक' विश्व का अत्यंत कम तापमान का क्षेत्र है । (-89^0' सेंटीग्रेड).

4 अंटार्कटिक यान - अंटार्कटिक समझौता

18 वीं शताब्दी के अंतिम काल से ही अंटार्कटिक भू - भाग से संबंधित संशोधन कार्य चल रहा है । कई समुद्री यान इस भाग के शोधन के लिए साहस यान भी कर चुके हैं । ऐसे में ब्रिटेन के परिशोधक जेम्स क्लार्क रॉस ने (सन् 1841 में) इस भाग के रास समुद्र की खोज की । (इन्हीं के नाम पर से समुद्री भाग को रॉस समुद्र कहा गया है)

इंग्लैण्ड में राबर्ट फालक्नस्कॉट इस समुद्र को पार करने में सफल रहे । ये अन्वेषक

©KTRS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

ग्रीष्म ऋतु के अंतिम अवधि में समुद्र द्वारा इस भू-भाग में प्रवेश किया करते थे । तत्पश्चात अपने शीत कालीन शिबिर (वास) के लिए स्थान बनाते थे ।

स्कॉट तथा अमुंडसन

अंटार्कटिक भाग को समग्र अन्वेषण 20 वीं शताब्दी के आरंभ में प्रारंभ हुआ । सन् 1909 में इंग्लैंड के षाकल्पन ने दक्षिण के 'कांता ध्रुव' की खोज की । नार्वे के रोल्ड अमुंडसन सन् 1911 में 'दक्षिणी ध्रुव' पहुँचे ।

सन् 1912 में राबर्ट फाल्कन स्कॉट भी उसी ध्रुव पर पहुँचकर वापस आए और उनका निधन हो गया । उनकी दिनचर्या (डायरी) से प्राप्त सूचनाएँ आगामी वैज्ञानिकों के अन्वेषण के लिए काफी सहायक रहीं । अमेरिका की नौसेना के अड्मिरल रिचर्ड बैर्ड इस भाग के अन्वेषण के लिए हवाई जहाज के द्वारा सर्वप्रथम सन् 1929 में पहुँचे। तत्पश्चात इस भाग के अध्ययन के लिए अनेक देश आगे आए ।

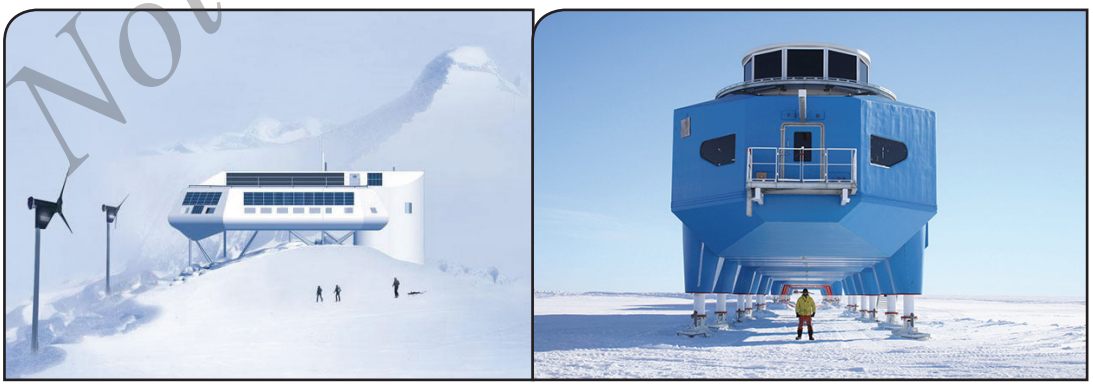

आधुनिक संशोधना केंद्र

©KTBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अंतर्राष्ट्रीय भू-भौतिक काल (वर्ष) 1957 - 58 में अंटार्कटिक भाग व्यापक अन्वेषण प्रगतिशील रहा विश्व के अनेक वैज्ञानिकों ने योजनाएँ बनाकर अध्ययन का प्रयास किया । बारह राष्ट्रों के प्रतिनिधियों ने वाशिंगटन डी.सी. (यू.एस.ए) में एक सभा का आयोजन कर सन् 1959 में अंटार्कटिक भाग के समझौते का प्रस्ताव तैयार किया । सन् 1961 में इस समझौते पर हस्ताक्षर हुए । इस समझौते के अनुसार यह भाग वैज्ञानिक अन्वेषण तक ही सीमित है । इस प्रकार इस भू-भाग को 'विज्ञान -भू-भाग' भी कहा गया । वहाँ परमाणु, अस्त्रास्त्रों का परीक्षण अपरिहार्य है । कोई भी देश वहाँ की भूमि, जल पर अपना स्वामित्व नहीं पा सकता । यहाँ का पर्यावरण प्रदूषण नहीं किया जाना चाहिए । साथ ही ह्वेल (तिमिंगल) मछलियों के शिकार पर निषेध है ।

वैज्ञानिक सूचनाओं के मुक्त विनिमय की स्वच्छंदता है । यहाँ के प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा की जानी चाहिए । कुल मिलाकर यह भू-भाग मात्र शांती के उद्दश्यों के लिए सीमित है ।

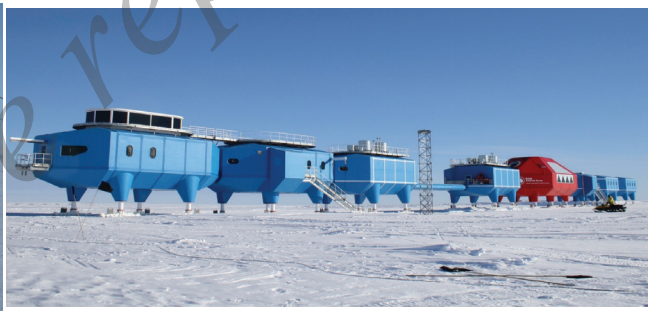

हिमावृत खंड में संशोधन

अंटार्कटिक भू - भाग पर विश्व का 90% प्रतिशत भाग का जल मीठे जल बर्फ के रूप में है ।

5 प्रमुख अनुसंधान केंद्र

कई दृष्टियों से अंटार्कटिक भाग सार्वभौमिक अनुसंधान के लिए वैज्ञानिक अभिरुचि उत्पन्न करता है । इस भाग का उद्यम तथा भू-रचना, जलवायु स्थिति, जन जीवन व्यवस्था तथा संरक्षण वहाँ के पर्यावरण प्रदूषण तथा निवारण, त्याज्य पदार्थों का विक्रय और निर्वाह तेल के रिसाव से होने वाली दुर्घटनाएँ और इसके लिए किए जाने वाले उपाय का सही तरीका आदि प्रमुख हैं । इसके बारे में संशोधन करने के

©KTBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

लिए विश्व के अनेक राष्ट्रों ने अपने संशोधना केन्द्र यहाँ स्थापित किए हैं ।

भारत ने भी अपने संशोधन केन्द्र को इस भू-भाग पर स्थापित किया है । सर्व प्रथम स्थान 1981 दिसेंबर 6 को एस जेड. रासिम के नेतृत्व में वैज्ञानिकों को दल का गोवा से प्रस्थान हुआ । इस दल को लेकर पोलार (ध्रुवीय वृत्त) सर्कल नौका सन् 1982 जनवरी 9 को अंटार्कटिक भू-भाग पर पदार्पण किया गया । भारतीय दल द्वारा स्थापित प्रथम संशोधन केंद्र ''दक्षिण गंगोत्री'' के नाम से जाना जाता है । यह सन् 1993 में निर्मित किया गया तथा इसका नामांकन सन् 1989 में हुआ । आज यह मानव रहित तथा भंडारण के लिए मात्र प्रयोग किया जा रहा है ।

'मैत्री' भारत का संशोधन केन्द्र

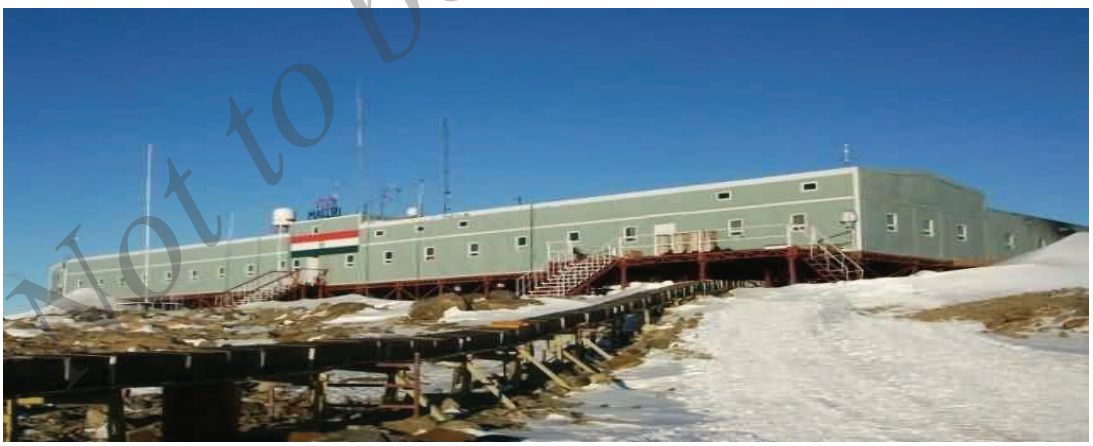

'भारती' भारत का और एक केन्द्र

प्रथम यान का सफलता के बाद अब तक लगभग 50 बार भारत का संशोधन दल अंटार्कटिक भाग पर पहुँच चुका है । ''मैत्री'' दूसरा संशोधन केंद्र है । यह

© TBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

शिर्माचर ओयासिस पर निर्मित है । (1988-89) यह सर्वमुख केंद्र है तथा 26 लोगों के रहने के लिए सुविधाजनक है । यहाँ से 255 मीटर की दूरी पर मीठे पानी की आपूर्ति के लिए ''प्रियदर्शिनी'' नामक झील का निर्माण भारत ने किया है । मैत्री केंद्र में भूगोल शास्त्र तथा औषधि के बारे में संशोधन कार्य होता है ।

अंटार्कटिक भू-भाग पर 'भारती' नामक एक और संशोधन केंद्र की स्थापना के बारे में भारत विचार कर रहा है । यह विशेषकर सागर के अध्ययन तथा खोज के उद्देश्य की पूर्ति करेगा । आवश्यक सर्वे (निरीक्षण) का कार्य भी अबतक पूर्ण हो चुका है । ❋

नवीन शब्द :

श्वेत खण्ड, शीतल खंड, विन्सन मासिफ, एरेवस, हावसे पेंग्विन, हवेल (तिमिंगल) सील, सीगडी, अदिले, चिनस्क्राप, क्रील, भू-भौत, दक्षिण गंगोत्री, मैत्री, भारती ।

अभ्यास

दो अथवा तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए ।

1 अंटार्कटिक भू भाग की स्थिति एवं विस्तार को बताइए ।
2 अंटार्कटिक का भौगोलिक परिवेश समझाइए ।
3 अंटार्कटिक को ''श्वेत खण्ड'' क्यों कहा जाता है ?
4 अंटार्कटिक भू-भाग के प्रमुख पर्वतों और शिखरों को बताइए ।
5 अंटार्कटिक भू-भाग की वनस्पतियों और जीव-जन्तुओं का विवरण दीजिए।
6 अंटार्कटिक में भारत के अनुसंधान केन्द्रों का नाम बताइए ।

कार्य कलाप

1 अंटार्कटिक भू भाग में स्थापित विविध देशों के अनुसंधान केन्द्रों के चित्र संग्रह कर उनकी तालिका तैयार कीजिए।
2 अंटार्कटिक भू भाग के विविध वनस्पतियों तथा जीव जन्तुओं की सूची बनाकर उनका चित्र संग्रह कीजिए ।

©KTBS Not to be republished

Downloaded from https:// www.studiestoday.com